उपयोगी साहित्य-माला १५

मंत्र शक्ति

MANTRA SHAKTI

चमत्कारिक मंत्रों का अपूर्व संग्रह
एवं उनकी साधन विधि

पुस्तक-परिचय

जीवन की सभी समस्याओं के समाधान हेतु 'मन्त्र शक्ति' मानव के लिए ईश्वर-प्रदत्त एक अमोघ वरदान है। प्राचीन ऋषि-महर्षि, शासक और उच्च शक्ति-सम्पन्न महात्मा मन्त्र के बल पर ही आत्म-कल्याण तथा लोक-कल्याण किया करते थे। राम, कृष्णादि अवतारी देवों ने मन्त्र शक्ति से ही राक्षसों का संहार किया। वसिष्ठ, विश्वामित्रादि ने मन्त्रों के बल पर ही काल पर विजय पाई। रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, योगी अरविन्द आदि मन्त्र-साधना से ही विश्वविख्यात हुए।

कार्य-सिद्धि के लिए मन्त्रों की उपयोगिता और उपासना के प्रकारों को सूक्ष्मता से समझना बहुत आवश्यक है। जीवन की सभी समस्याओं का समाधान मन्त्र-शक्ति पर निर्भर है।

मन्त्रों के अंग-उपांगों का ज्ञान किये बिना सिद्धि भी विकलांग जैसी ही रहती है, जैसे शरीर के सभी अंगों की सुरक्षा पर ही उनमें कार्य करने की शक्ति निर्भर रहती है वैसे ही मन्त्रों के अंग-उपांग जानकर उनके अनुसार प्रयोग करने से शक्ति और सफलता प्राप्त होती है।

'मंत्र-शक्ति' में परिचय और प्रयोग दोनों ही विषयों पर बहुत ही सावधानी से सरलता पूर्वक शास्त्रीय विचार दिये गये हैं। वैदिक, तान्त्रिक, पौराणिक, शाबर तथा जैन-सम्प्रदाय के प्रसिद्ध और उपयोगी मन्त्रों का विधि-पूर्वक संग्रह पहली बार ही आपको इसमें देखने को मिलेगा।

नवीन संशोधित संस्करण

8.10.2002

पुस्तक-परिचय

जीवन की सभी समस्याओं के समाधान हेतु 'मन्त्र शक्ति' मानव के लिए ईश्वर-प्रदत्त एक अमोघ वरदान है। प्राचीन ऋषि-महर्षि, शासक और उच्च शक्ति-सम्पन्न महात्मा मन्त्र के बल पर ही आत्म-कल्याण तथा लोक-कल्याण किया करते थे। राम, कृष्णादि अवतारी देवों ने मन्त्र शक्ति से ही राक्षसों का संहार किया। वसिष्ठ, विश्वामित्रादि ने मन्त्रों के बल पर ही काल पर विजय पाई। रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, योगी अरविन्द आदि मन्त्र-साधना से ही विश्वविख्यात हुए।

कार्य-सिद्धि के लिए मन्त्रों की उपयोगिता और उपासना के प्रकारों को सूक्ष्मता से समझना बहुत आवश्यक है। जीवन की सभी समस्याओं का समाधान मन्त्र-शक्ति पर निर्भर है।

मन्त्रों के अंग-उपांगों का ज्ञान किये बिना सिद्धि भी विकलांग जैसी ही रहती है, जैसे शरीर के सभी अंगों की सुरक्षा पर ही उनमें कार्य करने की शक्ति निर्भर रहती है वैसे ही मन्त्रों के अंग-उपांग जानकर उनके अनुसार प्रयोग करने से शक्ति और सफलता प्राप्त होती है।

'मंत्र-शक्ति' में परिचय और प्रयोग दोनों ही विषयों पर बहुत ही सावधानी से सरलता पूर्वक शास्त्रीय विचार दिये गये हैं। वैदिक, तान्त्रिक, पौराणिक, शाबर तथा जैन-सम्प्रदाय के प्रसिद्ध और उपयोगी मन्त्रों का विधि-पूर्वक संग्रह पहली बार ही आपको इसमें देखने को मिलेगा।

नवीन संशोधित संस्करण

8.10.2002

एक दृष्टि में

परिचय-विभाग

मन्त्र एक संजीवन औषधि
मानव की सहज इच्छा
मन्त्र सिद्धि और उसके प्रकार
प्राचीन मान्यतायें और आधुनिक खोज
साधना में आचार-विचार का स्थान
उपासना के प्रकार एवं सिद्धि के मूल मन्त्र
मन्त्र की महिमा और उसकी परिभाषा
श्रद्धा, धैर्य, गुरुभक्ति, शुद्धि, आसन
आचार, धारणा, प्राणक्रिया, मुद्रा, जप आदि
मन्त्र और देवता, बीजमन्त्र विचार
मन्त्रनिर्णय और उसके उपाय
मन्त्रसाधना में उपयोगी ज्ञान
पुरश्चरण पद्धति, वशीकरण आदि

प्रयोग-विभाग

नित्य कर्म प्रयोग, पूर्व कर्तव्य
मृत संजीवनी विद्या (शुक्राचार्य द्वारा उपासित)
दुर्गा सप्तशती के कुछ सिद्ध सम्पुट मन्त्र
सन्तान प्राप्ति के मन्त्र
उपयोगी मन्त्र संग्रह
नवग्रह शान्ति के मन्त्र, १२ राशियों के मन्त्र
शाबर मन्त्र संग्रह
सर्वरोग निवारक व जैन सम्प्रदाय मन्त्र

दो शब्द

मनुष्य अक्षय शक्तियों का भण्डार है, किन्तु उसकी शक्तियाँ बाहरी प्रपंचों के कारण निर्बल, क्रियाहीन तथा चेतनाशून्य बनी हुई हैं। उन्हें क्रमशः जगाकर सत्कर्म में प्रेरित करने का मुख्य साधन मंत्र के अतिरिक्त और कोई नहीं है।

मन्त्र-शक्ति की जिज्ञासा, कार्य सिद्धि के लिये उनकी उपयोगिता उपासना के प्रकार तथा वास्तविक तथ्य इन सबको सूक्ष्मता से समझने की मानवीय प्रवृत्ति इसी का परिणाम है। गत कुछ वर्षों में जो इस विषय से सम्बन्धित प्रकाशन हुए हैं उनको गम्भीरता से विचार करने पर ऐसा ज्ञात होता है कि कुछ ऐसी बातें छूट गयी हैं अथवा छोड़ दी गई हैं कि जिनके बिना उपासना का मार्ग प्रशस्त नहीं हो पाता।

इस दृष्टि को प्रधानता देते हुए हमने 'मन्त्र-शक्ति' नामक इस पुस्तक में मन्त्र शास्त्र के सभी छोटे-बड़े अंगों का व्यवस्थित परिचय और प्रयोग दो भागों में प्रस्तुत किया है जिससे क्रमशः सरलतापूर्वक मन्त्र-शक्ति प्राप्त करने के लिए कुछ क्रियाओं की आवश्यकता, उनकी वैज्ञानिकता, उनके प्रकार एवं अन्यान्य बातें समझाई गई हैं।

इस प्रकार सभी दृष्टि से उपयोगी बनाने का पूरा ध्यान रखकर आज के व्यस्त जीवन में कुछ समय शान्ति पूर्वक ईश्वर स्मरण करने की अभिरुचि वाले व्यक्तियों के लिये यह उपयोगी रचना सिद्ध होगी ऐसी हमारी धारणा है।

वैशाखी संवत् २०३१ —लेखक

विषय-सूची

परिचय-विभाग

प्रयोग-विभाग

१

परिचय विभाग

।। ॐ मन्त्रशक्तिस्वरूपिण्यै नमः ।।

: १ : मानव की सहज इच्छा

गुरु-महिमा

संसार में माता के गर्भ से मुक्त होकर आया हुआ प्रत्येक प्राणी अपने ज्ञान तन्तुओं के विकास की पहली सीढ़ी पर पहुँचने के साथ ही सुख की इच्छा करता है। जैसे-जैसे उसकी प्रवृत्तियाँ बढ़ती हैं, उसके मन का मृग छलाँगें भरने लगता है। प्रकृति और संसार के अणु-अणु में वह सुख की खोज करता है, स्वार्थ को सफल बनाना चाहता है और मानसिक भावों को साकार रूप में देखना चाहता है, किन्तु जैसे खेल-खेल में एक बालक दूसरे बालक को नहीं पकड़ पाता वैसे ही अथवा—'तू डाल-डाल तो मैं पात-पात' वाली कहावत को चरितार्थ करते हुए सुख उससे दूर ही भागता रहता है। यह सुख कामना की दृष्टि से जितना सहज लगता है उतना हो मिलने में कठोर तथा हठी है। यदि इसकी प्राप्ति सुलभ है तो वह केवल गुरु की कृपा से ही।

गुरुकृपा और सुख प्राप्ति के साधन

गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और शिव का रूप माना गया है। गुरु सदा दया करते हैं। उनकी कृपा से जन्म-मरण के बन्धन नष्ट होकर सब मनोरथों की सिद्धि होती है। गुरु के समक्ष 'सुख' की प्राप्ति के साधन पूछने पर ज्ञात होता है कि—"त्रिविध तापों के शमन से सुख मिलता है।" ये ताप—'भूत, प्रेत, पिशाच आदि की बाधा से उत्पन्न होने

पर अथवा सर्दी, गर्मी, वर्षा और बिजली, तूफान आदि के उपद्रवों से **आधिदैविक,** शरीर में उत्पन्न वात, पित्त, कफ आदि के विकार से उत्पन्न रोग तथा मानसिक दुःख होने पर **आध्यात्मिक** तथा पशु, पक्षी, मनुष्य एवं अन्य कीटादि प्राणियों के कारण दुःख उत्पन्न होने पर **'आधिभौतिक'**—कहलाते हैं। इन दुःखों को शान्त करने के अनेक साधन हैं, जिनमें कुछ तत्काल शान्त करके पुनः उभरने से उन्हें नहीं रोक सकते; कुछ शान्त कर देते हैं, पर नये दुःखों को जन्म देते हैं और कुछ ऐसे हैं, जो दुःखों को तो मिटाते ही हैं, साथ ही विभिन्न सुखों की सृष्टि भी करते हैं। इस प्रकार के उपायों में अन्तिम उपाय **'मन्त्र-साधना'** है जोकि श्रद्धा और विश्वास के साथ करने पर कभी निष्फल नहीं होती।

यही कारण है कि गुरु और देवता में एक भाव मानने का आदेश दिया गया है। 'कुलार्णवतन्त्र' में कहा गया है कि—

यथा घटश्च कलशः कुम्भश्चैकार्थवाचकाः।
तथा देवश्च मन्त्रश्च गुरुश्चैकार्थवाचकाः॥

"जैसे घट-घड़ा, कलश और कुम्भ ये शब्द एक ही अर्थ के वाचक हैं, उसी प्रकार देव मन्त्र और गुरु एक अर्थ के वाचक हैं।" गुरु द्वारा मन्त्र प्राप्त होता है। मन्त्र द्वारा देवता प्रसन्न होते हैं और देवता की कृपा से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है, अतः इन तीनों में पूर्ण एकता है।

कबीरदास जी की वाणी—

गुरु गोविन्द दोनों खड़े, का के लागूं पाँय।
बलिहारी गुरुदेव की, गोविन्द दियो बताय ॥१॥
सतगुरु दीनदयाल हैं, दया करौ मोहि आय।
कोटि जन्म का पन्थ था, पल में पहुँचा जाय ॥२॥
गुरु कुम्हार शिख कुम्भ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।
अन्तर हाथ सहार दै, बाहर मारै चोट ॥३॥

में गुरुदेव के रहस्य का जो उद्घाटन हुआ है, वह सर्वविदित है। गुरु शब्द के अर्थ पर जब विचार किया जाता है तो—

गुकारस्त्वन्धकारः स्याद् रुकारस्तन्निरोधकः।
अन्धकार-विरोधत्वाद् गुरुरित्यभिधीयते ॥

के आधार पर 'गु' अक्षर अन्धकार तथा 'रु' अक्षर उसके विरोध का वाचक प्रतीत होता है और अन्धकार का नाश करने के कारण ही 'गुरु' नाम की सार्थकता होती है। गुरुदेव की कृपा में अपूर्व शक्ति है, वे चाहें जो कर सकते हैं। इसीलिए कहा गया है कि—

तीन लोक नौ खण्ड में, गुरु ते बड़ा न कोय।
करता करै न करि सके, गुरु करै सो होय ॥

यही सब भावना रखते हुए जो कृपा-प्रसाद प्राप्त कर लेता है उसे सब प्रकार के सुख सहज ही मिल जाते हैं।

मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र

इस मार्ग की तीन धाराएँ हैं, जिनमें **'मन्त्र-साहित्य'** की धारा सर्वप्रथम है। मन्त्र एक ऐसा सूक्ष्म, किन्तु महत्त्वपूर्ण तत्त्व है कि जिसके द्वारा स्थूल पर नियन्त्रण किया जाता है, विराट् को स्फूर्तिमान रखने का अनूठा साधन है और पिण्ड में ब्रह्माण्ड को देखने की दृष्टि है। प्रकृति को वश में करने की अपूर्व शक्ति मन्त्र में विराजमान है। यद्यपि आज भौतिक विज्ञान की प्रतिष्ठा के कारण जनसाधारण का विश्वास मन्त्र-साधना के प्रति शिथिल बन रहा है तथापि भारतीय आस्तिक वातावरण में पलने वाले मानव की श्रद्धा उसी प्रकार सुस्थिर है और वह मन्त्रजप द्वारा अपना और पराये का कल्याण प्राप्त करता रहता है।

दूसरी धारा में **'तन्त्र-साधना'** आती है। मन्त्र शब्द आज के समाज में केवल 'जादू-टोने' के अर्थ में प्रयुक्त होता है, किन्तु वस्तुतः यह शब्द इससे कहीं अधिक गम्भीर अर्थ से युक्त है। वैसे तो समस्त

आगम, मन्त्र, यन्त्रादि के शास्त्रों का नाम भी तन्त्र ही है तथापि शैवागमों के अनुसार 'जिसके द्वारा मन्त्र के अर्थ का विस्तारपूर्वक निरूपण हो तथा मनुष्यों की भय से रक्षा हो, उसे तन्त्र कहते हैं।[1] तथा देवताओं के स्वरूप, गुण, कर्म आदि का जिसमें चिन्तन हो तथा 'पटल, पद्धति, कवच, सहस्रनाम और स्तोत्र' इन पाँच अंगों वाली पूजा का जिसमें विधान हो उसे तन्त्र ग्रन्थ की संज्ञा दी गई है।

'यन्त्र-साधना' इस प्रवाह की तीसरी धारा है। यन्त्रों की उपासना, सम्भवत: प्रतिमा-पूजा के काल से बहुत प्राचीन है। उपास्यदेव की— रेखात्मक, वर्णात्मक, अङ्कात्मक अथवा समन्वयात्मक पद्धति से निर्मित धातुमय. वर्णमय अथवा लिखित यन्त्र में स्थापना की जाती है और ऐसे यन्त्र 'पूजा-यन्त्र' अथवा 'धारण-यन्त्र' के रूप में साधना के प्रमुख अंग बन जाते हैं।

उपर्युक्त तीन धाराओं की कहीं पृथक् रूप से अथवा कहीं सम्मिलित रूप से साधना होती है। इन्हीं के साथ-साथ योग और स्तोत्रादि की सहायता से सिद्धि के पास पहुँचने में सरलता होती है। इसी प्रसंग में यह कहना भी अनुचित नहीं होगा कि जिस प्रकार बिजली के तार में जो पतले-पतले तार रहते हैं वे सब मिलकर जैसे बिजली को उत्पत्ति करते हैं, किसी एक तार से यह क्रिया सम्भव नहीं है, इसी प्रकार मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र के सम्मिलित साधन से सिद्धि प्राप्त होती है।

१—सर्वेऽर्था येन तन्यन्ते, त्रायन्ते च भयाज्जनान्।
इति तन्त्रस्य तन्त्रत्वं, तन्त्रज्ञा: परिचक्षते॥

२—प्रस्तुत ग्रन्थ के बाद इस प्रकाशन-माला में तन्त्रशक्ति, यन्त्रशक्ति ग्रन्थ प्रकाशित हैं तथा स्तोत्रशक्ति और योगशक्ति नामक ग्रन्थों के प्रकाशन की भी योजना है। अत: इन विषयों का विस्तृत विवरण वहीं देखें।

— सम्पादक

मन्त्रसिद्धि और उसके प्रकार

योगशास्त्र में पतञ्जलि मुनि ने कहा है कि—**'जन्मौषधि-मन्त्र-तपःसमाधिजाः सिद्धयः'** अर्थात् जन्म, औषधि, मन्त्र, तप और समाधि से उत्पन्न फल सिद्धि कहलाता है। इस सूत्र के अनुसार कुछ साधक पूर्वजन्म के संस्कारों से जन्म लेते ही सिद्ध बन जाते हैं, कुछ औषधि चूर्णादि के सेवन से सिद्धि प्राप्त कर लेते हैं, कुछ व्यक्ति मन्त्रों की उपासना से अपने तथा दूसरे के कष्टों को दूर करके अभीष्ट प्राप्त करते हैं। बहुत से मनुष्य तप के द्वारा सिद्धि प्राप्त करते हैं और सामान्य भूमिका से ऊपर उठकर अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा आदि सिद्धियों में जीवन व्यतीत करते हैं, जब कि कतिपय महापुरुष ईश्वर साक्षात्कार में उपर्युक्त सिद्धियों को विघ्नरूप मानकर इनके प्रति आसक्ति नहीं रखते हुए समाधि द्वारा ही ब्रह्मसाक्षात्कार में लगे रहते हैं।

मन्त्रसाधना और योगमार्ग

वैसे मन्त्र-साधक के लिये यह आवश्यक है कि वह उपासना में योगशास्त्र में दिखाये गये मार्ग का भी परिचय प्राप्त करे। योगमार्ग में साधक का प्रवेश प्राणायाम से ही आरम्भ होता है। अष्टांग-योग 'यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि'—में से प्रारम्भिक चार और सातवाँ अंग इसके लिये बहुत उपयोगी हैं। इन्द्रियों अथवा चित्तवृत्तियों को वश में रखते हुए अनावश्यक प्रवृत्तियों से रोकने का कार्य 'यम' से ही सम्भव है। वह कौन-सा कार्य है जो 'नियम' के बिना सिद्ध हो सकता है? आसन की सिद्धि के बिना जपादि कर्म कैसे सफल हो सकते हैं? प्राणायाम उपासना का महत्त्वपूर्ण अंग है ही और ध्यान से ईश्वरीय तत्त्व का साक्षात्कार किया जा सकता है।

स्वर अथवा शकुन-शास्त्र

योगशास्त्रीय परिचय के साथ-साथ ही यदि स्वरशास्त्र का भी परिचय हो, तो वह उपासक के लिये बड़ा हितकारी होता है। श्वास-प्रश्वास के सहारे नासिका के मार्ग से बहने वाली वायु को स्वर कहा गया है। इडा, पिंगला और सुषुम्णा नामक तीन नाड़ियों अथवा चन्द्र, सूर्य और मिश्र स्वरों के सहारे से साधक यह सहज ही जान लेता है कि किस समय किस कर्म का आरम्भ करने से शीघ्र सफलता प्राप्त होती है। स्वरशास्त्र का ही दूसरा नाम शकुन शास्त्र है। शकुन ज्ञान में बाहरी तत्त्वों का भी समावेश किया गया है और पशु-पक्षियों की आवाज, वस्तु दर्शन के साथ ही मनुष्य के अंगों का स्फुरण भी इसमें सहायक होता है।

: २ : प्राचीन मान्यताएं और आधुनिक खोज

संसार बड़ा विचित्र है। यहाँ सभी प्राणियों में मनुष्य सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण प्राणी है। उसके पास बुद्धि एक ऐसा अपूर्व साधन है कि जिससे वह सार-असार, उपयोगी-अनुपयोगी, सत्य-असत्य आदि की दृष्टि से प्रत्येक वस्तु की परीक्षा करता है और जब उसके तर्क-वितर्क की कसौटी पर वह वस्तु खरी सिद्ध हो जाती है, तब उसका उपयोग करता है तथा सभी के लिये उपयोगी कहकर उसका प्रचार-प्रसार भी करता है।

प्राचीन काल में मानव के सोचने और परखने की पद्धति कुछ बातों पर ही सीमित थी, जिसमें गुरु और शास्त्र प्रमुख थे। उसकी

यह धारणा थी कि गुरुदेव जो कहते अथवा आदेश देते हैं वही सत्य है और सर्वशास्त्र सम्मत है। इस दृष्टि से वह कभी किसी प्रकार से उनके वचन में अविश्वास, शंका अथवा अपनी बुद्धि का उपयोग न करके केवल उनकी आज्ञा मानने में ही अपना कल्याण मानता था।

इसका परिणाम यह होता था कि वह गुरु कृपा से पास हो जाता था और कभी असफलता मिलती तो उसमें अपनी ही कमजोरी या त्रुटि मान लेता था। इस तरह गुरु-परम्परा से मन्त्र भी प्राप्त हुये और उनके जप आदि से सिद्धि भी मिली।

दूसरा पक्ष था शास्त्र का; जिसमें मान्य शास्त्रों में जो लिखा अथवा आदेश दिया गया उसी के अनुसार अपनी जीवन-यात्रा चलाई जाती थी। यद्यपि शास्त्रों की रचना गुरुजनों द्वारा ही की जाती थी और उनका वचन सर्वव्यापी होता था, फिर भी अपनी-अपनी श्रद्धा और विश्वास के अनुसार उनको ही सर्वोपरि मानकर जो भी कार्य किये जाते थे, वे सब प्रकार से मंगलकारी सिद्ध होते थे।

कुछ काल तक यह स्थिति चलती रही। भारतीय ही नहीं, विश्व-भर में मानव-समाज की यही स्थिति रही। सभी धर्मों के आचार्य इस धारा के पोषण में लगे हुए थे। किन्तु यह विश्वास धीरे-धीरे अन्ध-विश्वास की सीमा में पहुँच गया। स्वार्थ एवं अहं की प्रवृत्ति ने सत्य से दूर हट कर अपना स्वतन्त्र प्रभाव बढ़ाना आरम्भ किया। गुरु ने अपने अनुकूल आदेश देने आरम्भ किये। शास्त्रों की रचना में भी सम्प्रदाय का आग्रह फलने-फूलने लगा। ऐसी अवस्था में आस्तिक समुदाय ने जब कुछ मनोमन्थन किया तो ज्ञात हुआ कि "अब केवल गुरु अथवा केवल शास्त्र की आज्ञा का राजा के आदेश के समान बिना छानबीन किये हुए मानना हितकर नहीं है। अतः यह निर्णय सामने आया कि—गुरु और शास्त्र दोनों के मिले-जुले विचारों के अनुसार साधना की जाए।"

यह परम्परा भी कुछ काल तक चलती रही होगी और इसमें भी

किसी प्रकार की कठिनाई अथवा कमी का अनुभव किया गया होगा। तब मनुष्य ने उसमें अपनी विवेक-बुद्धि को भी सम्मिलित किया। अब गुरु, शास्त्र और विवेक-बुद्धि की त्रिवेणी बहने लगी। इस त्रिवेणी में स्नान कर साधक अपने संकटों को दूर करता, इष्ट वस्तु को प्राप्त करता और इस तरह यह प्रवाह भी पर्याप्त काल तक बहता रहा।

एक लोकोक्ति है कि—'तुम डार-डार मैं पात-पात' अर्थात् यदि तुम डाली पर घूमते हो तो मैं पत्ते-पत्ते पर घूमता हूँ। इसके अनुसार गुरुओं की और शास्त्रों की बाढ़ आई और उसमें भी तैरने तथा पार होने की शक्ति अपने में समझने वाला मानव अपने विवेक को बढ़ाने लगा। फल यह हुआ कि कुछ गुरुओं ने सस्ती प्रसिद्धि के लिये सत्य का सहारा छोड़ा तथा शास्त्रों के नाम पर सामान्य बातें लिखकर मर्यादा का उल्लंघन किया गया और 'लोभी गुरु लालची चेला' अपनी-अपनी खींचातानी में लग गये। हम सत्य, हम सिद्ध की रट बढ़ गई और समाज की मान्यताएँ भय के कारण विकलता में बदलने लगीं अथवा उस मार्ग से दूर भागने की प्रवृत्ति बढ़ने लगी।

लौकिक धारणा ऐसी बन गई कि 'मन्त्रों में अब शक्ति नहीं रही और शास्त्र केवल कल्पनाओं का संग्रह मात्र है।' इससे एक ओर नास्तिकता बढ़ गई तो दूसरी ओर अन्धविश्वास। सत्य से इस प्रकार हम दूर होते गये तथा अपनी वास्तविक शक्ति को भूलकर दर-दर भटकने लगे।

आज विज्ञान का युग है। कोई भी बात विज्ञान की कसौटी पर परीक्षण किये बिना स्वीकार नहीं की जाती। मन्त्र की शक्ति में कितनी वास्तविकता है? इसका भी अनेक दृष्टियों से परीक्षण हुआ। विदेशी विद्वानों ने भी इस दिशा में बड़ी रुचि दिखलाई। परिणाम में जो प्राप्ति हुई उसका कुछ संग्रह इस प्रकार है—

"वैज्ञानिकों ने ध्वनि तरंगों पर परीक्षण किये हैं। उन्होंने देखा

कि चिकित्सा के क्षेत्र में ऊँची फ्रीक्वेन्सी वाली ध्वनि का प्रयोग मांसपेशियों की पीड़ा को दूर करने में बहुत उपयोगी है। एक ऐसे उपकरण की सहायता से जिसमें प्रति सैकिण्ड लगभग १० लाख चक्रों की गति से ध्वनि तरंगें निकलती हैं, डॉक्टर मानव-शरीर के रुग्ण भाग में ध्वनि धाराएँ भेजते हैं, जिससे एक प्रकार का ताप उत्पन्न होता है और उसी के प्रभाव से रोग का निवारण हो जाता है।

'यूटा कालेज आफ फैडिसन' के **डा० पेटर लिण्डस्ट्राय** ने गम्भीर रोग वाले १६२ मानसिक रोगियों के मस्तिष्कों में अतिस्वन ध्वनि धाराएँ पहुँचाईं। इन ६० विक्षिप्त एवं १६२ स्नायु रोगियों में से कोई भी काम नहीं कर पाता था और उन्हें असाध्य रोगी समझा जाता था। बिजली, मनोविज्ञान और औषधि की चिकित्सा से उन्हें लाभ नहीं हुआ था, किन्तु इस अतिस्वन ध्वनि चिकित्सा से वे सभी रोगमुक्त हो गये।

न्यूयार्क में **'येशीवा विश्वविद्यालय'** के **'अल्वर्ट आइन्स्टाइन कालेज आफ मैडीसन'** में भी ध्वनि-चिकित्सा पर अनुसन्धान हुआ है और ध्वनि तरंगों द्वारा नेत्र-चिकित्सा के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता प्राप्त की है। उन्होंने ध्वनि तरंगों का प्रयोग लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई वाले फोटो-निर्माण की विधि में किया था और वह सफल रहा।

शब्द-विज्ञान के क्षेत्र में आज ऐसे अनेक प्रयोग हो रहे हैं और विदेशी विज्ञानवेत्ताओं की यह धारणा सुदृढ़ होती जा रही है कि "भारतीय महर्षियों ने मन्त्रों की रचना में जिस वैज्ञानिक दृष्टि को समक्ष रखकर कार्य किया है वह अद्भुत है और यही कारण है कि यहाँ का आस्तिक समुदाय मन्त्र-जप के द्वारा ही सब प्रकार की कठिनायों से मुक्त हो जाता है।

मन्त्रों में शक्ति जागरण

मन्त्रों में अद्भुत शक्ति का जो निवास है, वह किसी विशेष प्रक्रिया के द्वारा विभिन्न वर्णों की संयोजना से सँजोई गई है। जिन

अक्षरों के परस्पर समन्वय से मन्त्र बनते हैं, वे इस तरह मिलाये जाते हैं कि जिस प्रकार धातु और रासायनिक पदार्थों को विचार-पूर्वक मिलाने से उसमें बिजली की शक्ति प्रकट होती है, उसी प्रकार शक्तिमान् उस अक्षर समूह के सूक्ष्म विचारपूर्वक मिलाने के कारण मन्त्र में अद्भुत शक्ति प्रकाशित हो जाती है। इसके अतिरिक्त जिस प्रकार शब्द का प्रयोग करने वाले की प्राण-शक्ति और हार्दिक-शक्ति के द्वारा शब्द में अपूर्व शक्ति आ जाती है, जिसके द्वारा श्रोताओं के ऊपर प्रभाव पड़ता है, उसी प्रकार साधक के अन्तःकरण की शुद्धि-शक्ति, भावशक्ति, प्राणशक्ति, और संयमशक्ति के द्वारा मन्त्र प्रयुक्त होने पर उसमें असाधारण शक्ति आ जाती है और यही कारण है कि ऐसे शक्ति-सम्पन्न मन्त्र का जहाँ प्रयोग किया जाए, वह इच्छित-फल प्रदान किए बिना नहीं रहता; परन्तु जिस प्रकार शब्द में शक्ति होने पर भी दुष्ट उच्चारण तथा प्राणहीन, हृदयहीन मनुष्य के द्वारा उच्चारण किये जाने पर वैसा प्रभाव नहीं पड़ता, उसी प्रकार स्वर से, वर्ण से, पुरश्चरण आदि प्रक्रिया से तथा श्रद्धा-विश्वास के बिना मन्त्र में भी अपूर्व शक्ति का आविर्भाव नहीं हो पाता है। इसलिये विधिवत् प्राणशक्ति का मन्त्रशक्ति के साथ सम्बन्ध जोड़कर सफलता प्राप्त करें।

उपासना की आवश्यकता

किसी भी अभाव की पूर्ति के लिए मनुष्यों की प्रवृत्ति स्वाभाविक होती है। जिसके पास धन, ज्ञान, सन्तान, भवन आदि में से जिस वस्तु की कमी रहती है, वह उसी की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है। यही जब जीव का स्वभाव है तब वह दीर्घायु, शक्तिमान्, ज्ञानी आनन्दी अवश्य ही बनना चाहेगा। जीव में इन सभी का अभाव है, परमात्मा में ये सभी वस्तुएँ पूर्णरूप से विद्यमान् हैं। परमात्मा की आयु, शक्ति, ज्ञान, आनन्द सभी अनन्त हैं। इसलिये परमात्मा से

मिलकर उनके पास पहुँचकर इन वस्तुओं को प्राप्त करने की लालसा मनुष्यों को बनी रहती है। इसी लालसा का नाम है **'उपासना'**। 'उप' अर्थात् समीप और 'आस' धातु का अर्थ है प्राप्त होना—अर्थात् परमात्मा के समीप जाने अथवा उनका सामीप्य लाभ करने के उपायों का नाम उपासना या साधना है।

इस उपासना को भिन्न-भिन्न जाति, अधिकार तथा धर्म के मनुष्य अपनी शक्ति और योग्यता क अनुसार ही कर सकते हैं। यही कारण है कि भिन्न-भिन्न धर्मों में उपासना की अलग-अलग रीतियाँ प्रचलित हैं। ये सभी पद्धतियाँ सत्य हैं क्योंकि साक्षात् अथवा परोक्ष रूप से इन सभी की गति भिन्न-भिन्न क्षेत्र, दिशा, स्थान और गति से युक्त उन नदियों की तरह है, जो अन्त में समुद्र में जाकर मिलती हैं। इस रहस्य को जो उपासक नहीं समझता है, वही मतवाद के चक्कर में पड़कर संकीर्णता के कारण हीन गति को प्राप्त करता है। अतः यह निश्चित सिद्धान्त है कि सभी धर्म, सभी सम्प्रदाय, सभी उपधर्म और पन्थों की उपासना-पद्धति अपने-अपने ढंग पर ठीक ही है, केवल अधिकार भेदानुसार उच्च-सामान्य कोटि का तारतम्य है। मैक्समूलर ने ठीक ही कहा है—

"There never was a false god, nor was there ever really a false religion, unless you call a child a false man ! We are in different classes of the great life-school and we are happiest when we associate with those in our own class or consciousness."

December 12, 1924. Graphology-Kalpak

अर्थात् "जिस प्रकार किसी बालक को चाहे वह कितना ही छोटा हो मनुष्य न कहना असत्य है, इसी प्रकार किसी धर्ममत या इष्ट देवता को चाहे वह कितना ही साधारण क्यों न हो धर्म या देवता न कहना

असत्य और अनुचित है। संसार में मिथ्या देवता और मिथ्या धर्म कोई भी नहीं है। जीवों के अधिकारानुसार सभी धर्मों की कहीं न कहीं स्थिति अवश्य है। जीवन के महान् विद्यालय में हम लोग अलग-अलग श्रेणी के विद्यार्थी हैं और जो श्रेणी हमारे लायक अर्थात् हमारी शक्ति के अनुकूल है उसी में रहना हमारे लिये उचित तथा सुखदायक है।"

अतः साधक को अपने कुल, परम्परा, मान्यता, भावना और उपदेश के अनुसार श्रद्धा तथा विश्वास से मुक्त होकर उपासना करनी चाहिये और सदैव यह ध्यान रखना चाहिये कि उसके द्वारा किसी साधना-पद्धति के प्रति दुर्भाव अथवा ईर्ष्याभाव प्रकट न हो।

'मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना' के अनुसार प्राणिमात्र की रुचि में भिन्नता स्वाभाविक है, किन्तु जो किया जाय वह विवेकपूर्वक, शास्त्र-सम्मत एवं गुरुकृपा द्वारा प्राप्त करके किया जाए जिससे साधना निष्कण्टक रूप से चलती रहे।

जहाँ तक सम्भव हो मन्त्र-जप आदि के समय किसी प्रकार सामान्य कामनाएँ न करें, किसी का बुरा न चाहें तथा यही भावना करते रहें कि परमात्मा सर्वव्यापी है, वह मुझे सन्मति देवे, मेरे प्रतिपक्षी को भी सद्बुद्धि दे। आर्तभाव से सदा प्रार्थना करते रहें कि—"हे परमात्मा! मुझ पर कृपा करो। अपनी शरण में लो। आपकी कृपा ही मेरी सबसे बड़ी पूंजी है, मुझे और कुछ नहीं चाहिये आदि।"

साधना में आचार-विचार का स्थान

देश, काल और पात्र का विचार करके जो कार्य किया जाता है, वह पूर्ण सफल होता है। साधना करने वाले को साधना-मार्ग में प्रवेश करने के पश्चात् अनेक बातों का ध्यान रखना चाहिये, नहीं तो वर्षों की साधना का परिश्रम कुछ ही क्षणों में निष्फल बन जाता है।

'आचारः प्रथमो धर्मः'—आचार पहला धर्म है। तदनुसार प्रातः-काल से शयनकाल तक कायिक, वाचिक और मानसिक क्रियाओं के प्रति बाहरी और आन्तरिक दोनों रूपों में सावधान रहना चाहिये। आचार ही वह नींव है जिस पर पूरी उपासना का महल खड़ा होता है। जब नींव ही सुदृढ़ न होगी तो भवन की स्थिरता पर शंका होना स्वाभाविक ही है।

वैसे तन्त्रशास्त्र में सामान्य आचार की अपेक्षा कुछ तान्त्रिक-आचारों का भी उल्लेख किया गया है। ऐसे आचारों में दक्षिणाचार, वामाचार, कौलाचार, वीराचार आदि के नाम लिये जा सकते हैं। इन आचारों में दीक्षित होने पर साधक को अपनी-अपनी आचार परम्परा के अनुसार न्यास, पूजा एवं जपसम्बन्धी प्रक्रियाओं में कुछ सम-विषम क्रियाएँ की जाती हैं।

इसी प्रकार अन्यान्य धर्मों, सम्प्रदायों अथवा परम्पराओं में प्रच-लित मन्त्रों की साधना में उनके द्वारा बताए गये आचारों का पालन पूर्णरूपेण आवश्यक है। देवी की उपासना में वैष्णवाचार की अपेक्षा अन्तर होता है। शैवाचार में वैष्णवाचार का मिश्रण उचित नहीं है तथा जैन अथवा बौद्ध सम्प्रदाय के मन्त्रों की साधना में इन धर्मों के आचारों का पालन नितान्त आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि एक आचार का दूसरे आचार में मिश्रण नहीं होना चाहिये। जैसे कोई दुर्गा-पाठ अथवा हनुमान की उपासना करता हो और वह जैन दीक्षा में दीक्षित होनेके कारण आचार उसी का मानता हो और उसी पद्धति से पाठ-जपादि करता हो तो उसमें आचार-मिश्रण माना जाएगा और वह उचित नहीं कहा जाएगा।

आजकल के मुद्रित तन्त्र-मन्त्र के ग्रन्थों में ऐसी ही मिलावट हो जाने से सिद्धियाँ दूर चली गई हैं तथा उचित फल का अभाव दिखाई देता है।

: ३ : उपासना के प्रकार एवं सिद्धि का मूल-मन्त्र

उपासना के दो प्रकार हैं—बाह्य और आभ्यन्तर। इसी को दूसरे शब्दों में बहिर्याग और अन्तर्याग कहते हैं। अतः शय्या-त्याग, मल विसर्जन, दन्तधावन, स्नान, वस्त्र-प्रक्षालन, उपासनास्थलागमन, आसन, दिशामुख, आवाहनादि पूजा-विधान का विचार बाह्य उपासना में आवश्यक माना गया है, जबकि अन्तर्याग में न्यास, ध्यान, जप आदि की महत्ता है।

अपने आराध्य की प्रतिमा मूर्ति यन्त्र अथवा चित्र के समक्ष की जानेवाली पूजाविधि से कर्म के अनुसार सभी सामग्री का चयन हो तथा एक कर्म में अन्य कर्म की वस्तु का मिश्रण न हो, इस पर पूरा ध्यान देना चाहिये। पूजा, जप और ध्यान आदि में अन्य प्रकार या क्रम का मिश्रण अथवा विपरीतता आ जाने से फल में दोष आ जाता है।

साथ हो साधक को बोल-चाल, रहन-सहन, खान-पान, स्वाध्याय और अन्य दैनिक क्रियाओं पर भी पूरा नियन्त्रण रखना चाहिये, जिससे साधना में किसी भी प्रकार का विकार न आने पाये तथा सात्त्विक भाव की स्थिति बनी रहे। इष्टदेव के चरणों में अन्यत्र अनुराग ही सिद्धि का मूलमन्त्र है।

हमारा प्राचीन साहित्य

मुस्लिम आक्रमण के समय से ही हमारे देश की शास्त्र सम्पत्ति का विनाश होता आ रहा है। धार्मिक असहिष्णुता के कारण न केवल

ग्रन्थों का नाश किया गया, अपितु प्राचीनतम अति दुर्लभ भण्डारों को जलाकर सदा के लिए समाप्त भी कर दिया गया। प्राणों से भी प्रिय पाण्डुलिपियों का जैसे-तैसे संरक्षण किया जाने पर भी अंग्रेजों ने उन्हें प्राप्त कर स्वदेश ले जाने में पर्याप्त प्रयास किया। कुछ लोभी व्यक्तियों ने ऐसे ग्रन्थों को द्रव्य के लोभ में आकर बेच दिया। इन सबका परिणाम यह हुआ कि आज मिलने वाली पाण्डुलिपियाँ या तो कल्पित रह गई हैं अथवा उनके मुख्य भाग निकाल लिये गये हैं।

मन्त्र-विज्ञान के विशेषज्ञों का कहना है कि मध्यकाल में कुछ मान्त्रिक प्रयोगों द्वारा शास्त्रभंग नामक प्रयोग द्वारा मूल ग्रन्थों के वास्तविक पाठ नष्ट करके उनके स्थान पर कल्पित पाठों को जोड़ दिया गया है। इस क्रिया को करने वाले वे लोग थे जो समाज अथवा जाति से सङ्करीकरण के कारण बहिष्कृत या तिरस्कृत थे।

उत्तर काल के विद्वानों ने अपनी-अपनी परम्परा और बुद्धि के बल पर ऐसे नष्ट अंश वाले अथवा भ्रष्ट पाठ वाले ग्रन्थों को सुधारा और नवीन रूप से अपने पाण्डित्य की छाप लगाकर उन्हें प्रस्तुत किया।

आज अधिकांश ग्रन्थों में वास्तविक परम्परा का प्रायः अभाव है। मन्त्रों और बीज मंत्रों के पाठों में मिश्रण हो गया है। प्रायोगिक दृष्टि से न्यास, ध्यान, जप आदि की प्रक्रिया विलुप्त है। उच्चारण का वास्तविक स्वरूप प्राप्त नहीं है और एक तन्त्र का अन्य तन्त्र में मिश्रण हो गया है। यह भी एक प्रकार का आचार-लोप है, इस प्रकार के आचार-लोप से भी सिद्धि में विलम्ब होता है। ध्यान के पद्यों में च, तथा, हि वा आदि अव्यय जोड़े जाने से ध्यान में भी अन्तर आ जाता है। अतः इन सबका विचार करके ही साधना करनी चाहिये।

: ४ : मन्त्र की महिमा और उनकी परिभाषा

मंत्र परमलघु जासु बस, विधि हरि हर सुर सर्व ।
महामत्त गजराज कहँ, बस कर अंकुश खर्व ।।

महात्मा तुलसीदास जी ने रामचरित-मानस में मन्त्र की महिमा बतलाते हुए कहा है कि मन्त्र वर्णों की दृष्टि से बहुत ही छोटा होता है, किन्तु उससे ब्रह्मा, बिष्णु और शिवादि सब देवता वश में हो जाते है; जैसे महामत्त गजराज को छोटा-सा अंकुश वश में कर लेता है। अतः यह स्पष्ट है कि मन्त्र अंकुश के समान परम शक्ति से युक्त होता है। मनन करने से यह त्राण-रक्षा करता है और गुप्त रूप से इसका स्मरण करने के कारण भी इसका नाम मन्त्र बना है।

मन्त्र निगम और आगम के रहस्यरूप हैं। **निगम** का अर्थ है अपौरुषेय वेद। वेदों में कर्म-काण्ड, उपासना, ज्ञान एवं विज्ञान का विस्तृत वर्णन है। **आगम** का तात्पर्य है—भगवान् शिव के द्वारा जगज्जननी राजेश्वरी को सुनाया गया शास्त्र। आगम का ही दूसरा नाम तन्त्र है। **तन्त्र** की अनेक परिभाषाएँ हैं जिनका सारांश है—ऐश्वर्य सम्पन्न, शीघ्र ही आत्म-साक्षात्कार की युक्ति। इसमें निगम के प्रत्येक मन्त्र के साक्षात्कार का विधान, तत्सम्बन्धी विविध प्रक्रियाएं और उपकरण आदि का विधिवत् निर्देश है। साथ ही योग, ज्योतिष और व्याकरण, आयुर्वेद, शिल्प आदि अनेक विषयों का ज्ञान-विज्ञान भी इसमें सर्वत्र व्याप्त है।

वर्तमान समय में सामान्य जन निगम और आगम के रहस्यों को भली प्रकार से न समझ कर तन्त्रशास्त्र के मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि प्रयोगों का उपहास करते हैं, परन्तु यह उचित नहीं है। वस्तुतः आगम के तीन भाग हैं—आगम, यामल तथा डामर। आगम और यामल में योग एवं मन्त्र-शक्ति के कुण्डलिनी को उठाकर जीवात्मा और परमात्मा का बोध कराते हुए उस बोध से भी छुड़ाकर अहम्—मैं और इदम्—**'यह मुझसे अलग नहीं है, मैं ही यह हूं।'** इस प्रकार के ज्ञान से उत्पन्न अहंकार से छुड़ाकर शुद्ध, बुद्ध, मुक्त, चैतन्य, ऐश्वर्य तथा माधुर्य से सम्पन्न ज्ञानस्वरूप बनने का मार्ग दिखलाया है। अतः ये शुद्ध वेदांत के प्रतिपादक हैं और स्पष्ट शब्दों में कहा जाय तो ये वेदांत के क्रियात्मक रूप को प्रस्तुत करते हैं जबकि केवल डामर-तन्त्र ही षट्कर्मों का विवेचन करता है।

इस प्रकार मन्त्र अथवा मन्त्रशास्त्र में दिखाये गये कर्म अपने सर्वविध भावों से भगवद्भक्ति, प्रत्येक उपासना से सम्बद्ध क्रम दीक्षा का ज्ञान, सब प्रकार के सुखोपभोगों के प्रति त्यागभावना, वैराग्य, राजयोग, हठयोग, लययोग, नादयोग, मंत्रयोग तथा पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, अधः, ऊर्ध्व, ईशान, आग्नेय, वायव्य और नैर्ऋत्य आदि दस आम्नायों में कहे गए पुर्वाम्नाय से मन्त्रयोग, दक्षिणाम्नाय से भक्तियोग, उत्तराम्नाय से ज्ञानयोग, अधराम्नाय से शब्दयोग, ऊर्ध्वाम्नाय से विज्ञानयोग, ईशान, आग्नेय तथा वायव्याम्नाय से कर्मयोग और पश्चिमाम्नाय से सभी मिश्रित होकर मिश्रितयोग की प्राप्तिरूप कर्मकाण्ड का ज्ञान कराते हुए साधक को आध्यात्मिक उत्थान के सुपथ पर ले जाने का निर्देश करते हैं। नैर्ऋताम्नाय में प्रतिपादित षट्कर्म तो उसका एक बहुत छोटा अंग है। अतः मन्त्र अथवा मन्त्र साधना के प्रति किसी प्रकार के हीन-विचार बनाना किसी भी रूप में उचित नहीं है।

निरुक्तकार **यास्क मुनि** ने कहा है—कि **'मन्त्रो मननात्'** अर्थात्

मन्त्र का प्रयोग मनन के कारण हुआ है। अर्थात् जिन वाक्य, पद अथवा वर्णों का बार-बार मनन किया जाता है और वैसा करने से जो इच्छित कार्य की पूर्ति करते हैं वे मन्त्र कहलाते हैं। मनन, चिन्तन, विचार, संकल्प ये सब एक ही प्रक्रिया के बोधक हैं। तत्त्वज्ञ पुरुषों का कथन है कि—"मनुष्य का शरीर पार्थिव है और मन दैवी-देवता से सम्बन्धित है।" इसलिए मनुष्य के शरीर में पार्थिव और दैवी शक्ति का अद्‌भुत संयोग बना हुआ है। यदि मनुष्य अपने को प्राप्त दैवी वस्तु का यथार्थ उपयोग करे तो अनेक प्रकार के दुर्लभ कार्यों को कर सकता है। इस संसार में जो भी महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुये हैं वे सब इसी दैवीशक्ति के परिणाम हैं। डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने लिखा है कि—"जीवन में मन्त्रशक्ति अथवा उदात्त शिव संकल्पों की विजय अत्यन्त महिमाशाली होती है।"

मीमांसाशात्रस के अनुसार वेद वाक्य द्वारा किसी कर्म को करने की प्रेरणा प्राप्त होने पर वह मन्त्र की संज्ञा को प्राप्त करता है।

पिंगलामत में कहा है कि—

मननं विश्वविज्ञानं, त्राणं संसारबन्धनात्।
यतः करोति संसिद्धिं, मन्त्र इत्युच्यते ततः ॥

मनन अर्थात्—"समस्त विज्ञान और त्राण अर्थात् संसार के बन्धनों से मुक्ति। इन दोनों कार्यों को उत्तम प्रकार से सिद्ध करने के कारण वह वर्णसमुदाय मन्त्र कहलाता है।"

तात्पर्य यह है कि गुरुप्रदत्त मन्त्र का मनन-जप करने से मनुष्य को समस्त संसार का स्वरूप ज्ञात हो जाता है और उससे मुक्त होने की शक्ति प्राप्त होतो है।

रुद्रयामल में पार्वती द्वारा प्रश्न करने पर भगवान् शिव ने मन्त्र की परिभाषा इस प्रकार दी है—

मनन-त्राणनाच्चैव मद्‌रूपस्यावबोधनात्।
मन्त्र इत्युच्यते सम्यग्ः मदधिष्ठानतः प्रिये ॥

हे प्रिये ! मनन और त्राण से मेरे स्वरूप का ज्ञान कराने से तथा मेरे परम तत्त्व का बोध कराने से जिसमें उचित रूप में स्थिरता हो वही मन्त्र कहलाता है।

योगी, अवधूत, साधु-संन्यासी इसी दृष्टि को प्रमुखता देकर मन्त्र साधना करते हैं।

ललितासहस्रनाम के भाष्य में महान् मन्त्रशास्त्री श्री भास्करराय मरवी ने मन्त्र की परिभाषा इस प्रकार दी है—

पूर्णाहन्तानुसन्ध्यात्म-स्फूर्जन् मननधर्मतः ।
संसारक्षयकृत् त्राणधर्म तो मन्त्र उच्यते ॥

जो मनन धर्म से पूर्ण अहन्ता के साथ के अनुसन्धान करके आत्मा में स्फुरण उत्पन्न करता है तथा संसार का क्षय करनेवाले त्राण गुणों से युक्त हो, वह मन्त्र कहलाता है।

इसमें मन्त्र की विशेषता बतलाते हुए कहा गया है कि जिसका जप अथवा चिन्तन करने से अपनीं अहन्ता के साथ अनुसन्धान हो अर्थात् अपने आन्तरमन (Subconcious Mind) पर प्रभाव हो और उसके द्वारा आत्मा में स्फुरण होने लगे तथा जिसका अन्तिम परिणाम संसार का क्षय अर्थात् जन्म-मरण के बन्धनों से मुक्ति हो वही मन्त्र है।

आधुनिक विज्ञान की एक शाखा मानस-शास्त्र की दृष्टि से भी मन्त्र की यही व्याख्या प्राप्त होती है। अन्य आचार्य 'मन्त्रो देवाधिष्ठितोऽसावक्षररचनाविशेषः' देवता से अधिष्ठित यह एक अक्षर रचना का विशेष प्रकार का मन्त्र है 'मन्त्रः पुनर्भवति पठितसिद्धः' जो पठन करने से सिद्ध हो वह मन्त्र है तथा 'गुप्तोपदेशतो मन्त्रः' गुरु द्वारा गुप्त उपदेश करने के कारण मन्त्र कहलाता है आदि व्याख्या करते हैं।

इस प्रकार मन्त्र का अर्थ है रहस्य। यह रहस्य अनुभव द्वारा जाना जा सकता है, किंतु इसे सर्वसाधारण के व्यवहार का विषय नहीं

बनाया जा सकता। मन्त्र के लिये गोपन पहली शर्त है। देवताओं को प्रसन्न कर उनकी कृपा प्राप्त कराने का यह एक सरलतम साधन है। व्यक्ति में छिपी हुई शक्तियों को जगाकर उन पर नियन्त्रण रखते हुए उचित उपयोग करना-कराना इसका फल है। मन्त्र का चित्रात्मक रूप यन्त्र है तो मन्त्र के भौतिक साधनों द्वारा स्थूल-पदार्थों की प्राप्ति का प्रकार तन्त्र है।

मीमांसादर्शन के अनुसार मन्त्र देवता का ही स्वरूप है। जिस देवता का जो मन्त्र है वही उसका स्वरूप है। स्थानभेद, उद्देश्यभेद एवं विचारधारा के भेद से एक ही देव अनेक रूपों में उपासना के योग्य माना जाता है। मन्त्र एक स्वतंत्र वस्तु है, उससे भिन्न स्वरूप कोई देव नहीं है। यही मन्त्रोपासना सगुणोपासना कही जाती है। संसार की अनिवार्य दुःख परम्परा से मुक्ति पाने के लिए मन्त्र ही सर्वोत्तम सुलभ साधन है। लौकिक सिद्धियों की प्राप्ति के लिए तो मन्त्र से बढ़कर अन्य आधार हो ही क्या सकता है ?

: ५ : मन्त्र विद्या के मूल तत्व

मन्त्र विद्या एक अति गहन विद्या है। युगों से चली आई परम्परा एवं गुरुगम्य विषय होने के कारण भी इस विद्या की कई गूढ़ ग्रंथियों का खुलना सर्व साधारण के लिए कठिन बन गया है! वैदिक मन्त्रों से लेकर लौकिक मन्त्रों तक की गुप्त परम्पराएँ आज यथावत् नहीं मिल पा रही हैं जिसके अनेक कारण हैं। हम देखते हैं कि आज जो ग्रन्थ मन्त्रशास्त्र के मिल रहे हैं, उनमें विधि अथवा बीज मन्त्रों का, न्यास अथवा ध्यान का, कवच अथवा रहस्य का, शापोद्धार अथवा उत्कीलन का कोई न कोई अंश छूटा हुआ है। पहले तो हमें यह

समझ ही नहीं पाते हैं कि मन्त्र के कौन-कौन से अंग आवश्यक हैं और यदि समझ लेते हैं तो कहाँ प्राप्त होंगे ? यह समस्या बन जाती है।

इसी प्रकार उत्तरकाल के विद्वानों ने ज्ञान अथवा अज्ञानवश दासता-काल में बिखरी हुई सामग्री के आधार पर एक तन्त्र का दूसरे तन्त्र में मिश्रण करके कड़ी जोड़ने का प्रयास किया, ग्रन्थों का मुद्रण किया और उन्हें प्रचारित किया। परिणाम यह हुआ कि साधकों ने स्वयं किसी को गुरु न बनाकर पुस्तकों के आधार पर ही साधना आरम्भ कर दी। फल सामान्य हुआ अथवा कुछ न हुआ तो लगे कोसने मन्त्रशास्त्र को !

अतः यह निश्चित है कि मन्त्र विद्या के मूल तत्त्वों का परिचय प्राप्त किये बिना इस मार्ग में प्रवेश न करना ही उत्तम है। शास्त्रों में सर्वत्र यही निर्देश दिया गया है कि—"श्रद्धा, धैर्य और गुरुभक्ति" ये तीन तत्त्व साधना-यात्रा के अनिवार्य सम्बल हैं और साधना-प्रणाली के सहायक तत्त्व हैं—भक्ति, शुद्धि, आसन, पञ्चांग-सेवन, आचार, धारणा, दिव्य-देश सेवन प्राणक्रिया, मुद्रा, तर्पण, हवन, बलि, याग, जप, ध्यान तथा समाधि। इन तत्त्वों की स्पष्टता इस प्रकार है—

१. श्रद्धा—साधना में सर्वप्रथम आवश्यकता श्रद्धा की है। जिस साधक के मन में आराधना की मंगलमयता अथवा कल्याणकारिता में श्रद्धा नहीं है, वह उसमें कैसे प्रवृत्त हो सकता है ? श्रद्धा को विचलित करने वाली यदि कोई वस्तु है तो वह है शंका। गीता में कहा गया है कि—'अज्ञश्चाश्रद्धधानश्च संशयात्मा विनश्यति'—अर्थात् अज्ञानी और अश्रद्धालु मनुष्य सदा शंकाशील होता है तथा वह विनाश को प्राप्त हो जाता है।

देव, ब्राह्मण, औषधि, मन्त्र आदि भावना के अनुसार फल देते हैं, अतः यदि मन्त्र को हम सामान्य मानते हैं तो उसका फल भी सामान्य ही मिलेगा और उसे महान् मानेंगे तो वह महान् फल देगा। कोई मन्त्र छोटा है तो यह क्या फल देगा ? ऐसा कुतर्क नहीं करना

चाहिए। अग्नि की छोटी-सी चिनगारी क्या घास के ढेर को नहीं जला देती ? अथवा मच्छर छोटा होने पर भी यदि हाथी के कान में घुस जाये तो क्या उसे विकल नहीं बना देता ? अतः मन्त्र कैसा भी हो, उसकी अपूर्व शक्ति पर श्रद्धा रखना नितान्त आवश्यक है। इसीलिये वेदों की आज्ञा है कि 'श्रद्धया सत्यमाप्यते'—श्रद्धा से सत्य प्राप्त होता है।

२. **धैर्य**—सभी कार्य शान्ति और सन्तोष से फलदायक होते हैं। आतुरता अथवा शीघ्रता से होने वाले कार्यों में विकार आना स्वाभाविक है। फल के पकने तक धैर्य न रखने वाला क्या कभी पके फल का स्वाद ले सकता है ? चंचल चित्त से होने वाली क्रियाओं में विधिलोप का भय बना रहता है और 'विधिभ्रंशे कुतः सिद्धिः ?' —विधि के भ्रष्ट हो जाने पर सिद्धि कहाँ ? अतः मन में पूर्ण सन्तोष एवं धैर्य रखकर ही साधना करनी चाहिये।

३. **गुरु-भक्ति**—मन्त्रों की कुंजी गुरु के पास निहित है। प्रायः सभी मन्त्र गुरु कृपा से दीक्षित होने पर सद्यः फल देते हैं। गुरु का पद समस्त देवों से ऊपर है। कहा जाता है कि—

गुरुः पिता गुरुर्माता, गुरुर्देवो गुरुर्गतिः।
शिवे रुष्टे गुरुस्त्राता, गुरौ रुष्टे न कश्चन ॥

अर्थात्—"गुरु पिता है, गुरु माता है, गुरु देव है और गुरु गति है। यदि शिव रुष्ट हो जाएँ तो गुरु रक्षा कर लेते हैं, किन्तु गुरु के रुष्ट होने पर कोई रक्षा नहीं कर सकता।"

गुरु द्वारा गोविन्द के दर्शन सुलभ माने गए हैं। अतएव देव-पूजा से पूर्व गुरु पूजा का शास्त्रों में विधान है। कहा भी है कि—

गुरुभक्ति—विहीनस्य, तपो विद्या व्रतं कुलम्।
व्यर्थं सर्वं शवस्यैव, नानालंकार-भूषणम् ॥

जिस प्रकार किसी मुर्दे को अनेक अलंकार पहनाना व्यर्थ है, उसी प्रकार गुरु-भक्ति से रहित मनुष्य के तप, विद्या, व्रत और कुल व्यर्थ हैं।

भक्ति—ऊपर गुरु-भक्ति के बारे में कहा गया है, वैसी ही दृढ़भक्ति भगवच्चरणों में होनी चाहिये, तभी मन्त्र और देवता में ऐक्य होगा और यही एकरूपता साधना को फलवती बनायेगी।

४. **शुद्धि**—शुद्धि से स्थान शुद्धि, शरीर शुद्धि, मनःशुद्धि, द्रव्य शुद्धि और क्रिया शुद्धि—इन पाँच प्रकार की शुद्धियों का संकेत है। आराधना के लिए जिस स्थान का उपयोग करना हो, वहाँ किसी प्रकार की अपवित्रता न रहे, इसलिए साधना से पहले ही उसे पानी से धोकर स्वच्छ कर लें। गोमय-गोमूत्र से पवित्र कर लें। गुलाब जल का छिड़काव भी किया जा सकता है और जपादि के समय धूप-दीप से उस स्थान को पवित्र बनाये रखें। यह स्थान एकान्त और शाँत हो, यह भी आवश्यक है। यही **स्थान शुद्धि** है।

शरीर शुद्धि के लिए पञ्चगव्य का प्राशन, शुद्ध जल से स्नान तथा शुद्ध वस्त्र-धारण अपेक्षित हैं।

५. **मनःशुद्धि** के लिए अपवित्र विचारों का परित्याग तथा पवित्र विचारों की स्थिरता का होना आवश्यक है। इसके लिए स्वाध्याय और सत्संग बहुत ही सहायक होते हैं। यथासम्भव ध्यान का सहारा लेने में भी मन स्थिर किया जाना चाहिये।

आराधना में जिन वस्तुओं का उपयोग किया जाए वे भी पूर्ण शुद्ध हों। इसके लिए ताजा पुष्प, दूध, फल आदि लायें। पूजा के उपकरण शुद्ध हों और साधना के समय काम में ली जाने वाली सभी वस्तुएँ शुद्ध रखी जाएँ। इसी को द्रव्य शुद्धि कहते हैं।

क्रिया शुद्धि—से तात्पर्य यह है कि मंत्र साधना के अंगों के रूप में की जाने वाली क्रियाओं की शुद्धता। इसमें मंत्र के पूर्वांग; जैसे, योग मुहूर्त, ऋण-धन विचार, मंत्र से सम्बन्धित न्यास, ध्यानादि तथा जप प्रक्रिया का समावेश होता है।

६. **आसन**—जप के समय बैठने की स्थिति और जिस पर बैठकर साधना की जाए, इन दोनों बातों का सम्बन्ध आसन से है।

सामान्यतया कुछ विशेष साधनाओं को छोड़कर अन्य सभी के लिए स्वस्तिकासन अथवा पद्मासन उपयुक्त माने गए हैं और बैठने के लिए ऊन का आसन सर्वोपयोगी है। जिस आसन का प्रयोग और उपयोग निश्चित किया गया हो, उसे बार-बार बदलना नहीं चाहिए। स्वयं जिस आसन पर बैठकर जपादि करते हों, उस पर दूसरे को न बैठने दें।

७. **पञ्चांग सेवन**—उपर्युक्त पद्धति से बाह्य और अन्तःशुद्धि कर लेने के बाद पञ्चांग-सेवन का निर्देश है। इसमें—

गीता सहस्रनामानि स्तवः कवचमेव च।
हृदयं चेति पञ्चैतत् पञ्चांग प्रोच्यते बुधैः॥

आराध्यदेव की गीता, सहस्रनाम, स्तोत्र, कवच और हृदय का समावेश है। कुछ मन्त्रों के पञ्चांग तो मिलते हैं, किन्तु बहुतों के नहीं मिलते, इस सम्बन्ध में कोई शंका न रखते हुए इतना ही पर्याप्त होगा कि जो भी साहित्य उपलब्ध हो, उसी का पाठ करें।

८. **आचार**—आचार से तात्पर्य है—आचरण। प्रत्येक कर्म में उसके अनुकूल आचरण भी आवश्यक है। यह प्रसिद्ध है कि—**'देवो भूत्वा देवं यजेत्'**—अर्थात् देव बनकर देव की पूजा करे। इसके अनुसार जिस मन्त्र का जप किया जाये उससे सम्बन्धित न्यास, ध्यान आदि पहले जान लें तथा सम्प्रदाय के अनुरूप प्रयोग करें। यदि इस विधि में मन-माना हेर-फेर किया जायेगा तो सफलता में विलम्ब, विघ्न अथवा विकार आयेगा। इसे हम आभ्यान्तर आचार कह सकते हैं। इसी तरह बाह्य आचारों का पालन भी हर प्रकार से आवश्यक है।

९. **धारण**—मन्त्र के वर्णों और पदों की शरीर के भिन्न-भिन्न अवयवों में धारण करना तथा विभिन्न न्यासों का विधान।

१०. **दिव्य-देशसेवन**—उत्तम वातावरण की सृष्टि के लिए उत्तम स्थान का होना अत्यावश्यक है। जिन स्थानों पर पूर्व महापुरुषों ने वर्षों तक साधना करके सिद्धियाँ प्राप्त की हों, जहाँ सदा पवित्र

वातावरण बना रहता हो तथा जहाँ देवताओं के प्रधान पीठ हों, ऐसे पुण्य क्षेत्रों में रहकर स्मरण करना, गंगा-स्नानादि से पवित्रता प्राप्त करना दिव्य देश सेवन में आता है।[1]

११. **प्राण-क्रिया**—शरीर के भिन्न-भिन्न भागों में प्राण को ले जाकर मन्त्राभ्यास करना तथा प्राणायाम द्वारा मन्त्र जप को बढ़ाना।

१२. **मुद्रा**—देवताओं का सन्निधान प्राप्त करने के लिए हाथ की अंगुलियों के योग से विभिन्न आकृतियों का निर्माण मुद्रा कही जाती हैं। यह विषय गुरुगम्य है और प्रत्येक देव के आयुध, आवाहनादि क्रिया एवं अन्यान्य जप के पूर्वांग और उत्तरांग के रूप में प्रयुक्त होती हैं। देवताओं को हर्ष तथा असुरों का विनाश करने से इसका नाम मुद्रा पड़ा है।[2]

१३. **तर्पण**—जलाञ्जलिपूर्वक मन्त्रोच्चारण से तर्पण सम्पन्न होता है। सन्ध्या के पश्चात् देव, ऋषि और मनुष्य तर्पण किया जाता है तथा प्रत्येक मन्त्र का पुरश्चरण जब किया जाता है तो उसमें जप का दशांश हवन और हवन का दशांश तर्पण शास्त्र विहित है। यह मन्त्र देव के प्रति श्रद्धा निवेदन की क्रिया है।

---

१. योगसंहिता में कहा गया है कि—

गोशाला वै गुरोर्गेहं, देवायतनकाननम्।
पुण्यक्षेत्रं नदीतीरं, सदा पूतं प्रकीर्तितम्॥

गोशाला, गुरु का घर, देव-मन्दिर, देववन, पुण्यक्षेत्र और नदी का किनारा ये सदा पवित्र कहे गये हैं।

तन्त्रसार का वचन है—

धात्री-बिल्वसमीपे च, पर्वताग्रे गुहासु च।
गंगायास्तु तटे वापि, कोटि-कोटि गुणं भवेत्॥

२. मुदं करोति देवानां द्रावय-त्यसुरांस्तथा।
मोदनाद् द्रावणाच्चैव, मुद्रेति परिकीर्तिता॥

१४. **हवन**—यव, तिल, चावल, घृत और शर्करा के मिश्रण से शाकल्य बनाकर उसके साथ घृत की अग्नि से आहुति देने की क्रिया को हवन अथवा होम कहते हैं। किसी विशिष्ट मन्त्र अथवा देव विशेष की जप-साधना में कुछ विशिष्ट हवनीय द्रव्य द्वारा भी यह कर्म किया जाता है।

१५. **बलि**—इसमें देवताओं के लिये नैवेद्य अर्पण किया जाता है। मन्त्र विशेष अथवा देवता विशेष के अनुरोध से कुछ विशिष्ट वस्तुओं का समर्पण भी इसमें होता है, किन्तु किसी प्रकार की हिंसा का इसमें कोई स्थान नहीं है।

१६. **याग**—इससे अन्तर्याग तथा बहिर्याग का प्रक्रिया का संकेत किया है। इसमें अन्तर्याग शरीर के विभिन्न अंगों में स्थित देवताओं को नमन करते हुए भावना की जाती है तथा बहिर्याग में न्यास एवं पूजादि का समावेश होता है।

१७. **जप**—मन्त्र का जप माला आदि के माध्यम से प्रसिद्ध है। इसका विशेष परिचय हम पृथक् प्रकरण में दे रहे हैं।

१८. **ध्यान**—इष्टदेव के स्वरूप का चिन्तन ध्यान कहलाता है। मन की एकाग्रता के लिए यह आवश्यक है।

१९. **समाधि**—ध्यान की सर्वोच्च कोटि, जिसमें ध्याता बेसुध होकर बाह्य ज्ञान से शून्य बन जाता है।

उपर्युक्त प्रक्रियाएँ विस्तृत तथा कुछ कठिन हैं। अतः आचार्यों ने इनमें से केवल पाँच अंगों पर विशेष ध्यान देने का संकेत किया है जिनमें आसन, मन्त्र पदों की धारणा, मन्त्र पदों की अर्थ भावना, सालम्बन ध्यान तथा निरालम्ब ध्यान आते हैं।

इस प्रकार मन्त्र-योग का आश्रय लेने से मुख्य ध्येय की सिद्धि और परमार्थ की प्राप्ति सुगम बन जाती है। साधक को चाहिये कि वह इनमें से जो सुलभ क्रियाएँ हैं उनका यथाशक्ति प्रयोग करे तथा अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होवे।

: ६ : मन्त्र और देवता

मायामय इस संसार में अनेक दुःखों से परितप्त प्राणियों का कल्याण करने की इच्छा से परमेश्वर ने मन्त्र-कलापों को प्रकाशित किया। ये मन्त्र वेद, उपनिषद्, स्मृति, इतिहास, पुराण, आगम और तन्त्र ग्रन्थों में सहस्त्रों की संख्या में प्राप्त होते हैं। जैसे-जैसे समय बीतता गया और हम दासता के पाश में जकड़ते गये, हमारी यह सम्पदा धीरे-धीरे विलुप्त होती गई और वेदादि मन्त्रों के प्रयोगों का विधान ओझल होता गया, तब कुछ कृपालु आचार्यों ने विभिन्न शास्त्रों से सार रूप में कुछ मन्त्रों और उनके प्रयोगों का संकलन किया। आज उन्हीं के आधार पर मन्त्र-विधान किये जाते हैं तथा अपने-अपने अभीष्ट की प्राप्ति की जाती है।

ऐसे मन्त्र, उनके भेद, उपासक भेद, उपासना के विभिन्न मार्ग एवं उनके फल पर यहाँ सामान्य विचार अनुपयुक्त होगा।

मन्त्र देवताओं से सम्बद्ध होते हैं और देवता अनन्त हैं, अतः मन्त्र भी अनन्त हैं तथापि यदि संक्षेप में विचार किया जाये तो इनके सात प्रकार निर्धारित होते हैं। इनमें मत देवता, आत्म-देवता, इष्ट देवता, कुल देवता, गृह देवता, ग्राम देवता और लोक देवता का समावेश किया जाता है।

मत देवता में—गणेश, सूर्य, शक्ति, शिव और विष्णु—इन पाँच देवताओं की उपासना की प्रचुरता होने से ही गाणपत्य, सौर, शाक्त, शैव और वैष्णव मतों का प्रचलन हुआ और इस परम्परा में दीक्षित होनेवाले लोग इन मतों के अनुसार ही मत देवता के मन्त्रों से

उपासना करते हैं।

आत्म देवता में उपर्युक्त पञ्च देवों के जो पूर्णावतार हुये और वे जिन-जिन नामों से प्रसिद्ध हुये उनके मन्त्र आत्म देवता-मन्त्र कहलाये तथा उस परम्परा में दीक्षित लोग उन मन्त्रों से आराधना करते हैं।

अपने अभीष्ट ऐहिक और पारलौकिक समस्त इष्ट लाभ की सिद्धि के लिये जिन देवताओं की उपासना की जाती है, वे **इष्टदेवता** और उनके जो मन्त्र हैं वे इष्टदेवता-मन्त्र कहलाते हैं। प्रायः ये देवता मतदेवता एवं आत्मदेवता के अवतार देवता हैं अथवा उनके आवरण देवता हैं। इनके तीन भेद हैं—गुरुदेव, रक्षादेव तथा अर्थसाधक देव। परलोक सम्बन्धी ज्ञान देने वाले गुरुदेव हैं, विपत्तियों से रक्षा करने वाले रक्षादेव हैं तथा शत्रुओं को दण्ड देने वाले एवं साधकों के अभीष्ट की पूर्ति करने वाले अर्थसाधक देव कहलाते हैं। इनके भी प्रत्येक के मन्त्र अलग-अलग हैं। उपासना से प्रसन्न होकर ये देवता अपने उपासकों के सभी सम्भावित क्लेशों को दूर करके गुरु रूप में तत्त्वज्ञान देकर मुक्ति मार्ग दिखलाते हैं, ऐसी आचार्यों की मान्यता है।

अपने कुल के सभी अनिष्टों का विनाश करने और योग-क्षेम आदि सर्वविध श्रेय की प्राप्ति के लिए पूर्वजों द्वारा परम्परा क्रम से आधारित देवता **कुल देवता** माने जाते हैं, यह सर्वविदित है। इन्हें प्रसन्न करने वाले मन्त्र कुलदेवता-मन्त्र कहे जाते हैं।

सभी प्रकार के पापों की निवृत्ति एवं सर्व मंगलों की प्राप्ति के लिए घरों में आवश्यक रूप में पूजे जाने वाले देवता **गृहदेवता** माने जाते हैं और इनके जो मन्त्र हैं वे गृहदेवता-मन्त्र कहलाते हैं।

गाँवों में आने वाली आपत्तियों—महामारी, चोर, अग्निदाह आदि बाधाओं से रक्षा के लिये ग्रामीण जनों द्वारा दोपाये और चौपायों की रक्षा के लिये चण्डी, काली, दुर्गा, भैरव, हनुमान आदि ग्राम देवताओं की जो पूजा की जाती है वे **ग्रामदेवता** हैं और

उनके मन्त्र ग्रामदेवता-मन्त्र।

ब्रह्मा, प्रजापति, इन्द्रादि लोकपाल, उनके अधिदेवता, नवग्रह, देवयोनिविशेष मरुद्‌गण आदि कर्मदेव तथा देवर्षि, महर्षि आदि लोकदेवता माने जाते हैं और उनके मन्त्र लोकदेवता-मन्त्र।

इस प्रकार उपर्युक्त देवताओं के मन्त्रों के प्रमुख दो स्वरूप हैं—वैदिक एवं तान्त्रिक। वैदिक मन्त्रों अथवा तान्त्रिक मन्त्रों की दीक्षा सद्-गुरुदेव की कृपा से प्राप्त कर उन्हें शास्त्रों में बतलाये हुए प्रकारों से पुरश्चरण, होम, तर्पण, मार्जनादि द्वारा सिद्ध किये जाने पर वे यथा समय इष्ट सिद्धि में सहायक होते हैं। मन्त्रों की सिद्धि में सबसे बड़ी सहायता मिलती है श्रद्धा और विश्वास से।

जिनका मन चञ्चल रहता है, जो बार-बार शंका करते हैं, गुरु द्वारा दिखाए मार्ग पर चलते समय विश्वास खो बैठते हैं और अपनी बुद्धि अथवा कुतर्कों से पद्धति में फेरफार करते रहते हैं उन्हें सिद्धि मिलना असम्भव है। इसलिए कहा गया है कि गुरु, मन्त्र और आत्मा का एकीभाव तथा भावना की दृढ़ता पर ही निग्रह और अनुग्रह रूप सिद्धि निर्भर है।

: ७ : मन्त्र-निर्णय और उसके उपाय

कोई साधक किस मन्त्र की साधना करे? यह भी एक समस्या है, किन्तु इनका समाधान करने के लिए पूर्वाचार्यों ने कुछ उपाय बतलाये हैं जो इस प्रकार हैं—

१. कुलाकुल-चक्र—

साधक जिस मन्त्र की साधना करना चाहता हो उसका तथा साधना करने वाले के नाम का पहला अक्षर दोनों यदि एक ही कुल

के हों तो यह मन्त्र निश्चित फल देने वाला होता है। मन्त्र ग्रौर उसके गृहीता की प्रकृति में समानता होने से निर्विघ्न सिद्धि मिलेगी, ऐसा शास्त्रों का वचन है।

यदि उपर्युक्त वर्णों में प्रकृति-साम्य न हो तो फिर प्रकृति-मैत्री देखनी चाहिए। इसे जानने के लिये कुलाकुल-चक्र के ग्रनुसार पृथ्वी ग्रादि पाँचों तत्त्वों में किन-किन तत्त्वों की किस-किस तत्त्व के साथ मित्रता है यह देख लेना चाहिए।

मन्त्र के साधक ग्रौर साध्य मन्त्र के ग्रक्षरों में यदि प्रकृति शत्रुता हो तो वैसे मन्त्र की साधना नहीं करनी चाहिए। क्योंकि वह स्वकुल से शत्रुता रखने के कारण सुफलदायक नहीं होता।

कुलाकुल-चक्र की रचना के लिए 'ग्र' से 'क्ष' तक के पचास वर्णों को **पृथ्वी, जल, ग्रग्नि, वायु** ग्रौर **ग्राकाश**—इन पाँचों तत्त्वों में बाँटा गया है तथा इन पाँचों तत्त्वों में पृथ्वी, जल ग्रादि तत्त्वों की ग्राकाश-तत्त्व के साथ मैत्री है ग्रौर वायु तत्त्व का पृथ्वी तत्त्व एवं ग्रग्नि तत्त्व के जल तत्त्व ग्रौर पृथ्वी तत्त्व शत्रु हैं।

एक हो कार्य के लिये जैसे ग्रनेक उपाय होते हैं ग्रौर जैसे एक ही रोग के लिये कई प्रकार की ग्रौषधियाँ होती हैं वैसे ही एक ही साधना के लिए ग्रनेक मन्त्र प्राप्त होते हैं। ग्रतः यह चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि मन्त्र-निर्णय कैसे होगा ?

इस चक्र का स्वरूप इस प्रकार है—

कुलाकुल-चक्र

तत्त्व	पृथ्वी	जल	ग्रग्नि	वायु	ग्राकाश
वर्ण	उ ऊ ग्रौ ग ज ड न ब ल छ	ऋ ॠ ग्रो घ झ ढ ध भ व स	इ ई ऐ ख छ ठ थ फ र क्ष	ग्र ग्रा ए क च ट त प य ष	ल लृ ग्रं ङ त्र ण न म श ह

तत्वमैत्रीचक्रम्

तत्व	पृथ्वी	जल	अग्नि	वायु	आकाश
मित्र	आकाश जल	आकाश पृथ्वी	आकाश वायु	आकाश अग्नि	अन्य चारों तत्व
शत्रु	वायु	अग्नि	जल	पृथ्वी	×

२. राशि-चक्र—

साधना करने वाला अपनी जन्म नाम राशि अथवा प्रचलित नाम राशि के अनुसार अपनी राशि और मन्त्र के प्रथमाक्षर की राशि की गणना करे तथा तदनुसार मन्त्र लेने का निर्णय करे। तदर्थ चक्र इस प्रकार है—

राशि-चक्र

मेष राशि	अ आ इ ई
वृषभ राशि	उ ऊ ऋ
मिथुन राशि	ॠ लृ ॡ
कर्क राशि	ए ऐ
सिंह राशि	ओ औ
कन्या राशि	अं अः श ष स ह ल क्ष
तुला राशि	क ख ग घ ङ
वृश्चिक राशि	च छ ज झ ञ
धनु राशि	ट ठ ड ढ ण
मकर राशि	त थ द ध न
कुम्भ राशि	प फ ब भ म
मीन राशि	य र ल व

इसमें अपने नाम के अक्षर से मन्त्राक्षर के कोष्ठक तक गिनें। यदि उसमें मन्त्राक्षर का कोष्ठक ४, ८ अथवा १२ संख्या में आता हो

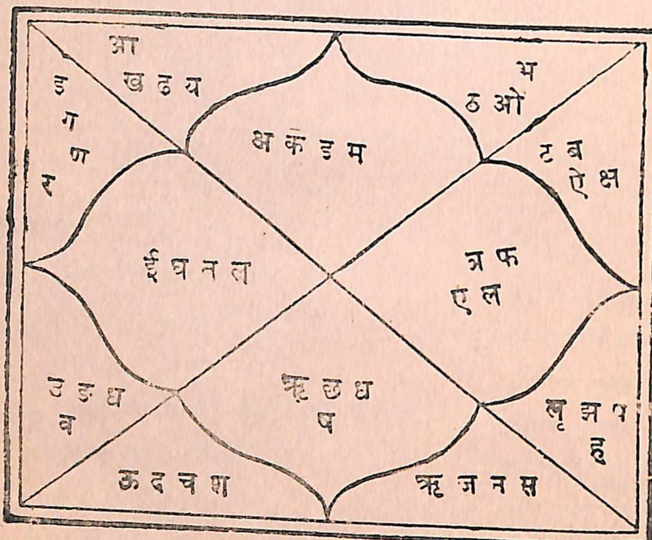
तो उसे छोड़ दें—१, ५ और ६ संख्या में आये तो वह सर्वोत्तम फलदाता होता है। २, ६ और १० राशि स्थित मन्त्राक्षर सिद्धिदाता एवं ३, ७, ११ संख्यावाले कोष्ठक में स्थित मन्त्राक्षर पुष्टिकर होते हैं।

इन बारह कोष्ठकों में क्रमशः तन, धन, भाई-बन्धु, मित्र पराक्रम, सन्तान, शत्रु, स्त्री, मृत्यु, धर्म, कर्म, आय और व्यय के आधार पर भी मन्त्र का चयन किया जा सकता है। जिस कोष्ठक में जो स्थान माना गया है उस मन्त्र के जप से वही सिद्धि प्राप्त होती है।

३. अकडम-चक्र

एक अन्य प्रकार से रचित चक्र से भी—सिद्धि, साध्य, सुसिद्ध और अरि—इन चार भावों का क्रमशः विचार करके मन्त्र ग्रहण का निर्णय करना चाहिये। चक्र इस प्रकार है—

अकडम-चक्र



उपासक के नामाक्षर से मन्त्र के अक्षर तक गणना करके यह जानकारी प्राप्त करें।

इसी प्रकार नक्षत्र-चक्र, योग, करण, तिथि, वार आदि का भी मन्त्रग्रहण के पूर्व विचार किया जाता है। किन्तु मन्त्रों की कोटि एवं शास्त्राज्ञा के अनुसार ही यह सम्पन्न होना चाहिये क्योंकि अनेक मन्त्र स्वयं सिद्ध होते हैं और कुछ मन्त्रों के बारे में ऐसे विचार की कोई अपेक्षा नहीं मानी गई है।

मन्त्रों के विभिन्न स्वरूप

मन्त्र का स्वरूपज्ञान प्राप्त करने के लिये उसके भेद अथवा प्रकारों का ज्ञान भी आवश्यक है। किसी भी वस्तु के प्रकार एकाधिक रूप में प्राप्त होने का कारण उसकी अपेक्षा-विशेष से उत्पन्न दृष्टि होता है। इस प्रकार की दृष्टियाँ अनेक होने से वस्तु के प्रकारों में भी अनेकता का होना स्वाभाविक है।

मन्त्र-व्याकरण में मन्त्र-समुदाय के दो प्रकार दिखाये गये हैं— **आग्नेय मन्त्र और सौम्य मन्त्र**। इनमें जो मन्त्र पृथ्वी, अग्नि और आकाश तत्त्व से युक्त होते हैं वे 'आग्नेय' कहलाते हैं तथा जल और वायु तत्त्व से युक्त होते हैं वे 'सौम्य' कहलाते हैं।

आग्नेय मन्त्रों के साथ नमः अन्त में लग जाने पर वे सौम्य बनते हैं और सौम्य मन्त्रों के साथ फट् अन्त में लग जाने पर वे आग्नेय बन जाते हैं। अन्य तन्त्रों में इन्हीं को सौर और सौम्य नाम से सम्बोधित किया है और वहीं स्पष्ट किया है कि सौर मन्त्र पुरुष-देवता के तथा सौम्य मन्त्र स्त्री-देवता के होते हैं। किन्तु यह सभी मन्त्रों के लिए निश्चित नियम न होकर एकान्तिक नियम कहा जा सकता है क्योंकि अनेक मन्त्र इसके अपवाद स्वरूप भी प्राप्त होते हैं।

आग्नेय अथवा सौर मन्त्र उग्र कर्म के लिए प्रशस्त माने गये हैं— अर्थात् मारण-उच्चाटन-विद्वेषण; जैसे कर्म के लिए उचित माने गये हैं। सौम्य मन्त्र शान्तिक कर्म के लिये उत्तम सिद्ध होते हैं।

कूट-मन्त्र और अकूट-मन्त्र

तन्त्रों में कहा गया है कि—

द्विविधो हि मन्त्रः कूटरूपोऽकूटरूपश्च ।
संयुक्तः कूट इति व्यवह्रियते, उत्तरोऽकूट इति ।।

अर्थात्—मन्त्र दो प्रकार के होते हैं—कूट और अकूट। जिस मन्त्र में अनेक वर्ण परस्पर संयुक्त हों वह **कूट मन्त्र** और जिसमें कूट के रूप में वर्ण संयोग न होकर सामान्य वर्ण-योजना हो, वह **अकूट मन्त्र** कहलाता है ।

कूट-मन्त्र

संस्कृत भाषा का व्याकरण विश्व की प्रायः सभी भाषाओं में महत्त्वपूर्ण है। इसमें स्वर और व्यंजन के स्थान और प्रयत्न की पूर्ण व्यवस्था है। प्रत्येक वर्ण अपने विशिष्ट अर्थ को लिए हुए है और कोशकारों ने एकाक्षरी कोश द्वारा वर्णों के अर्थों का संकलन भी कर दिया है। ऐसे सार्थक वर्णों का जब एक-दूसरे वर्ण के साथ संयोग होता है तो उसका कोई नवीन अर्थ निकल आता है ।

ऐसे एक अथवा एक से अधिक वर्णों के मिश्रण से बने हुए मन्त्र कूट-मन्त्र कहलाते हैं। यह पद्धति ॐ मन्त्र के द्वारा सरलता से समझी जा सकती है। अ+उ+म् इन तीन वर्णों के योग से ओम् बना है जिसे लिपि की दृष्टि से यन्त्र अथवा मूर्ति का आकार देकर ॐ बना दिया है। इसमें अकार विष्णु के अर्थ को, उकार ब्रह्मा के अर्थ को तथा मकार शिव के अर्थ को बतलाता है—अर्थात् इस एक कूटवर्ण से विष्णु, ब्रह्मा और शिव रूप तीनों देवों का बोध होता है। अतः इसे कूट-मन्त्र कहते हैं।[1]

---

१. अंग्रेजी में न्यूज शब्द भी ऐसे ही बना है। वहाँ N से नार्थ=उत्तर, E से ईस्ट=पूर्व, W से वेस्ट=पश्चिम और S से साउथ=दक्षिण का संकेत लेकर चारों दिशाओं के समाचार 'न्यूज' कहलाने लगे ।

व्याकरण द्वारा दिखाये गये उच्चारण-स्थानों के आधार पर जो ध्वनि उटती है वह भी ॐ के आकार में ही उठती है। इसीलिये पातञ्जल योग सूत्र में 'तस्य वाचकः प्रणवः'—उस ईश्वर का वाचक प्रणव ओङ्कार है यह कहकर इसको ईश्वर का मन्त्र कहा है।

ये कूटमन्त्र वर्ण-शक्ति से परिपूर्ण होते हैं और परस्पर वर्णों के मिश्रण से एक विशिष्ट शक्ति के साधक भी। अतः वर्ण शक्ति का सामान्य परिचय भी यहाँ आवश्यक है।

वर्ण-शक्ति

महाकवि दण्डी ने एक स्थान पर कहा है कि—

इदमन्धं तमः कृत्स्नं, जायेत भुवन-त्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारान्न दीप्यते॥

ये तीनों लोक पूर्ण रूप से अंधकार रूप ही बन जाएँ। यदि शब्द-रूपी ज्योति सृष्टि के आरम्भ से ही प्रकाशमान न हो—अर्थात् शब्द-रूपी दीपक का प्रकाश न हो तो फिर विश्व में प्रकाश न होकर अँधेरा ही अँधेरा रहे। अतः शब्द एक अजर-अमर प्रकाश पुंज है। इसीलिये शास्त्रों में शब्द ब्रह्म की आराधना का निर्देश है। विज्ञान ने भी अनेक प्रकार के प्रयोगों द्वारा परीक्षण करके शब्दतत्त्व की महत्ता को स्वीकार किया है।

शब्दों की रचना कुछ वर्णों की योजना पर निर्भर है। जब यह वर्ण-योजना वैज्ञानिक पद्धति से की जाती है तो वे शब्द मन्त्र की संज्ञा प्राप्त करते हैं। भारतीय वर्णमाला में अपूर्व शक्ति का स्रोत भरा हुआ है। मन्त्र शास्त्रों ने वर्णों की पृथक्-पृथक् शक्ति का पर्याप्त विस्तार से वर्णन किया है। '**वर्णोद्धार तन्त्र**' में प्रत्येक वर्ण की आकृति, देवता, जाति, रंग, जलादि मण्डल में स्थिति, उच्चारण स्थान, गति, सिद्धि काल, कर्म कर्तृत्व-शक्ति, सिद्धि की तिथियां, वार, नक्षत्र, योग, करण-विचार, शत्रुता और मित्रता, अवस्था आदि अनेक बातों का उल्लेख किया है जिसके आधार पर शब्द-योजना में

आये हुए वर्णों का विचार किये जाने पर वैज्ञानिक-पद्धति का पूरा ज्ञान हो जाता है।

मन्त्र-व्याकरण—लौकिक व्याकरण के अतिरिक्त अपने विषय की ऐसी अनेक बातों का उल्लेख करते हैं जो हमारे लिये सब तरह से नवीन और आश्चर्यपूर्ण होती हैं। उदाहरण के लिये नागरी वर्णमाला के प्रत्येक वर्ण की शक्ति का संक्षिप्त मन्त्र-शास्त्रीय-परिचय इस प्रकार है—

अ—मृत्युनाशक, (वासुदेव स्वरूप, स्वर, कण्ठ स्थानीय, ह्रस्वाक्षर)।

आ—आकर्षण करनेवाला। स्त्रीलिंगी, दीर्घस्वर।

इ—पुष्टि करनेवाला। नपुंसकलिंगी, ह्रस्व स्वर।

ई—आकर्षण करने वाला।

उ—बल देने वाला।

ऊ—उच्चाटन करने वाला है। (किसी व्यक्ति अथवा वस्तु को उसके स्थान से विचलित कर देना उच्चाटन कहलाता है।

ऋ—क्षोभण अथवा स्तम्भन करने वाला।

ॠ—मोहन करने वाला।

ऌ—विद्वेषण। (परस्पर द्वेष फैलाने के लिए इस बीज का जप किया जाता है।

ॡ—उच्चाटन करने वाला।

ए—वश्य करने वाला। (किसी व्यक्ति को अपने अनुकूल बनाना वश्य—वशीकरण कहलाता है।)

ऐ—पुरुषवश्य कारक।

ओ—लोकवश्य कारक।

औ—राजवश्य कारक।

अं—हाथी आदि वन्य जीवों को वश में करने के लिये इस बीज का जप करना चाहिए।

अः—मृत्यु-नाशक ।

क—विषबीज है ।

ख—स्तम्भन बीज है ।

ग—गणपतिबीज है ।

घ—स्तम्भनबीज है । तन्त्रशास्त्रों में इसी अक्षर को मारण तथा ग्रहण बीज भी कहा है ।

ङ—असुरबीज ।

च—चन्द्रबीज । यही अन्य ग्रन्थों में सुरबीज भी कहा गया है ।

छ—लाभबीज तथा मृत्यु नाशक ।

ज—ब्रह्मराक्षस बीज ।

झ—चन्द्रबीज तथा धर्मार्थ काम और मोक्षप्रद है ।

ञ—मोहनबीज ।

ट—क्षोभणबीज है तथा चित्त को चंचल बनाता है ।

ठ—चन्द्रबीज है और विष तथा अपमृत्यु का नाशक है ।

ड—गरुड़ का बीज मन्त्र है ।

ढ—कुबेर का बीज है । उत्तर दिशा में मुख रखकर चार लाख जप करने से धन-धान्य वृद्धि करता है ।

ण—असुरबीज है ।

त—आठ वस्तुओं का बीज है ।

थ—यमबीज है । मृत्यु के भय को मिटाता है ।

द—दुर्गाबीज है तथा वश्य एवं पुष्टि के लिये उत्तम है ।

ध—सूर्यबीज है, यश और सुख की वृद्धि के लिये जप करना उत्तम है ।

न—ज्वर, एकान्तर, तिजारी आदि को दूर करने के लिये जप करना चाहिये ।

प—वीरभद्र और वरुण का बीज माना गया है ।

फ—विष्णुबीज है और धन-धान्य को बढ़ाने वाला है ।

ब—ब्रह्मबीज है। वात, पित्त तथा श्लेष्म को नाश करता है।

भ—भद्रकाली की उपासना में इस बीज का जप किया जाता है। भूत, प्रेत तथा पिशाचों के कष्ट से छूटने के लिये उपयोगी है।

म—माला, अग्नि और रुद्र का बीज है। स्तम्भन तथा मोहन-कर्म के लिये उपयोगी है। अष्ट महासिद्धि देने वाला है।

य—वायुबीज तथा उच्चाटन कारक है।

र—अग्निबीज तथा उग्र कर्मों की सिद्धि देने वाला है।

ल—इन्द्रबीज है। धन-धान्य तथा सम्पत्ति बढ़ाता है।

व—वरुणबीज है। विष तथा मृत्यु का नाशक है।

श—लक्ष्मीबीज है। एक लाख जप करने से लक्ष्मी प्राप्ति होती है।

ष—सूर्यबीज है तथा धर्म, अर्थ, काम और मुक्ति देने वाला है।

स—वाणीबीज है। ज्ञान सिद्धि और वाक्-सिद्धि देने वाला है।

ह—आकाश एवं शिव बीज माना गया है।

क्ष—पृथ्वीबीज है। इसी को नृसिंह तथा भैरव का बीज भी माना गया है।

ऊपर दिखाये गये किसी भी अक्षर का जप करना हो तो उस पर अनुनासिक ँ चन्द्रबिन्दु लगाकर तथा ह्रीँ बीज का सम्पुट अर्थात् पहले और अन्त में जोड़कर जप करना चाहिए। वैसे तन्त्र-ग्रन्थों में प्रत्येक वर्ण का ध्यान भी प्राप्त होता है। जैसे—

अ-कारं वृत्तासनं गजवाहनं हेमवर्णं कुङ्कुमगन्धं लवणस्वादुं जम्बूद्वीप-विस्तीर्णं चतुर्मुखमष्टबाहुं कृष्णलोचनं जटा-मुकुटधारिणं सितवर्णं मौक्तिकाभरणमतीव बलिनं गम्भीरं पुंल्लिगं ध्यायामि।

अर्थात्—"गोलाकार आसन पर विराजमान, हाथी के वाहन वाले, सुनहरे वर्णवाले कुंकुम केशर की गन्ध से युक्त, लवण जैसे स्वादु, जम्बूद्वीप के समान विस्तृत, चार मुख, आठ भुजा, काले नेत्र, जटा एवं मुकुट से मण्डित, श्वेतवर्ण, मोतियों के आभूषण वाले, अत्यन्त बलवान्, गम्भीर तथा पुँल्लिग ऐसे लक्षण वाले अकार का मैं, ध्यान

करता हूँ।"

इस वर्णमाला क अतिरिक्त हजारों ऐसे बीज-मन्त्र हैं जो दो-दो अक्षरों अथवा अनेक अक्षरों के परस्पर मेल से बने हुए हैं। इन बीजों की संज्ञा-पहचान तन्त्रशास्त्र में अनेकरूपों में निश्चित है जिनका परिचय स्वाध्याय तथा गुरुपरम्परा से प्राप्त हो सकता है। श्लोकों में जहाँ किसी बीज के जपकी सूचना की गई है तो वहऐसे ही निश्चित संकेतों से की गई है जिससे मन्त्र की गुप्तता भी रह सके और जानकार लाभ उठा सकें।

केवल वर्णमाला के अक्षरों का पुरश्चरण करके नित्य जप करते रहने से भी सभी कार्य सिद्ध होते हैं तथा मन्त्र अथवा बीज मन्त्र का सम्पुटात्मक जप भी शीघ्र सिद्ध होता है। सम्पूर्ण वर्णमाला का भी जप किया जाता है।

बीजमन्त्र-विचार

जिस प्रकार बीज में सूक्ष्म रूप से वृक्ष छिपा हुआ रहता है, किन्तु वह दिखाई नहीं देता, फिर भी उचित क्षेत्र, वातावरण, जल एवं खाद आदि से सम्पर्क होने पर वह क्रमशः अंकुर, पत्र पुष्प और फलादि से युक्त एक महान् वृक्ष बन जाता है, उसी प्रकार बीजाक्षरों में सूक्ष्म रूप से शक्ति छिपी हुई रहती है। ऐसे बीजाक्षर अनेक हैं जोकि मन्त्र-विज्ञान के एक महत्त्वपूर्ण भाग हैं।

जिस प्रकार रासायनिक द्रव्यों की अपनी-अपनी विशिष्ट शक्ति होती है और परस्पर-मिश्रण नवीन शक्ति को उत्पन्न करता है उसी प्रकार बीजाक्षरों की स्वतन्त्र शक्ति और उनके मिश्रण से उत्पन्न विशिष्ट शक्ति जप-ध्यान और अनुष्ठानादि से प्राप्त होती है।

शास्त्रों में वर्णन मिलता है कि सर्वप्रथम जब ईश्वर की इच्छा से समष्टि—मिली-जुली प्रकृति का पहला स्पन्दन हुआ तो उससे ॐकार उत्पत्ति हुई और दूसरी बार प्रकृति का व्यष्टि—एकांग रूप में स्पन्दन हुआ तो क्रमशः पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार से आठ बीजों की उत्पत्ति हुई।

बीजमन्त्रास्त्रयः पूर्वं ततोऽष्टौ परिकीर्तिताः ।
गुरुबीजं शक्तिबीजं रमाबीजं ततो भवेत् ॥
कामबीजं योगबीजं तेजोबीजमथापरम् ।
शान्तिबीजं च रक्षा च प्रोक्ता चैषां प्रधानता ॥

अर्थात्—"सर्वप्रथम तीन बीज मन्त्र अ, उ और म् उत्पन्न हुए। तदनन्तर गुरुबीज, शक्तिबीज, रमाबीज, कामबीज, योगबीज, तेजोबीज, शान्तिबीज तथा रक्षाबीज—ये आठ बीज उत्पन्न हुए जोकि बीजमन्त्रों में प्रधान कहे गए हैं।"

इस दृष्टि से आ+ए+म्=ऐं से गुरुबीज ह+र्+ई+म्=ह्रीं से शक्तिबीज, श्+र्+ई+म्=श्रीं से रमाबीज, क्+ल्+ई+म्=क्लीं से शक्ति बीज, क्+र्+ई+म्=क्रीं से योगबीज, ट्+र्+ई+म्=ट्रीं से तेजोबीज, स्+त्+र्+ई+म्=स्त्रीं से शान्तिबीज तथा ह्+ल्+र्+ई+म्=हलरीं से रक्षाबीज का अनुभव होता है।

योगशास्त्र में कहा गया है कि शब्दब्रह्म की ये आठ प्रकृतियां हैं और उपासना में कल्याणकारी इन्हीं बीजों का सर्वत्र विस्तार है। जब प्रकृति सत्त्व, रज और तम रूप तीन गुणों में व्याप्त होकर अनेक रूपों में प्रकट हुई तो शब्द राज्य में उसी क्रम से प्रकृति के अनेक रूप नाना शब्दों के रूप में प्रकट हुए। ये ही शब्द जब प्रथम अवस्था में रहे तो बीजमन्त्र हुए और जब अन्य परिणामों से सम्बद्ध हुए तो मन्त्र बने।

सभी बीजमन्त्र ईश्वर के मन्त्र

हम ऊपर कह आये कि ॐकार ईश्वर का मन्त्र है। इसलिए प्रकृति के प्रथम स्पन्दन से उत्पन्न ॐकार जब ईश्वर का मन्त्र है तो उसी प्रकृति के अन्य आठ स्पन्दनों से बने गुरुबीज मन्त्रादि तथा अन्य परिणासों से उत्पन्न अन्य मन्त्र भो देवस्वरूप ही हैं। साथ ही यह

भी सरलता से समझा जा सकता है कि जिस प्रकार ब्रह्माण्ड प्रकृति के पहले स्पन्दन से उत्पन्न शब्द ॐकार के साथ ब्रह्माण्ड के नायक ईश्वर का अधिदैव सम्बन्ध होने से ॐकार उनका मन्त्र है, उसी प्रकार प्रकृति के जिस विभाग के कम्पन से जो मन्त्र उत्पन्न हुए वे उस विभाग के अधिष्ठाता देव या देवी के साथ उस मन्त्र का अधिदैव सम्बन्ध रहने से उस देवता अथवा देवी के साधन के लिए सिद्ध मन्त्र बन गये। अतः साधक को चाहिए कि किसी भी बीज मन्त्र को देवस्वरूप ही माने।

अनेकता में एकता

मन्त्रों की इस प्रकार अनन्तता देखकर चिन्तित नहीं होना चाहिए और यह भी नही सोचना चाहिए कि इनमें से कौन-सा मंत्र उत्तम है और कौन-सा सामान्य ? मन्त्र सभी उत्तम ही हैं तथा कल्याण करने वाले हैं। इस सम्बन्ध में एक दृष्टान्त स्मरण रखना चाहिए।

एक बार एक सज्जन ने अपने घर एक स्वामीजी को आमन्त्रित किया। उनके आने पर स्वागत-सत्कार करके उनसे प्रार्थना की कि—"महाराज ! कृपा करके मुझे कोई ऐसा मन्त्र दीजिए जो सब तरह के कार्यों को सिद्ध करके भगवत् प्राप्ति कराये।"

स्वामीजी ने कृपा करके कहा कि—"तुम 'सोऽहं' मन्त्र का जप करो।" वह सज्जन श्रद्धापूर्वक जप करने लगा। कुछ समय के बाद एक अन्य स्वामीजी आये और प्रसंगवश पूछा कि—"कुछ भजन-स्मरण करते हो ?" सज्जन ने उत्तर दिया—"हाँ, एक स्वामीजी ने **'सोऽहं'** मन्त्र दिया था उसी का जप करता हूँ।"

स्वामीजी ने कुछ उपेक्षापूर्वक कहा—"ठीक है।" यह देखकर भक्त ने कहा—"महाराज ! यदि आप इसमें कुछ और विशेष बताना चाहें तो बतायें।" महाराज ने कहा—"इसके पहले 'दा' अक्षर जोड़ दें

तो यह मन्त्र उत्तम हो जाएगा।" भक्त ने वैसा ही किया और **'दासोऽहं'** मन्त्र का जप करने लगा।

कुछ दिनों के बाद पहले वाले स्वामीजी पुनः आये और पूछने पर भक्त ने वह अक्षर बढ़ाने की बात कही तो उन्होंने कहा—"ठीक है, पर इसके पहले **'स'** जोड़ने से यह मन्त्र और अच्छा हो जाएगा।" इस प्रकार **'सदा सोऽहम्'** मन्त्र का वह जप करने लगा।

पुनः वे दूसरे स्वामी जी आये और यह मन्त्र सुनकर बोले—"कि इसके पहले 'दा' और जोड़ दो तब ठीक रहेगा।" तब वह **'दासदासोऽहम्'** का जप करने लगा।"

तात्पर्य यह कि इस प्रकार अपनी-अपनी श्रद्धा और अनुभव के आधार पर दोनों ही स्वामियों ने भक्त के कल्याण के लिए मन्त्राक्षरों में वृद्धि की और उसमें कुछ सम्प्रदायगत आग्रह के रहते हुए भी मन्त्र में किसी प्रकार का विकार नहीं आने दिया। इसी तरह शास्त्रों में मन्त्रों की जो अधिकता है वह लोक-कल्याण के लिये ही है।

जिस आचार्य ने जिस प्रकार के मन्त्र की साधना से लाभ प्राप्त किया, उसका उल्लेख उसने किया। अब हमें कौन-सा मन्त्र चुनना है? यह निर्णय करने के लिये किसी गुरु का आश्रय लीजिए। अपनी कुल परम्परा को देखिये और अपनी श्रद्धा को परखिये।

कई बार साधना के इच्छुक अपने कुलमार्ग को छोड़कर अन्य सम्प्रदाय के मन्त्रों को अधिक उत्तम मानकर उनकी साधना करने लगते हैं, किन्तु यह उचित नहीं है। गीता में भगवान् कृष्ण ने स्पष्ट कहा है कि—

श्रेयान स्वधर्मो विगुणः परधर्मो भयावहः।

अर्थात्—"अपना धर्म यदि गुण-रहित हो तब भी वह कल्याणकारी है और दूसरों का धर्म गुणवान् होने पर भी भयकारक है।"

जैसे एक मशीन का पुर्जा अन्य प्रकार की मशीन में फिट करने पर कार्य नहीं करता, अपितु नुकसान ही पहुँचाता है उसी प्रकार हमारी

रक्त-परम्परा, घर का वातावरण और मर्यादा के अनुकूल मन्त्र ही शीघ्र लाभदायक होते हैं, अन्य नहीं। इसीलिए दीक्षा का विधान है। दीक्षित होने से साधक उस मन्त्र का अधिकारी हो जाता है तथा उसकी दृढ़निष्ठा बढ़ती रहती है जिससे उसके सभी कार्य सरलता से सम्पन्न होते रहते हैं।

अकूट-मन्त्र और उनके प्रकार

हमने कूट मन्त्रों में वर्ण, बीज और उनके सम्मिलित स्वरूप से बने हुए मन्त्रों का परिचय प्राप्त किया। इसी परम्परा का दूसरा अंश है अकूट-मन्त्र। अकूट का अर्थ बताया जा चुका है कि—सामान्य वर्ण योजना वाले वर्ण-समुदाय को अकूटमन्त्र कहते हैं। किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं है कि कोई भी वर्ण योजना मन्त्र है, अपितु जिसमें एक निश्चित दृष्टि और उद्देश्य से वर्ण योजना हुई हो और जिसका मनन-जप निश्चित लक्ष्य की पूर्ति में सहायक हो वही मन्त्र है।

ऐसे वर्ण-समुदाय से बने हुए मन्त्र वैदिक संहिताओं से गृहीत होने पर **'वैदिक-मन्त्र'** कहलाते हैं। तन्त्रों में शिव-पार्वती के संवाद में प्रश्न के उत्तर में प्राप्त अथवा कहे जाने के कारण **'तान्त्रिक-मन्त्र'** कहे जाते हैं। इसी प्रकार भैरवादि देवों के पूछने मन्त्र पर उत्तर में कहे गये मन्त्र भी **'तान्त्रिक'** ही हैं। पुराणों के आख्यानों में देवताओं द्वारा उपदिष्ट मन्त्र, विशिष्ट उपासकों द्वारा उपासना अथवा स्तुति में प्रयुक्त मन्त्र, **'पौराणिक-मन्त्र'** माने जाते हैं और देवताओं के नाम, कर्म के साथ उनके बीजमन्त्र का संयोग करके बनाये हुए मन्त्र **'स्वतन्त्र मन्त्र'** कहे जाते हैं।

बहुधा शास्त्रों में देखा जाता है गुरु अथवा देवता की प्रार्थना करने पर वे स्वयं मन्त्र का उपदेश करते हैं। साथ ही उसके जप-हवनादि का संकेत भी करते हैं। यहां तक कि देवता उसमें अपनी शक्ति का समावेश करने का भी सूचन करते हैं।

'प्रयोगसार-तन्त्र' में मन्त्रों के भेद बतलाते हुए कहा गया है कि—

बहुवर्णास्तु ये मन्त्रा मालामन्त्रास्तु ते स्मृताः ।
नवाक्षरान्ता ये मन्त्रा बीजमन्त्राः प्रकीर्तिताः ॥
पुर्नविंशति-वर्णान्ता मन्त्रा मन्त्रास्तुथोदिताः ।
ततोऽधिकाक्षरा मन्त्रा मालामन्त्रा इति स्मृताः ॥

अर्थात्—"अनेक अक्षरों वाले जो मन्त्र हैं वे **'मालामन्त्र'** कहे जाते हैं। नौ अक्षर तक के जो मन्त्र हैं वे **'बीजमन्त्र'** हैं। बीस अक्षरों तक मन्त्र **'मन्त्र'** कहलाते हैं और इनसे अधिक अक्षर वाले मन्त्र **'माला-मन्त्र'** कहलाते हैं।"

'कहीं-कहीं स्तोत्रों को भी मालामन्त्र कहा गया है। गणपति-स्तोत्र मालामन्त्र आठ पद्य का मिलता है तो दुर्गासप्तशती के सात-सौ पद्यों के संग्रह को भी स्तोत्रमालामंत्र बताया गया है।

कुछ मंत्रों में कर्तव्य कर्म का स्पष्ट उल्लेख रहता है तो कुछ में नमस्कार, प्रार्थना, रक्षा, सिद्धि का निर्देश आदि रहते हैं—**मन्त्रो देवाधिष्ठितोऽसावक्षररचनाविशेषः**—इस कथन के अनुसार देवता से अधिष्ठित एक विशेष प्रकार की अक्षर रचना ही मंत्र है। सच तो यह है कि मंत्र को मंत्र मानकर ग्रहण करने से ही उसमें मंत्रत्व आता है। आयुर्वेद ग्रंथ में कहा गया है कि—

इदमागमसिद्धत्वात् प्रत्यक्षफलदर्शनात् ।
मन्त्रवत् सम्प्रयोक्तव्यं न मीमांस्यं कथञ्चन ॥

अर्थात् यह आगमसिद्ध होने से और प्रत्यक्ष फल देखे जाने से मंत्र के समान प्रयोग में लाना चाहिए तथा इसकी मीमांसा-तर्क-वितर्क कभी नहीं करनी चाहिए।

उपर्युक्त मंत्रों के कुछ विद्वान अन्य दृष्टि से तीन भेद करते हैं—**'सिद्ध-मन्त्र'** **'साधारण मन्त्र'** और **'निर्बीज मन्त्र'**। सिद्ध मंत्रों में एक विशिष्ट शक्ति रहती है जो सिद्ध पुरुषों की चेतनशक्ति को शब्दों के आश्रय से अन्य मनुष्यों पर अपना तात्कालिक प्रभाव दिखाते हैं।

इस कोटि के मंत्र बड़े सौभाग्य से प्राप्त होते हैं। यदा-कदा जिन महानुभावों की कुण्डलिनी शक्ति जागृत हो जाती है उन्हे उसी महाशक्ति की कृपा से सिद्ध-मंत्र प्राप्त हो जाते हैं। हठयोग से कुण्डलिनी शक्ति जागृत होने पर मंत्रयोग का प्रस्फुटन होता है। मंत्र के बल से मन एकाग्र हो जाता है तथा वृत्तियों का विरोध हो कर लय होने लगता है। इस प्रकार हठयोग से मंत्र और मंत्र से लय तथा लय से राजयोग की प्राप्ति होती है।

सिद्धमंत्र की प्राप्ति सिद्ध गुरु के द्वारा भी प्राप्त होती है। ऐसे मंत्रों को जप द्वारा सिद्ध करने की भी आवश्यकता नहीं रहती।

द्वितीय श्रेणी के मंत्र प्रसिद्ध हैं जिन्हें जप द्वारा सिद्ध करने पर कार्य-सिद्ध होती है। श्री चैतन्यमहाप्रभु, श्रीरामानन्द जी आदि के द्वारा 'हरि' और 'राम' मंत्र देकर हो जो लोकोपकार किया गया है वह किसी से छिपा नहीं है।

तृतीय श्रेणी के मंत्र पुस्तकों के द्वारा गृहीत होते हैं जिनमें गुरु के तप का अभाव रहता है; अतः वे निर्बीज—निर्बल कहे गये हैं।

सात्विक, राजसिक और तामसिक भेद से भी मंत्रों के तीन प्रकार माने गये हैं—इनमें सात्विक मंत्र आत्मशुद्धि में उपकारक हैं; राजसिक मंत्र यश, ऐश्वर्य तथा भोगादि इच्छित वस्तु प्रदान करते हैं तथा तामसिक मंत्र मारण, उच्चाटन आदि से शत्रुओं का संहार करते हैं।

इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर मंत्रों के पाँच भेद किये जाते हैं—**'नैगमिक, आगमिक, पौराणिक, शाबर तथा प्रकीर्ण'**। इनमें प्रारम्भिक तीन का वर्णन हम कर चुके हैं चौथे प्रकार का विचार स्वतंत्र रूप से आगे किया जा रहा है तथा प्रकीर्ण भेद में जैन, बौद्ध, इस्लाम आदि धर्मों के मंत्रों का ग्रहण होता है।

शाबर-मंत्र-परिचय

वेद, पुराण,स्मृति एवं तंत्रशास्त्रों में अनेकविध मंत्रों का निर्देश हुआ है। कुछ मंत्रों का संकेत उत्तर काल के आचार्यों ने अपने अनुभव के आधार पर भी किया है जबकि कुछ मंत्र नितांत बोलचाल और व्यवहार की भाषा में बने हुए भी प्राप्त होते हैं। ऐसे मंत्र शाबर-मंत्र के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनकी रचना-पद्धति से ज्ञात होता है कि इनमें आराध्य देव की कहीं सौगंध दिलाई जाती है कि यह कार्य करो, कहीं प्रधान देव का आदेश है' ऐसा स्मरण कराया जाता है, कहीं उनके चरित्र विशेष का वर्णन करके रोग को दूर होने की आज्ञा दी जाती है तो कहीं देव-विशेष की आन बंधवाई जाती है ऐसा लगता है कि मंत्र में सूचित कार्य को करने के लिए साधक एक प्रकार की हठ लिये हुए है और वह अपनी साधना-शक्ति से उस कार्य को सम्पन्न कराने में उस सामर्थ्य का उपयोग कर रहा है। मंत्रों की भाषा देश-विशेष या स्थान-विशेष के आधार पर देश्य शब्दों के मिश्रण से जहाँ मनोरंजक बनती है वहां वह एक गवेषणा का विषय भी बन जाती है।

सामान्य देवों के द्वारा लौकिक सामान्य कार्यों की सिद्धि एवं छोटे-छोटे रोगादि की निवृत्ति के लिए शाबर-मंत्रों का प्रयोग बहुत ही अधिक किया जाता है और इनके प्रयोगकर्त्ता भी बहुधा स्नान-संध्याशील अथवा सुपठित न होकर सामान्य जन-जीवन में रहने वाले होते हैं। कहीं-कहीं तो कुछ मंत्रों की शब्द-रचना अश्लील अथवा निरर्थक वर्ण-योजना से विचित्र भी होती है जिन्हें देख या सुनकर संशय होता है कि ये मंत्र कैसे फल देते होंगे जबकि इनकी साधना में कोई विशिष्ट अनुष्ठान हवनादि की भी अपेक्षा नहीं रहती ?

हनुमानजी की हाक, लक्ष्मणकुमार की आन, गुरु की भक्ति, मेरी शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा, आदि वाक्य प्रायः प्रत्येक मंत्र

मिलते हैं। कहीं-कहीं गुरु गोरखनाथ और मच्छन्दरनाथ (मत्स्येन्द्र-नाथ) का भी स्मरण है तथा कहा जाता है कि इन मन्त्रों में इन तपस्वियों ने शक्ति स्थापना की है, किंतु वस्तु-स्थिति की वास्तविकता कुछ और ही प्रतीत होती है और वह है श्रद्धा तथा उचित विधान।

ऐसे अनेक दृष्टान्त मिलते हैं कि जिनमें योग्य महापुरुष द्वारा कुछ भी लिख देने से अथवा बतला देने से उनके प्रति अगाध श्रद्धा और उचित विधि का आश्रय लेने पर वे सिद्ध-मन्त्र बन गये हैं। इनके लिए हम बालमीकि, एकलव्य और कबीर की घटना तथा उनकी साधना-दृष्टि का मनन करें तो यह बात समझ में आ जाती है।

शाबर-मन्त्र की उत्पत्ति के बारे में पौराणिक दृष्टि से और तन्त्रों से ज्ञात होता है कि 'भगवान् शिव और पार्वती ने जिस समय अर्जुन के साथ किरात-वेश में युद्ध किया था उस समय आगम-चर्चा में पार्वतीजी के प्रश्नों के जो उत्तर शिवजी ने दिये थे वे ही भिल्ल-प्रदत्त-मन्त्र शाबर-मन्त्र कहलाते हैं।'

विद्वानों ने इस सम्बन्ध में कुछ अन्य विचार भी प्रस्तुत किये हैं जिनमें कहा गया है कि—प्रत्येक मन्त्र में उसके शब्दों में शक्ति-प्रदान किया जाता है। अतः तान्त्रिक मन्त्रों में शिव ने शक्ति-प्रदान की, वेदमन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्तिमान् बनाया। इसी प्रकार कलियुग में इन मन्त्रों में श्रीमत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य और श्रीगोरखनाथ जी के गुरुभाई श्रीशाबरजी ने भी शक्तिप्रदान की है। श्रीशाबरनाथ जी ने लोक-कल्याण के लिए कुछ लोकभाषा के मन्त्र बनाये। वे ही शाबरी-मन्त्र कहलाते हैं।

तन्त्र ग्रन्थों में शाबर-मन्त्रों की सिद्धि देने वाले आचार्यों के नाम इस प्रकार मिलते हैं—

नागार्जुनो जडभरतो हरिश्चन्द्रस्तृतीयकः।
सत्यनाथो भीमनाथो गोरक्षश्चर्पटस्तथा॥

अवघटश्च वैरागी कन्थाधारिजलंधरौ ।
मार्गप्रवर्तका एते तद्वच्च मलयार्जुनः ॥
एते प्रोक्ताः शाबराणां मन्त्राणां सिद्धिदायकाः ॥

अर्थात्—"नागार्जुन, जडभरत, हरिश्चन्द्र, सत्यनाथ, भीमनाथ, गोरक्षनाथ, चर्पटनाथ, अवघटनाथ, कन्याधारी, जलन्धरनाथ और मलयार्जुनाथ ये शाबर-मार्ग के प्रवर्तक तथा इन मन्त्रों के सिद्धि-दाता कहे गए हैं ।"

सम्भवतः अन्य योगियों ने भी ऐसे मन्त्रों की रचना की होगी क्योंकि मुसलमान फकीरों के बनाये हुए भी ऐसे मन्त्र मिलते हैं जो उनका उपयोग करके लौकिक कार्यों की सिद्धि करते हैं ।

गोरखनाथ आदि आचार्यों ने ऐसे मन्त्रों की रचना और उनके प्रचार में जो प्रवृत्ति दिखलाई उसका मूल कारण यह था कि—वेदादि शास्त्र एवं आगमों का ज्ञान सामान्य जनता से दूर हो गया था। तांत्रिक-साधना का विधि-विस्तार इतना कठिन था कि प्रत्येक व्यक्ति बिना शास्त्रीय ज्ञान और गुरु-परम्परा के उन्हें सिद्ध नहीं कर सकता था। इसी समय श्रीशंकराचार्य ने अद्वैतवाद का जो प्रचार किया था उसके समक्ष बौद्ध-तांत्रिकों का प्रभाय भी समाप्त हो चला था। अतः लोक कल्याण की भावना ही इसमें प्रधान रही और अपनी शक्ति का उसमें न्यास कर देने से ये मन्त्र सर्वजनों के लिए उपयोगी बन गये। ऐस कुछ मन्त्रों का संग्रह प्रस्तुत पुस्तक में हमने **'उपयोगी मन्त्र संग्रह'** में दिया है।

मन्त्र-ग्रहण विचार (दीक्षा विधि)

विश्व की समस्त वस्तुओं का ज्ञान और संसार के बन्धन से मुक्ति, इन दोनों कार्यों को अपनी सिद्धि द्वारा सम्पन्न कराने का कार्य मन्त्र ो होता है इसके साथ ही अपने इष्टदेव के स्वरूप का बोध कराने वाले विशिष्ट अक्षरों की योजना से बने हुए ऐसे मन्त्र की

मन्त्रात्मकता तभी उत्तम मानी जाती है जबकि वह गुरु द्वारा विधिवत् प्राप्त हुआ हो।

मन्त्र-ग्रहण के सम्बन्ध में शास्त्रों की आज्ञा है कि उदासीन व्यक्ति उदासीन से, वनवासी वानप्रस्थी से, साधु साधु से, गृहस्थ गृहस्थ से और वैष्णव वैष्णव से मन्त्र ग्रहण करे।"

इस प्रकार की व्यवस्था देने में मुख्य हेतु यह है कि—"प्रत्येक मन्त्र के वर्णों के साथ अधिकारी की दृष्टि से कुछ बीजमन्त्रों का अथवा सृष्टि, स्थिति, संहार, भासा और अनाख्या आदि क्रम का भेद रहता है।

साथ ही दीक्षादाता गुरु अपने द्वारा किये गये पुरश्चरणों द्वारा सिद्धमन्त्र का जो उपदेश देता है और वह यथावत् शिष्य द्वारा गृहीत होता है। फल यह होता है कि—**'आत्मा वै जायते पुत्रः'** इस उक्ति के अनुसार—**'गुरुवद् जायते शिष्यः'**—ऐसी उक्ति को वह सार्थक करता है।

मन्त्रप्रदान करने की क्रिया एक महत्वपूर्ण क्रिया है। इसी का दूसरा नाम **'शक्तिपात'** कहा जा सकता है। अतः गुरु को चाहिए कि दीक्षादानविधि के अनुसार सर्वप्रथम देयमन्त्र का पुरश्चरण करे और बाद में दीक्षा दे।

इसी प्रकार मन्त्रग्रहण करनेवाले की भी अनेक जिम्मेदारियाँ हैं वह मन्त्रग्रहण से पूर्व गायत्री मन्त्र अथवा इष्टमन्त्र का पुरश्चरण करे तथा अपने-आपको ग्राह्य मन्त्र के लिए पात्र बना ले शास्त्र का आदेश और मन्त्रसम्बन्धी मर्यादाओं का पालन सर्वथा आवश्यक है।

यद्यपि कुछ ऐसे भी पाठ मिलते हैं कि मन्त्रदाताओं में से परिवार के व्यक्तियों को मन्त्र देने से पूर्व कुछ नियमों का परिचय प्राप्त कर लें तथापि जो व्यक्ति इष्ट-मन्त्र के पुरश्चरण के पश्चात् मन्त्र ग्रहण करता है वह किसी भी उत्तम साधक से मन्त्र ग्रहण कर ले। पर योग्य गुरु से दीक्षा लेकर ही जप करे यह सर्वथा अपेक्षित है।

सामान्य दीक्षा-विधि

शास्त्रकारों की आज्ञा है कि केवल पुस्तक में लिखे मन्त्र को पढ़कर उसकी साधना करने से सफलता नहीं मिलती, अपितु वह अनिष्ट करने वाली होती है। अतः प्रत्येक मन्त्र दीक्षाविधि से ग्रहण किया जाता है। इस के लिये गुरु के सम्बन्ध में भी बहुत-सी बातों का विचार आगमों में किया गया है और यदि उन गुणों से सम्पन्न गुरु की खोज में साधक लगा रहे, तो बहुत-सा समय व्यर्थ ही नष्ट हो जाता है। अतः शास्त्रों में कुछ विकल्प भी रखे गये हैं, जिनमें

शैव-दीक्षामन्त्र-ग्रहण के लिए मन में निश्चय करके शुभ तिथि, वार, नक्षत्रयोग एवं चन्द्रबल आदि देखकर प्रातःकालीन नित्यकर्म से निवृत्त होकर शिवजी के चित्र अथवा मूर्ति के सामने प्रणाम करके बैठ जाए। फिर जिस मन्त्र का जप करना हो, उसे चाँदी के पात्र, तालपत्र अथवा भोजपत्र पर लिखकर सामने पटिये पर रख दे और उसकी विधिवत् पूजा करे। खीर का नैवेद्य लगाये तथा इष्टदेव का ध्यान कर उनसे मुझे यह मन्त्र प्राप्त हुआ है, ऐसा भाव रखते हुए मन्त्र का १०८ बार जप करे।

सौरदीक्षा

अथवा उत्तर की ओर बहने वाली प्रसिद्ध नदी के किनारे सूर्य की पूजा करके भोजपत्र पर मन्त्र लिखकर पूजा करे तथा भगवान् सूर्य-नारायण को गुरु मानकर वहीं मन्त्र का १०८ बार जप करे। इस तरह दीक्षा हो जाती है तथा मन्त्र फलप्रद होता है।

१—पुस्तके लिखितान् मन्त्रानवलोक्य जपेत् तु यः।
स जीवन्नेव चाण्डलो मृतः श्वा चाभिजायते ॥ —सांख्यायनतन्त्र

: ८ : मन्त्र-साधना में उपयोगी ज्ञान

मन्त्र-साधना करने से पूर्व उससे सम्बन्धित अनेक बातों की जानकारी आवश्यक है। इसके विधि-विधान और उपयोगी विचारों का ज्ञान न होने से जब भी उस सम्बन्ध में कुछ जानने को मिलता है तो मानसिक चिन्ता होती है और जो किया जाता है उसमें सफलता भी नहीं मिल पाती। अतः प्रमुख रूप से जानने योग्य कुछ बातों का विचार यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रातःकृत्य

साधना के लिये यह अत्यावश्यक है कि वह अपने जीवन की समस्त क्रियाओं को नियमित बनाये। नियमितता मानव-जीवन की एक अपूर्व साधना है जिसके सहारे प्रत्येक कार्य में सफलता ही मिलती है। प्राचीन आचार्यों ने इसी बात को ध्यान में रखकर निम्नलिखित निर्देश दिये हैं—

सूर्योदय से प्रायः दो घण्टे पहले ब्राह्ममुहूर्त होता है। उस समय सोते रहना दरिद्रता को बुलाने के समान है। अतः ब्राह्ममुहूर्त में उठकर अपने दोनों हाथों को देखें तथा—

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले स्थितो ब्रह्मा, प्रभाते करदर्शनम् ॥

हाथों के अगले भाग में लक्ष्मी, मध्य भाग में सरस्वती और मूल में ब्रह्माजी स्थित हैं। अतः सवेरे उठते ही हाथों का दर्शन करें।

इसके पश्चात् नीचे लिखी प्रार्थना करके पृथ्वी पर पैर रखें—

समुद्रवसने देवि ! पर्वतस्तनमण्डले ।
विष्णुपत्नि ! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ।।

"हे विष्णुपत्नि ! हे समुद्ररूपी वस्त्रों को धारण करने वाली ! तथा पर्वतरूप स्तनों से युक्त पृथ्वीदेवी ! तुम्हें नमस्कार है । मेरे पैरों के नीचे स्पर्श को क्षमा करो ।"

पश्चात् मुंह धोकर कुल्ला करके प्रातः स्मरण करें जिसमें गणेश, लक्ष्मी, सूर्य, तुलसी, गौ, गुरु, माता-पिता और वृद्धजनों को प्रणाम करें ।

तदनन्तर मल-मूत्र त्यागकर दँतुअन करें और नदी, तालाब, कुआँ, बावड़ी अथवा घर पर ही शुद्ध जल से स्नान करें । स्नान के जल में पुष्कर आदि तीर्थों का आवाहन नीचे लिखे पद्य से करना चाहिए—

पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा ।
आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम ।।

और भावना करें कि यह जल सभी तीर्थों के जल के समान पवित्र है ।

वस्त्र—स्नान के अनन्तर धुले हुए वस्त्र पहनें । मुख्य रूप से पूजा जपादि के समय दो वस्त्र अधोवस्त्र धोती और ऊर्ध्ववस्त्र दुपट्टा पहनने की शास्त्रों में आज्ञा है । ये वस्त्र रेशमी अथवा ऊनी हों तो अति उत्तम है । सूती हों तो सिले हुए, फटे हुए, नील या मांडी लगे हुए न हों । नया वस्त्र हो तो उसे एक बार धोकर ही पहनना चाहिए ।

विशेष कार्य के लिए अनुष्ठान के अवसर पर विशेष रंगीन वस्त्र पहनने का भी आदेश है । जैसे श्वेत वस्त्र सदा उत्तम कर्मों के लिए ग्राह्य हैं । पीताम्बर आदि आकर्षण और लाल रंग का वस्त्र देवी की उपासना में उत्तम माने गये हैं । ठण्ड के दिनों में ऊनी स्वेटर आदि भी पहनते हैं तथा कई व्यक्ति पाजामा या पैण्ट पहनकर ही जप करना चाहते हैं, किन्तु यह ठीक नहीं ।

शुद्ध वस्त्र पहनकर जप के लिए निश्चित स्थान पर जाएँ।

जप का स्थान—पूजा-जप आदि के लिए एकान्त, पवित्र और शुद्ध वायु वाला स्थान चुनना चाहिए। जहाँ कोलाहल अधिक होता हो, स्थान का संकोच हो, आस-पास में दुर्गन्धपूर्ण वस्तुएँ हों ऐसे स्थान पर मन में स्थिरता नहीं रहती। अतः इस ओर सावधानी रखनी चाहिए।

दिशा—आसन पर बैठने से पूर्व ही उचित दिशा का चुनाव भी आवश्यक है। मन तथा इन्द्रियों को प्रसन्न और स्थिर रखने के लिये पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठाना उत्तम माना गया है। शिव-पुराण में कहा गया है कि—"पूर्व दिशा की ओर मुंह करके जप करने से वशीकरण, दक्षिण में अभिचार मारण आदि, पश्चिम में सम्पत्ति-लाभ और उत्तर में शान्ति प्राप्त होती है।" वैसे साधक और देवता के बीच में पूर्व दिशा की स्थिति मानी गई है। सूर्य, अग्नि, ब्राह्मण, देवता तथा श्रेष्ठ पुरुषों की उपस्थिति में उनकी ओर पीठ करके बैठना उचित नहीं है।

विशेष प्रयोग के समय दिशाओं में परिवर्तन होता है, किन्तु सामान्यतः पूर्व और उत्तर दिशा की ओर मुख करके जप करना श्रेयस्कर है।

आसन-विचार

आसन से हमारा आशय दो भागों में विभक्त होता है।

१. देह की स्थिति और हम जिस पर बैठकर जपादि कर्म करते हैं वह। साधना के समय हमारा शरीर बिना किसी कष्ट के सुख-पूर्वक अपना सहयोगी बना रहे और हमारे कार्य में किसी प्रकार की विकलता-बेचैनी का अनुभव न हो। इसके लिए योगशास्त्र में कहा गया है कि—**'स्थिरसुखमासनम्।'**—आसन वही उत्तम है जिसमें स्थिर सुख हो। इसके लिए स्वस्तिकासन, पद्मासन, वीरासन और सिद्धासन आदि प्रसिद्ध हैं। सबसे सरल स्वस्तिकासन है, जो

पालथी मारकर बैठने का नाम है। इससे आगे के आसनों पर अधिक समय तक बैठने का अभ्यास करना पड़ता है। इसी को हम आसन-सिद्धि कह सकते हैं।

देह का आधार जिस पर हम बैठते हैं वह भी सुखकर होना चाहिये। थोड़े-थोड़े समय में मन में उद्वेग करने वाला आसन जप में बाधक बनता है। यह आसन लकड़ी के सुन्दर, सुहाने पटिये पर फैलाकर बैठा जा सकता है अथवा जमीन पर ही बिछा लें। इसके लिये कुश (दर्भ), कम्बल, मृग-चर्म, व्याघ्र-चर्म आदि का आसन बनाया जा सकता है। शास्त्रों में वस्त्र का आसन निषिद्ध माना गया है—

वस्त्रासने तु दारिद्र्यं पाषाणे व्याधिपीडनम्।

इसी प्रकार बिना आसन के पत्थर पर बैठना भी रोगकारक माना गया है। अधिक गम्भीरतापूर्वक विचार करें तो आसन के रंग, आकार आदि का विचार भी शास्त्रों में निर्दिष्ट है। देवी की उपासना में लाल रंग, शिव की उपासना में श्वेत तथा मारण विद्वेषण आदि के लिये काले रंग का आसन उत्तम माना गया है।

आचमन—जिस प्रकार स्नान से शरीर के बाहरी अंगों की शुद्धि होती है उसी प्रकार मन्त्रपूर्वक आचमन करने से अन्तःकरण की शुद्धि होती है। अतः दैवी कार्यारम्भ से पहले आचमन करने का विधान है।

ॐ केशवाय नमः स्वाहा। ॐ नारायणाय नमः स्वाहा।

ॐ माधवाय नमः स्वाहा।

इन तीन मन्त्रों से तीन वार आचमन करें और बाद में **ॐ गोविन्दाय नमः** बोलकर हाथ धो डालें।

पवित्रीकरण—बायें हाथ में जल लेकर कुशा से मस्तक पर जल छिड़कते हुये नीचे लिखा मन्त्र बोलें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

फिर नीचे लिखे मन्त्र से आसान पर जल छिड़कर दायें हाथ से उसका स्पर्श करें।

ॐ पृथ्वि ! त्वया धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम्।।

प्राणायाम

जिस प्रकार स्नान से शरीर के बाहरी अंगों की शुद्धि होती है, उसी प्रकार प्राणायाम से भीतरी अंगों की। यह एक प्रकार का श्वास-व्यायाम है, जो फेफड़ों और छाती को फैलाकर मजबूत बनाता है और रक्तगत दोषों को दूर करके उन्हें शुद्ध करता है। फेफड़ों की गति और भीतरी अंगों की कार्यशीलता प्राणायाम का प्रमुख कार्य है। इससे सहनशीलता बढ़ती है और अंग बलवान् होते हैं।

श्वास रोकने से वायु की अनेक शक्तियाँ शरीर में प्रविष्ट होती हैं और क्षय, प्रमेह, रक्तचाप जैसे रोग नहीं होते। शरीर के शिथिल अंगों और अवयवों में क्रिया-शक्ति का संचार प्राप्त करने के लिये ही उपासना में प्राणायाम को महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है।

प्राणायाम की सामान्य विधि यह है कि पद्मासन से बैठ, पीठ की रीढ़ को सीधा रखकर ठोड़ी को कुछ नीचे झुकाकर पहले दाहिने हाथ के अँगूठे से नासिका के दाहिने छिद्र को बन्द कर बाएँ छिद्र से श्वास अन्दर की ओर खींचें—(इस क्रिया को पूरक कहते हैं)। फिर दाहिने हाथ की ही कनिष्ठा और अनामिका से बायाँ छिद्र बन्द कर दें—(इस क्रिया को कुम्भक कहते हैं)। इसके पश्चात् अँगूठे को हटा कर धीरे-धीरे श्वास छोड़ें—(यह क्रिया रेचक कहलाती है)। इस प्रकार पूरक, कुम्भ और रेचक के समय मन्त्र जप भी करते रहें। यदि बड़ा मन्त्र हो, तो १, ४, २, छोटा हो तो २, ८, ४ इस क्रम से जप करें। श्वास खींचते और छोड़ते समय उसकी गति इतनी मन्द होनी चाहिये कि नासिका के पास यदि हथेली में आटा रखें तो वह हिले नहीं।

प्राणायाम की इस क्रिया में इष्ट-मन्त्र का जप होता है। इस पद्धति से जप करने में एक और लाभ यह होता है कि साधक नीरोग और दीर्घायु बन जाता है। प्राणायाम में मन्त्र जप करने से मनुष्य की क्रियाशक्ति और ज्ञानशक्ति का शोधन होता है तथा बुद्धि निर्मल होकर सत्कार्य में प्रवृत्त होती है। विभिन्न प्रकार के रोगों से मुक्ति प्राप्त करने के लिए भी प्राणायाम के प्रयोग किये जाते हैं, किन्तु ऐसे कार्यों के लिए योग्य अधिकारी से शिक्षा लेना आवश्यक है।

संकल्प—किसी भी कार्य को करने से पूर्व आत्मनिर्णय की अभिव्यक्ति के रूप में एक प्रकार की जो प्रतिज्ञा की जाती है उसे संकल्प कहा जाता है। इस प्रतिज्ञा में देवताओं की साक्षी, वर्ष, मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, अपना गोत्र, नाम आदि का स्मरण करते हुए—"मैं यह कार्य करूँगा" ऐसा कहा जाता है। संकल्प के समय ब्राह्मण अपने नाम के अन्त में शर्मा, क्षत्रिय वर्मा, वैश्य गुप्त और शूद्र दास कहे।

हाथ में जल, कुशा, पुष्प, तुलसी और अक्षत रखकर संकल्प वाक्य बोलें।

यह संकल्प पुरश्चरण अथवा विशिष्ट साधना में एक बार आरम्भ के दिन करें और बाद में 'संकल्पितकर्म पूर्त्यर्थं'—ऐसा जोड़कर प्रतिदिन बोलना चाहिये।

शिखा-बन्धन—शास्त्रों में शिखा (चोटी) का बड़ा महत्त्व बतलाया है। सभी कर्म शिखा बाँधकर करने चाहिये। यहाँ तक कि यदि किसी की चोटी के बाल उड़ गये हों तो वह कुशा की चोटी बनाकर अपने दाहिने कान पर रखकर पवित्र कर्म करे। शिखा बाँधने का मन्त्र इस प्रकार है :—

चिद्रूपिणि महामाये ! दिव्यतेजःसमन्विते ।
तिष्ठ देवि ! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे ।

यज्ञोपवीत धारण—ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीन वर्णों के लिये शास्त्रों में जनेऊ पहनने की आज्ञा है। उत्तम कर्म करने का

अधिकार यज्ञोपवीत धारण करने पर सहज प्राप्त हो जाता है ।

नवीन यज्ञोपवीत को जल से शुद्ध कर दस बार गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित कर उसके प्रत्येक तन्तु में नीचे लिखे देवताओं का आवाहन करके उसे धारण करें ।

प्रथम तन्तु में—ॐकार । द्वितीय में—अग्नि । तीसरे में—सर्प । चौथे में—सोम । पाँचवें में—पितृगण । छठे में—प्रजापति । सातवें में—वायु । आठवें में—सूर्य । नौवें में—वैश्वदेव । ग्रंथि में—ब्रह्मा, विष्णु और शिव का आवाहन करें ।

यज्ञोपवीत पहनने का मन्त्र

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

"यज्ञोपवीत परम पवित्र देवताओं का प्रतीक है । अतः इसको पवित्रता बनाये रखना तथा आदर करना आवश्यक है । जब मल-मूत्र त्याग करना हो तो जनेऊ को दाहिने कान पर चढ़ायें और मौन रहें ।"

पुराने जनेऊ का त्याग

जनेऊ के पुराने पड़ जाने पर, सूतक, मृतक, काल, चाण्डालादि स्पर्श और ग्रहण के बाद यज्ञोपवीत को बदलना चाहिए । मन्त्र इस प्रकार है—

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया ।
जीर्णत्वात् त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र ! यथासुखम् ॥

इतना बोलकर पुराने जनेऊ की कण्ठी बनाकर पीठ की ओर से निकालकर आचमन करें और गायत्री जप करें ।

भस्म और तिलक धारण

शास्त्रों की आज्ञा है कि—**'देवो भूत्वा देवं यजेत्'** अर्थात् स्वयं देवता के समान बनकर देवता की पूजा करनी चाहिये । अतः शरीर के ललाट, हाथ और उदर के निश्चित भागों पर भस्म लगायें । सन्ध्या

करते समय इसके मन्त्र और लगाने के स्थान आदि का वर्णन मिलता है। यदि न हो तो केशर अथवा चन्दन का तिलक लगा लें।

सन्ध्या-वन्दन

सभी अनुष्ठान-कर्मों की सिद्धि सन्ध्या-वन्दनादि पर निर्भर है। जो लोग स्नान-सन्ध्याशील होते हैं उनके द्वारा किसी मन्त्र का जप किया जाये तो वह शीघ्र सिद्धि देता है। अतः सन्ध्या का प्रयोग अन्य पुस्तकों से समझ या पढ़ लेना चाहिए और वैसा न हो तो मुख्यतया सूर्यनारायण को तीन अंजलि भरकर गायत्रीमन्त्र अथवा इष्टमन्त्र से अर्घ्य देवें।

पूजन

जिस मन्त्र का अनुष्ठान करना हो, उस मन्त्र के देवता की मूर्ति, चित्र अथवा यन्त्र में पूजा करनी चाहिए। यह एक प्रकार का आलंबन है जिसे हम साक्षी मानकर अपना कार्म करते हैं। पूजा में १६ उपचार, पञ्चोपचार, राजोपचार आदि का विधान है। सामान्य रूप से जल-स्नान, पंचामृत-स्नान, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, अक्षत, पुष्प, गुलाल, अबीर हरिडा आदि सुगन्धितचूर्ण, धूप, दीप, नैवेद्य, फल, ताम्बूल, दक्षिणा, आरती, मन्त्र पुष्पांजलि और समर्पण का पूजा में समावेश होता है। इतना न बन सके तो जल-स्नान, गन्ध-अक्षत, पुष्प और धूप-अगरबत्ती तथा दीपक लगाकर जप करें।

न्यास—

प्रत्येक मन्त्र-जप से पूर्व न्यास करने का आदेश है। न्यास का अर्थ है—अंगों में मन्त्र-देवता की स्थापना। न्यास के मुख्य तीन प्रकार हैं—ऋषिन्यास, करन्यास और अंगन्यास। **ऋषि न्यास** में मन्त्र के ऋषि, छन्द, देवता, बीज, शक्ति और कीलक का न्यास होता है जो क्रमशः सिर, मुख, हृदय, नाभि, गुह्यभाग और दोनों पैरों पर होता है।

करन्यास में बीजमन्त्र अथवा इष्टमन्त्र के भागों से पाँचों अंगु-

लियाँ और हाथों के पिछले भागों पर न्यास होता है।

अंगन्यास में हृदय, सिर, शिखा, दोनों भुजायें, दोनों नेत्र और उनके मध्यभाग पर न्यास करके ताली बजाई जाती है।

कहीं-कहीं **व्यापक** का भी संकेत मिलता है, जिसका अर्थ है सारे शरीर पर न्यास करना।

इनके अतिरिक्त भी कई प्रकार के न्यास होते हैं। न्यास करने से देवताओं की सन्निधि प्राप्त होती है, अतः न्यास अत्यावश्यक हैं।

ध्यान

किसी भी मन्त्र के जप से पूर्व उसका ध्यान अवश्य करना चाहिए। ध्यान के श्लोकों में देवता का जैसा वर्णन किया जाता है उसी के आधार पर मन्त्र भी बनता है। यद्यपि मन्त्रशास्त्रों के अस्त-व्यस्त हो जाने से ध्यान के पद्य व्यवस्थित नहीं मिलते हैं तथापि इष्ट-देव का ध्यान करके ही जप करें और जप के समय भी वैसा ही ध्यान करते रहें।

जप की प्रक्रिया

जप के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के निर्देशन प्राप्त होते हैं। स्थिर सुख देने वाले आसन से एकाग्र चित होकर मन्त्र एवं उसके देवता के स्वरूप का चिन्तन करते हुए न तो अधिक शीघ्रता से और न बहुत मन्द गति से जप करना चाहिये। मन्त्र के अर्थ की भावना बराबर करते रहने से एकाग्रता बनी रहती है। शरीर के षट्चक्र—**मूलाधार** (गुदा एवं लिंग के मध्य में), **स्वाधिष्ठान** (लिंग के ऊपर का भाग), **मणिपूर** (नाभि-स्थान), **अनाहत** (हृदय प्रदेश), **विशुद्ध** (कण्ठस्थल—तालु मूल) एवं **आज्ञा-चक्र** (भौंहों के मध्य का भाग)—में से किसी एक चक्र में अन्तरदृष्टि रखते हुए जप करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है।

जपकर्म की सफलता

जपकर्त्ताओं को चाहिये कि वह जप करते समय नीचे लिखी बातों पर ध्यान दें—

(१) चित्त में प्रसन्नता का अनुभव करें। (२) स्वयं को जिस कार्य में लगाया है, उसकी पूर्ति के लिए अपने-आपको समर्थ मानें। (३) मौन रहें। (४) मन्त्र के अर्थ का चिन्तन करते रहें। (५) किसी प्रकार की बेचैनी का अनुभव न करें और एकाग्रभाव से जप करें तथा (६) अपने कार्य के प्रति सदा उत्साह बनाये रहें।

मन्त्र का जप करते समय मन में ऐसी भावना करनी चाहिये कि--(१) परमात्मा की शक्ति अद्‌भुत है। (२) परमात्मा सबसे ऊपर है, उससे बड़ा कोई नहीं। (३) इष्टदेव के स्वरूप का ध्यान। (४) परमात्मा की कृपा प्राप्त करने की आतुरता। (५) परमात्मा सबका कल्याण करने वाला है और (६) इस जप कर्म से मुझे अवश्य ही ईश्वरीय शक्ति प्राप्त होगी--ऐसा दृढ़ निश्चय।

अहंकार, घमण्ड या गर्व का भाव मन में न लाएं तथा इष्टदेव को अपना सर्वस्व समर्पण करने की प्रवृत्ति रखें और इसके साथ ही शुभसंकल्प का होना भी आवश्यक है।

मनुष्य का मन कुएं के जल के समान होता है। कूप-जल का कोई आकार नहीं हाता। वहाँ वह सम रहता है और एक ही स्वादवाला रहता है, परन्तु ज्योंही रहट की वड़ियों द्वारा भर आने वाला वह जल खेतों की तिकोन, चौकोर, गोल एवं अन्य आकार की क्यारियों में पहुँचता है तो उन्हीं के आकार का बन जाता है। नीम, नीबू, मिर्च, सन्तरे तथा आम की जड़ों में पहुँचकर उसका स्वाद भी उनके रस के स्वाद में परिवर्तित हो जाता है। वैसे ही मन भी शब्दों में भ्रमण करता है तथा उनके प्रभाव से प्रभावित होकर मन्त्र, उपास्य-देव तथा कर्म के अनुसार तदाकार बन जाता है और उसी से सिद्धि सम्भव हो जाती है। अतः गुरुदेव द्वारा जो मन्त्र प्राप्त किया है उसे

उनकी अमृतवाणी मानकर उनके आशीर्वाद से मुझे अवश्य सिद्धि प्राप्त होगी, ऐसा अडिग विश्वास रखते हुए ध्यान एवं मननपूर्वक जप करना चाहिए।

माला-विचार

जप के लिए माला का होना अत्यन्त आवश्यक है। संख्या के बिना जप करने का कोई फल नहीं होता है, इसलिए एक सौ आठ, चौवन, सत्ताईस, बारह अथवा नौ मनकों की माला होनी चाहिये। माला में १०८ मनकों के अतिरिक्त एक मनका और कुछ बड़े आकार का रहना चाहिए जिसे सुमेरु कहते हैं।

माला के मनके किन-किन वस्तुओं के हो सकते हैं? इसके लिये लिखा है कि—

अरिष्टपत्रं बीजं च शंखपद्मौ मणिस्तथा।
कुशग्रन्थिश्च रुद्राक्ष उत्तमं चोत्तरोत्तरम्॥
प्रवालमुक्तास्फटिकैर्जपः कोटिफलप्रदः।
तुलसीमणिभिर्येन गणितं चाक्षयं फलम्॥

अर्थात्—"अरीठे के पत्ते, उसके बीज, शंख, कमल गट्टे, मणि, कुशा में गाँठ लगाकर, रुद्राक्ष, मूंगा, मोती, स्फटिक और तुलसी के मनके उत्तरोत्तर अक्षय फल देने वाले हैं।"[१]

प्रत्येक मनके के बीच में गाँठ लगी होनी चाहिए। माला को गूंथने के लिये सोने, चाँदी या ताँबे का तार लिया जाये अथवा रेशमी डोरे (लाल, पीले या सफेद रंग के) में मनके पिरोए। प्रत्येक मनका उत्तम आकार का, गोल और बिना टूट-फूट का होना चाहिये। साथ ही जप करते समय——

१—इनके अतिरिक्त कामना और कर्मभेद से भी अनेक प्रकार की मालायें बनती हैं; जैसे हल्दी के टुकड़े, पशुओं के दांत आदि।

वस्त्रेणाच्छाद्य तु करं दक्षिणं यः सदा जपेत्।
तस्य स्यात् सफलं जाप्यं तद्धीनमफलं स्मृतम् ॥
अतएव जपार्थं सा गोमुखी ध्रियते जनैः।
यक्षरक्षःपिशाचाश्च सिद्धविद्याधरा गणाः ॥
यस्मात् प्रभावं गृह्णति तस्मात् गुह्यं तु कारयेत्।

अर्थात्—"दाहिने हाथ को वस्त्र के द्वारा ढककर सदा जप करना चाहिये। ऐसा जप का विधि का पालन न करने से वह जप हीनफल देने वाला होता है। इसीलिये लोग जप के लिये गोमुखी रखते हैं। यक्ष, राक्षस,, पिशाच, सिद्ध और विद्याधर गण माला के जप का प्रभाव ग्रहण कर लेते हैं। इसीलिये माला को गुप्त रखना चाहिये।"

माला का प्रयोग करते समय माला को प्रातः नाभि के पास, मध्याह्न में हृदय के समीप और सायंकाल के समय नासिका के सामने रखनी चाहिये।

माला-जप के समय मन्त्र का उच्चारण स्पष्ट, एक-दूसरे वर्ण का अकारण मिश्रण न करते हुए, ओठों को हिलाना बन्द करके करना चाहिये। वैसे जप के उपांशु, भाष्य आदि प्रकारों का भी ज्ञान रखना आवश्यक है।

माला को मध्यमा अँगुली के मध्य पर्व पर अथवा अनामिका के मध्यपर्व रखे तथा अँगूठे के पहले पर्व से एक-एक मनके को एक-एक मन्त्र बोलने के पश्चात् घुमायें तथा तर्जनी को सीधी इस प्रकार रखें कि वह माला का स्पर्श न करे। नखों का स्पर्श भी दोषपूर्ण माना गया है।

माला जपते समय छींक या कोई अन्य व्यवधान आ जाये तो आचमन करें अथवा नेत्र और दाहिने कान को जल लगाकर स्पर्श करें। मन्त्रजप के बीच में बोलना बातचीत करना उचित नहीं है। माला में सुमेरु का उल्लंघन निषिद्ध है। सुमेरु के पास पहुँचने पर माला को उसी मनके से घुमाकर जप करना आरम्भ कर दें। यह

शास्त्र का वचन है कि—'मुखान्मुखं पुच्छात् पुच्छं' जप होना चाहिये अर्थात्—मुख से मुख भाग तक और पुच्छ से पुच्छ भाग तक जप करना चाहिये। ऐसा करने से सुमेरु का उल्लंघन नहीं होगा। मनके को अपने हृदय की ओर घुमायें, सामने की ओर नहीं।

माला को खटखटाना, बार बार सुमेरु कब आयेगा? ऐसा देखना, हाथ, सिर या शरीर को हिलाना, जप करते हुए ऊँघना, माला का हाथ से गिर जाना आदि अनेक दोषों से बचना चाहिये।

:९: / पुरश्चरण पद्धति

'पुरः' और 'चरण' इन दो शब्दों से 'पुरश्चरण' शब्द बनता है। इसका अर्थ है—पूर्वाचरण। अर्थात् मन्त्रफल की सिद्धि के लिए पूर्व-भूमिका के रूप में किया जाने वाला कार्य। पुरश्चरण के पांच अंग होते हैं—जप, होम, तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण-भोजन। किसी भी मन्त्र को साधना करने से पूर्व उस मन्त्र की शक्ति का जागरण करने तथा उसे चैतन्य रखने के लिए पुरश्चरण किया जाता है।

पुरश्चरण में मन्त्रजप के लिए साधक को कुछ नियमों का पालन करना आवश्यक है जिसमें—पृथ्वी पर शयन, ब्रह्मचर्य-पालन, मौन-सेवन, ईर्ष्या न करना, नित्य स्नान, क्षुद्र कर्मों का त्याग, नित्य-पूजा, दान, देवता स्तुति, कीर्तन नैमित्तिक अर्थात्—विशेष पर्व आने पर विशेष पूजा, गुरु तथा देवता पर विश्वास और जप में तत्परता का समावेश होता है।

जपसंख्या की दृष्टि से सामान्यतः यह नियम है कि जिस मन्त्र का पुरश्चरण करना हो उसके अक्षरों को गिनकर जितने अक्षर हों उतने ही लाख जप करना अथवा सवा लाख जप करना अथवा दस

हजार मन्त्र जप करना। जप पूरा होने पर यदि होम, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन कराने की शक्ति अथवा संयोग न हो तो मन्त्र का दशांश जप और करना चाहिए। कलियुग में ४ गुना जप होता है।

पुरश्चरण का आरम्भ किसी शुभ दिन में शुभ मुहूर्त देखकर करना चाहिए। प्रतिदिन का जप एक संख्या में होना आवश्यक है। किसी दिन अधिक और किसी दिन कम जप नहीं होना चाहिये। यह प्रातः ब्राह्ममुहूर्त अर्थात्—रात के ३ बजे से लेकर १२ बजे दोपहर तक किया जाता है। जिस देवता का मन्त्र-जप चल रहा हो, उसका स्तोत्र—प्रार्थना, चरित्र-वाचन आदि अन्य समय में करते रहना चाहिए। उत्तम भावना, सदाचार, श्रद्धा एवं विश्वास, तत्परता और आत्मशुद्धि से पुरश्चरण करने के पश्चात् प्रतिदिन सामान्य जप करने पर भी मन्त्र फलदायी सिद्ध होता है। ग्रहण का समय अथवा विशेष पर्व पर किया हुआ जप भी पुरश्चरण के समान ही फलदायीं होता है।

पुरश्चरण के लिए किसी पवित्र स्थान का चुनाव करना चाहिए तीर्थ-स्थान, गंगादि नदी के तट, पीठ-स्थल, देवमन्दिर तथा गुरुगृह, इसके लिए उत्तम माने गये हैं। यदि ये सम्भव न हों तो घर में ही किसी कमरे के एकान्त भाग में यह व्यवस्था की जा सकती है। पुरश्चरण आरम्भ करने से पूर्व क्षौरकर्म करवाकर देहशुद्धि करें। मानसिक पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए विष्णुपूजा, विष्णुतर्पण, विष्णुश्रद्धा और हवन आदि का विधान है।

यदि यह सब नहीं बन सके तो संकल्प करके इनके निमित्त कुछ दान करें। वाद में पंचगव्य—गोमय, गोमूत्र, गोदुग्ध, दधि और घृत से निर्मित—का आचमन करें। पंचगव्य ग्रहण के समय निम्नलिखित मन्त्र बोलना चाहिये—

ॐ यत् त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके।
प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्वग्निरिवेन्धनम्॥

अर्थात्—मेरे शरीर में चमड़ी से हड्डी तक जो भी पाप स्थित हैं

वे इस पंचगव्य के आचमन से जल जायें जैसेकि अग्नि इधन को जला देती है।

पुरश्चरण में इष्ट मन्त्र के जप से पूर्व १०८ माला गायत्री जप का भी शास्त्रीय विधान है।

गायत्री जप के पश्चात् पुरश्चरण में सिद्धि प्राप्त होगी अथवा नहीं ? इससे लिये नीचे लिखे पद्य बोलकर इनका १०८ बार जप करना चाहिए—

ॐ भगवन् देवदेवेश शूलभृद्वृष-वाहन ।
इष्टानिष्टं समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वत ॥
नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने ।
वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥
स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः ।
क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥

इन मन्त्रों से जप करके फिर भगवान् शंकर की पूजा करके सो जाएँ। रात्रि में जो स्वप्न दिखाई दे उनमें उत्तम वस्तु हो तो उत्तम तथा सामान्य वस्तु दिखाई दे तो सामान्य फल होता है।

मन्त्र-दोष और उनका निवारण

मन्त्रजप के लिए ऊपर बताये गये नियमों का पालन करते हुए इच्छित कार्य की सिद्धि यदि न हो तो पहले पुरश्चरण के अतिरिक्त दो पुरश्चरण और करने चाहिए। इस प्रकार जपादि क्रिया के दोषों की निवृत्ति होकर कार्य सिद्ध हो जाते हैं। यदि किसी अन्य दोष के कारण इतना करने पर भी सिद्धि के लक्षण नहीं दिखाई दें, तो गौतमीय-तन्त्र में प्रदर्शित मन्त्र दोष-निवारण के निम्नलिखित सात उपाय करने चाहिएँ—

१. भ्रामण

इष्ट मन्त्र के प्रत्येक अक्षर के पूर्व वायु बीज 'यँ' जोड़कर बनाये

गये मन्त्र को अष्टगन्ध के भोजपत्र पर दाडिम की लेखनी से लिखें और फिर उस मन्त्र को दूध, मधु और पानी में डुबोकर एक पात्र में रखें और जब तक पुरश्चरण चलता हो तब तक वैसा ही रहने दें। यदि इस प्रकार करने पर भी कार्य सिद्धि में विलम्ब दिखाई दे तो नीचे लिखा दूसरा प्रयोग करें।

२. रोधन

अपने इष्ट मन्त्र के आसपास सम्पुट के रूप में ॐ लगाकर जप करें। यदि ऐसा करने पर भी सिद्धि न मिले, तो तीसरा वशीकरण का प्रयोग करें।

३. वशीकरण

रक्त चन्दन, हल्दी, मैनसिल और धतूरे के बीज इन सबको पीस-कर गुलाब जल में मिलाकर स्याही बना लें। फिर इष्ट मन्त्र को दाडिम की लेखनी से भोजपत्र पर लिखकर चाँदी अथवा तांबे के ताबीज में धूप देकर रख दें और गले अथवा भुजा पर धारण करें। इतना करने पर भी मन्त्र सिद्ध न हो तो चौथा पीडन प्रयोग करें।

४. पीडन

मन्त्र के अक्षरों को उलटाकर फिर जप करें अर्थात्—अन्त से आदि तक के अक्षरों का जप करें। इसके साथ ही आक के दूध से भोजपत्र पर मन्त्र लिखकर बायें पैर से दबायें और जप करते रहें। यदि इससे भी सिद्धि न मिले तो शोषण क्रिया करें।

५. शोषण

इष्ट मन्त्र को वायु बीज 'यँ' से सम्पुटित करके जप करें तथा उसका दशांश हवन करें। बाद में यज्ञ की भस्म द्वारा भोजपत्र पर मन्त्र लिखकर ताबीज में बन्द करके गले में धारण करें। छठा पोषण प्रयोग उक्त प्रयोग की निष्फलता के बाद किया जाता है।

६. पोषण

मूल मन्त्र के आसपास बालाबीज अर्थात्—**'ऐं क्लीं सौः'** जोड़कर जप करना तथा गौ के दूध और मधु के मिश्रण से भोजपत्र पर मन्त्र लिखकर भुजा पर बाँधें। यदि इससे भी सिद्धि न मिले तो दाहन प्रयोग करना चाहिए।

७. दाहन

मन्त्र के प्रत्येक अक्षर में पूर्व अग्नि बीज अर्थात्–'रँ' जोड़कर जप करें तथा पलाश—खाँखरे के बीजों के तेल से भोजपत्र पर मन्त्र लिखकर धारण करें।

उपर्युक्त क्रियाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि मन्त्र सिद्ध करना कोई सामान्य कार्य नहीं है। यदि किसी मन्त्र के पहले तीन पुरश्चरण कर लिए हों और उसमें परिणाम ठीक नहीं आता हो तो ऊपर बताये प्रयोग करके पुनः पुरश्चरण करने का विधान है, किन्तु इससे साधक को डरना नहीं चाहिये। देवता अपने भक्त की अनेक रूपों में परीक्षा लेते हैं और उसकी भक्ति को स्थिर बनाकर अपनी शरण में ले लेते हैं, फिर उनका वरद-हस्त सदा बना रहता है।

ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं कि चौबीस लाख के कई पुरश्चरण करने पर भी साक्षात् दर्शन नहीं हुए और जब विरक्त होकर संन्यास ले लिया तो प्रत्यक्ष आकर वर माँगने के लिए कहा और जब उनसे यह पूछा गया कि–"अब तक दर्शन क्यों नहीं दिये?" तो यही उत्तर मिला कि—"पूर्वजन्म के दोष प्रबल थे, वे जब तक समाप्त नहीं होते तब तक दर्शन कैसे होते?" **'बृहज्ज्योतिषार्णव'** महाग्रन्थ के निर्माता पण्डित जी इसके प्रमाण हैं। अतः **'देहं वा पातयामि कार्यं वा साधयामि'**—प्राण छूट जाएँ पर कार्य सिद्ध करके रहूँगा, ऐसी दृढ भावना से कार्य करना चाहिए।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि सभी मन्त्रों के पुरश्चरण में

कुछ-न-कुछ विशेष सूचना भी रहती है और बहुत से मन्त्र ऐसे हैं कि जिनका पुरश्वरण करना भी आवश्यक नहीं होता। प्राचीन काल में गुरु जा द्वारा मन्त्र प्राप्त किया जाता था वह स्वयं सिद्ध रहता था अतः उसमें इसकी आवश्यकता नहीं रहती थी।

कभी-कभी अपने पूर्व पुण्यों के बल से स्वयं इष्टदेव अथवा कुल-देवी रात्रि में आकर स्वप्न में मन्त्र का ज्ञान करा देती हैं। ऐसे समय तत्काल उठकर मन्त्र को लिख लेना चाहिये तथा अदेशानुसार जप करना चाहिये। उसका पुरश्चरण आवश्यक नहीं है।

उपसंहार—

मन्त्रशास्त्र का विषय अतिगहन और विस्तृत है। इसकी साधना सुलभ और कठिन दोनों ही प्रकार की है। इस मार्ग में श्रद्धा, विश्वास एवं उत्साह रखने से ही सिद्धि के द्वार खुलते हैं। हताश नहीं होना चाहिये। आगे बढ़ते रहना चाहिये तथा अच्छे विचार एवं संस्कार बनाये रखना चाहिये ईश्वर अवश्य कृपा करते हैं। सत्प्रवृत्ति अवश्य रखें। सफलता निश्चित है।

×

२

प्रयोग-विधि

: ९ : | नित्य-कर्म-प्रयोग

सर्वविधि मन्त्र जपविध

समस्त मन्त्रों के जप की विधि सरलता से करने योग्य निम्न प्रकार है—

नित्यक्रिया से निवृत्त होकर प्रातः शुद्ध जल से स्नान करें और शुद्ध वस्त्र पहनकर पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर मुख करके ऊन अथवा कुशासन पर बैठें। बैठने में स्वस्तिकासन अथवा पद्मासन उत्तम माने गये हैं। फिर आचमन और प्राणायाम करके **गुरु-स्मरण** करें।

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः—यह मन्त्र बोलकर मस्तक झुकाकर प्रणाम करें तथा नीचे लिखे मन्त्रों से सूचित स्थानों पर तत्त्वमुद्रा[१] द्वारा स्पर्श करते हुए वन्दना करें—

गुं गुरुभ्यो नमः—(दायें कन्धे पर।)

गं गणपतये नमः—(बायें कन्धे पर।)

दुं दुर्गायै नमः—(बाईं जाँघ पर।)

क्षं क्षेत्रपालाय नमः (दाईं जाँघ पर।)

पं परमात्मने नमः—(हृदय पर।)

इसके पश्चात् इष्ट मन्त्र यदि वैष्णव मन्त्र हो, तो '**ॐ सहस्रार हुं फट्**'—इस मन्त्र से, यदि शैव मन्त्र हो, तो '**ॐ श्लीं पशु हुं फट्**' से तथा और इनसे इतर मन्त्र हो, तो ब्रह्मास्त्र मन्त्र '**ॐ तपः सत्यात्मने अस्त्राय फट्**' से बाईं हथेली से दाहिने हाथ की कोहनी से हथेली तक

१—मध्यमा, अनामिका और अंगुष्ठ के अग्रिमपर्व मिलाने से तत्त्वमुद्रा बनती है।

तथा दाहिनी हथेली से बायें हाथ की कोहनी से हथेली तक स्पर्श करें। फिर यही मन्त्र बोलते हुए तीन ताली बजायें और दिशाओं[1] में मूल मन्त्र पूर्वक चुटकी बजाते हुए दिग्बन्धन करें।

फिर बाह्य भूतशुद्धि के लिए नीचे लिखे श्लोक बोलें—

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे॥

यह बोलकर सभी दिशाओं में प्रणाम करके बायें पैर की ऐड़ी को तीन बार जमीन पर पटकें। तदनन्तर पूजा के अधिकार की सिद्धि के लिए भैरव की प्रार्थना करें—

तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि॥

और मन में भावना करें कि मुझ पर कृपा करके भैरव ने आज्ञा प्रदान कर दी है।

फिर दीप स्थापन कर दीपक की प्रार्थना नीचे लिखे पद्य से करें—

भो दीप! देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

फिर यन्त्र, मूर्ति अथवा चित्र में इष्टदेव का ध्यान करके पूजन करें। पूजन के लिए सामान्य विधि इस प्रकार है—

संकल्प—"विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भारतवर्षे (अमुक) स्थाने श्रीशालिवाहनशके······ संवत्सरे······ अयने······

1—दिशाओं की संख्या दस मानी गई हैं जिनमें चारों दिशाएं चार कोने तथा पृथ्वी और आकाश का ग्रहण होता है।

ऋतौ···मासे···पक्षे···तिथौ···वासरे···गोत्र··· (शर्मा, वर्मा गुप्तः) ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्री···देवप्रीत्यर्थं पूजनमहं करिष्ये।

इस प्रकार आचमनी अथवा हाथ में जल, अक्षत और पुष्प लेकर संकल्प करें। संकल्प में खाली स्थानों पर शक, संवत्, मास, पक्ष और तिथि की संख्या बोलें तथा वार, गोत्र, अपना नाम एवं जिस देवता की पूजा करनी हो उसका नाम लेकर जल छोड़ें।

पूजा-विधि—पूजा के लिए वैदिक एवं पौराणिक अनेक मन्त्र हैं तथा पंचोपचार, षोडशोपचार राजोपचार आदि अनेक विधानों से पूजा की जाती है। हम यहाँ केवल षोडशोपचार-पूजा के प्रकार का उल्लेख कर रहे हैं। पूजा करने वाला व्यक्ति प्रत्येक समर्पण वाक्य से पहले अपना इष्टमन्त्र बोले और पूजन करे। जैसे—

ॐ (अपना इष्ट मन्त्र) (१) आवाहनं समर्पयामि। (२) आसनं समर्पयामि। (३) पाद्यं समर्पयामि। (४) अर्घ्यं समर्पयामि। (५) आचमनीयं समर्पयामि। (६) स्नानं (पञ्चामृतसहितं) समर्पयामि। (७) वस्त्रोपवस्त्रे समर्पयामि। (८) यज्ञोपवीतं समर्पयामि। (९) गन्धं समर्पयामि। (१०) पुष्पाणि समर्पयामि। (११) धूपं समर्पयामि (१२) दीपं दर्शयामि। (१३) नैवेद्यं समर्पयामि। (१४) नीराजनं समर्पयामि। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। (१५) नमस्कारान् समर्पयामि। (१६) प्रदक्षिणां समर्पयामि[१]।

फिर "अनया पूजया श्री···देवः प्रीयताम् न मम" ऐसा बोलकर जल छोड़ें।

मन्त्रजप से पूर्व का कर्तव्य

मन्त्रजप के प्रमुख अंगों में भू-शुद्धि, भूत-शुद्धि, प्राण-प्रतिष्ठा, अन्तर्मातृका-न्यास और बहिर्मातृका-न्यास का बड़ा महत्त्व है। प्रति-

---

१—यदि कोई स्तोत्र अपने इष्टदेव का आता हो तो यहाँ उसका पाठ करें। अथवा ऐसे स्तोत्रों के लिये हमारी पुस्तक 'स्तोत्रशक्ति' देखें।

दिन जप करने से पूर्व इनके करने से शरीर एवं बाह्य वातावरण में दिव्यता आ जाती है। शास्त्रों में कहा गया है कि—'**देवो भूत्वा देवं यजेत्**' अर्थात् देवता बनकर देवता की पूजा करे। अतः अपने आपको इन विभिन्न प्रक्रियाओं द्वारा शिवरूप बना लें। इसकी समान्य विधि इस प्रकार है—

(१) **भू-शुद्धि**—हाथ में अथवा आचमनी में जल लेकर।

विनियोग—भूरसीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः मातृका देवताः प्रस्तारपंक्तिश्छन्दः भूशुद्धौ विनियोगः—कहकर जल छोड़ दें। फिर पृथ्वी के सामने दोनों हाथ फैलाकर प्रार्थना करें।

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृंह पृथिवींमाहिंसीः॥

(२) **भूत-शुद्धि**—श्वास की वायु को नासिका के बायें भाग से अन्दर खींचकर—**मूलशृंगाटकाज्जीवशिवं परमशिवे योजयामि स्वाहा**—इस मन्त्र से जीवात्मा का परम शिव के साथ एकाभाव मानकर दाहिने भाग से श्वास छोड़ें।

नासिका के दाहिने भाग से पूरक करते हुए '**यँ**' बीज का १६ बार तथा कुम्भक में ६४ बार बोलकर—**संकोचशरीरं शोषय शोषय स्वाहा**—बोलें और बायें भाग से ३२ बार '**यँ**' बीज बोलते हुए श्वास छोड़ें।

फिर नासिका के बायें भाग से ऊपर दिखाये अनुसार '**रँ**' बीज जपकर—**संकोचशरीरं दह दह पच पच स्वाहा**—बोलें और पुनः पूर्ववत् 'रँ' बीज का जप करते हुए दाहिने भाग से श्वास छोड़ें।

तदनन्तर '**ठँ**' बीज से पूर्ववत् दायें भाग से पूरक और कुम्भक करके '**चन्द्रमण्डलं विभावय विभावय स्वाहा**' बोलें और उसी बीज का जप करते हुए रेचक करें।

इसके पश्चात् '**वँ**' बीज से पूर्ववत् बायें भाग से पूरक और कुम्भक करके '**परमशिवामृतं वर्षय वर्षय स्वाहा**' बोलकर रेचक करें।

इसके बाद '**लँ**' बीज से पूर्ववत् दाहिने भाग से पूरक एवं कुम्भक कर—**शाम्भवशरीरमुत्पादयोत्पादय स्वाहा**—बोलकर जप करते हुए

रेचक करें।

फिर पहले की तरह हो 'ह्रीं' बीज से बाईं ओर से पूरक कर कुम्भक में **'कारणशरीरभुत्पादयोत्पादय स्वाहा'**—कहकर दाहिने भाग से जप करते हुए रेचक करें।

इसके पश्चात् 'हंसः सोहं' मन्त्र से पूर्ववत् दाहिनी ओर से पूरक करके कुम्भक करें और—ॐ **अवतर अवतर शिवपदाद् जीव सुषुम्णा-पथेन प्रविश मूलशृंगाटकमुल्लसोल्लस ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हंसः सोऽहं स्वाहा**—बोलकर रेचक करें।

(३) **आत्म-प्राणप्रतिष्ठा**--जिस ओर का श्वास चल रहा हो उसी ओर से पूरक कर—ॐ **ऐं ह्रीं श्रीं**—मन्त्र बोलकर हृदय पर दायाँ हाथ रखें और **'आं सोऽहं'** मन्त्र का तीन बार उच्चारण कर श्वास छोड़ें।

इसके पश्चात् इष्ट मन्त्र द्वारा **प्राणायाम** करें।

(४) **अन्तर्मातृकान्यास--विनियोग**--अस्यान्तर्मातृका-मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीछन्दः, मातृकासरस्वती देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः क्षं कीलकं मातृकान्यासजपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

अं ब्रह्मऋषये नमः **आं**, (शिरसि)। **इं** गायत्रीछन्दसे नमः **ईं**, (मुखे)। **उं** मातृकासरस्वतीदेवतायै नमः **ऊं** (हृदये)। **एं** हल्भ्यो बीजेभ्य नमः **ऐं** (गुह्ये)। **ओं** स्वरशक्तिभ्यो नमः **औं**(पादयोः)। **अं क्षं** कीलकाय नमः **अः**, (नाभौ)। विनियोगाय नमः (सर्वांगे)।

करहृदयादिन्यास—

	(पहली बार)	(दूसरी बार)
ॐ अं कं खं गं घं ङं आं	अंगुष्ठाभ्याम् नमः।	हृदयाय नमः।
ॐ ईं चं छं जं झं ञं ईं	तर्जनीभ्यां०।	शिरसे०।
ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं	मध्यमाभ्यां०।	शिखायै०।
ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं	अनामिकाभ्यां०।	कवचाय०।

ॐ ओँ पँ फँ वँ भँ मँ औँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। नेत्रत्रयाय०।
ॐ अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां०। अस्त्राय फट्।

ध्यान—पञ्चाशल्लिपिभिर्विभज्य मुखदोर्हृत्पद्मवक्षः स्थलां,
भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रशकलामापीनतुंगस्तनीम्।
मुद्रामक्षगुणं सुधाढ्यकलशं विद्याञ्च हस्ताम्बुजै-
र्बिभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये॥

तदनन्तर नीचे लिखे क्रम से मातृकान्यास करें—

ॐ अँ आँ इँ…[1] अः—कण्ठे।
ॐ कँ खँ गँ…ठँ—हृदये।
ॐ डँ ढँ णँ…फँ—नाभौ।
ॐ बँ भँ मँ…लँ—लिङ्गे।
ॐ वँ शँ षँ सँ…—गुह्ये।
ॐ हँ क्षँ…—भ्रुवोर्मध्ये।

ध्यान—आधारे लिंगनाभौ हृदयसरसिजे तालुमूले ललाटे,
द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के।
वासान्ते बालमध्ये डफकठसहिते कण्ठदेशे स्वराणां,
हं क्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि॥१॥
वर्णांगीं वर्णमालांगीं भारतीं भाललोचनाम्।
रत्नसिंहासनां देवीं बन्देऽहं सिद्धमातृकाम्॥२॥

इति अन्तर्मातृकान्यासः

बहिर्मातृकान्यास—

विनियोग—अस्य श्रीबहिर्मातृकान्यासस्य ब्रह्माऋषिः दैवी गायत्रीछन्दः बहिर्मातृकासरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः बिन्दवः कीलकं बहिर्मातृकान्यासजपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

ॐ ब्रह्मणे नमः शिरसि। ॐ गायत्रीछन्दसे नमो मुखे। ॐ बहिर्मा-

१—यहां अक्षरों के आगे जो… यह चिह्न है वह आगे के अक्षर तक के सभी अक्षर बोलने का संकेत है।

तृकासरस्वतीदेवतायै नमो (हृदये)। ॐ हल्भ्यो बीजेभ्यो नमो (गुह्ये)। ॐ स्वरशक्तिभ्यो नमः (पादयोः)। ॐ बिन्दुभ्यः कीलकेभ्यो नमो (नाभौ)। विनियोगाय नमः (सर्वांगे)। ॐ अं नमः (शिरसि)। ॐ आं नमः (मुखे)। ॐ इँ नमः (दक्षिणनेत्रे)। ॐ ईं नमः (वामनेत्रे)। ॐ उँ नमः (दक्षिणकर्णे)। ॐ ऊँ नमः (वामकर्णे)। ॐ ऋँ नमः (दक्षिण-नासापुटे। ॐ ॠँ नमः (वामनासापुटे)। ऊँ लुँ नमः दक्षिणकाले)। ॐ लॄँ नमः (वामकपोले)। ॐ एँ नमः (ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ)। ॐ ऐं नमः (अधोदन्तपंक्तौ)। ॐ ओं नमः (ऊर्ध्वोष्ठे)। ॐ औं नमः (अधरोष्ठे)। ॐ अं नमः (जिह्वामूले)। ॐ अः नमः (ग्रीवायाम्)। इसी प्रकार 'कँ' से 'ङः' तक 'ॐ' तथा नमः लगाकर दाहिने हाथ के कन्धे, कोहनो, मणिबन्ध, अंगुलियों के मूल पर तथा अँगुलियों के अगले भाग पर न्यास करें। फिर बायें हाथ के पाँचों भागों पर 'ॐ' तथा 'नमः लगाकर 'चँ' से 'ञ' तक; फिर दाहिने पैर और बायें पैर पर क्रम से 'टँ' से 'णँ' और तँ से नँ तक न्यास करें। फिर—ॐ पँ नमः (दक्षिण कुक्षौ)। ॐ फँ नमः (वाम कुक्षौ) ॐ बँ नमः (पृष्ठे)। ॐ भँ नमः (नाभौ)। ॐ मँ नमः (उदरे)। ॐ यँ नमः (हृदये)। ॐ रँ नमः (दक्षिणस्कन्धे)। ॐ लँ नमः (गलपृष्ठे)। ॐ वँ नमः (बामस्कन्धे)। ॐ शँ नमः (हृदयादिदक्षिणहस्तान्तम्)। ॐ षँ नमः (हृदयादिवामहस्तान्तम्)। ॐ सँ नमः (हृदयादिदक्षिणपादान्तम्)। ॐ हँ नमः (हृदयादिवामपादान्तम्)। ॐ ऊँ नमः (उदरे)। ॐ क्षँ नमः (मुखे)।[1]

ध्यान—पञ्चाशद्वर्णभेदैर्विहितवदनदोःपादयुक्कुक्षिवक्षो—
देशां भास्वत्कपर्दाकलितशशिकलामिन्दुकुन्दावदाताम्।
अक्षस्त्रक्कुम्भचिन्तालिखितवरकरां त्रीक्षणामब्जसस्था-
मच्छाकल्पामतुच्छस्तनघनभरां भारतीं तां नमामः॥

इति बहिर्मातृकान्यासः

१—यहां 'शिरसि' से 'मुखे' तक जो स्थान बताए गए हैं, उन पर तत्त्व-मुद्रा से स्पर्श करें।

माला संस्कार

जप करने के लिए जिस माला को लाया गया हो, उसका संस्कार अथवा शुद्धि करना आवश्यक है। माला के संस्कार की विधि इस प्रकार है—

सर्वप्रथम पञ्चगव्य (गाय का दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र इन पाँचों वस्तुओं) को एक पात्र में मिलाकर उसमें थोड़ी-सी कुशा (डाभ) डाल दें। फिर अपने इष्ट मन्त्र अथवा गायत्री मन्त्र से उसका प्रक्षालन करें तदनन्तर अश्वत्थ (पीपल) के पत्तों पर माला को रखकर गंगा जल से स्नान करायें।

इसके पश्चात् माला को हाथ में रखकर उसमें ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं ॐ—इन मातृका-वर्णों का न्यास करें।

फिर नीचे लिखे मन्त्रों को बोलते हुए माला की पूजा करें।

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः॥

ॐ सर्वशक्तिस्वरूपिण्यै श्रीमालायै नमः, स्नानं समर्पयामि।

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥

ॐ सर्वशक्तिस्वरूपिण्यै श्रीमालायै नमः, चन्दनं समर्पयामि।

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

ॐसर्वशक्तिस्वरूपिण्यै श्रीमालायै नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

ॐ सर्वशक्तिस्वरूपिण्यै श्रीमालायै नमः, पुष्पाणि समर्पयामि

इसके पश्चात् ऊपर लिखा हुआ 'वामदेवाय नमः' इत्यादि मन्त्र बोलकर माला को धूप लगायें, फिर नीचे लिखा हुआ मन्त्र बोलकर माला को अभिमन्त्रित करें।

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् ।

ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् ॥

सम्भव हो तो प्रत्येक मणके को एक-एक मन्त्र बोलते हुए अभिमन्त्रित करना चाहिए।

फिर 'अघोरेभ्योथ घोरेभ्य' इत्यादि ऊपर लिखे मन्त्र से माला के सुमेरु को अभिमन्त्रित करें।

अन्त में इष्टमन्त्र के जपारम्भ से पूर्व माला की प्रार्थना करें—

ॐ महामाये महामाले सर्वशक्ति-स्वरूपिणि ।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान् मे सिद्धिदा भव ॥

ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे ।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये ॥

पश्चात् माला को गोमुखी में रखकर अथवा किसी शुद्ध वस्त्र से ढककर इष्टदेव का ध्यान करते हुए यथाशक्ति जप करें।

प्रतिदिन जप की संख्या निश्चित होनी चाहिए। कम या अधिक नहीं।

जप पूरा हो जाने के पश्चात् माला को सिर से लगाकर—

ॐ त्वं माले ! सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव ।
शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यञ्च देहि मे ॥

यह बोलकर जप को ईश्वरार्पण करने के लिए नीचे लिखा वाक्य बोलकर जल छोड़ दें—

'अनेन यथासंख्यकजपाख्येन कर्मणा श्री (अमुक) देवः प्रीयताम् न मम।'

तदनन्तर समय हो तो कवच, स्तोत्र आदि का पाठ करें।

मानसोपचार पूजा-मन्त्र

ॐ लँ पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि ।
ॐ हँ आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि ।
ॐ यँ वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि ।
ॐ रँ वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि ।
ॐ वँ अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि ।
ॐ सँ सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि ।

माला जपने से पूर्व ध्यान के पश्चात् इस मानसोपचार पूजा का विधान है । जहाँ-जहाँ 'मानसोपचारैः सम्पूज्य'—लिखा हो वहाँ इन मन्त्रों से भावनापूर्वक पूजा करनी चाहिए ।

१. ॐकार की उपासना

समस्त मन्त्रों का मूल मन्त्र ओंकार है । परमात्मा का यह स्वाभाविक नाम है तथा विधाता के निःश्वास से सर्वप्रथम इस मन्त्र की ध्वनि उठी और इसी का विस्तार वेदों के रूप में आविर्भूत हुआ । अतः समस्त मन्त्रों का सेतु, सभी भाषाओं का, शास्त्रों का तथा मन्त्रों का जनक, वेदों-उपनिषदों का सार, अभयदाता, समाधि और मुक्ति की अवस्था में पहुँचाने वाला यह अपूर्व मन्त्र है । इसकी उपासना के लिए शास्त्रों में अनेक प्रयोग अधिकारी के भेद से दिखलाये गए हैं । सर्वसाधारण से लेकर महान् सिद्ध तक के लिए ओंकार की साधना का विधान है। अतः अन्य मन्त्रों की साधना से पूर्व ओंकार का जप अवश्य करना चाहिए । इसकी उपासना के कुछ प्रकार निम्नलिखित हैं—

(१) **अर्थचिन्तन-पूर्वक जप**—महर्षि पतञ्जलि ने योगदर्शन में कहा है कि—'तज्जपस्तदर्थभावनम्' उस परमात्मा के वाचक ओंकार का जप अर्थचिन्तनपूर्वक करना चाहिये । इसके अनुसार—ॐ के अ-उ-म्—इन तीन अक्षरों में ब्रह्मा, विष्णु और महेश का निवास मान

कर जप करना चाहिए। इसी प्रकार इन अक्षरों में अनेक देवों और अन्यान्य बातों का समावेश अतिविस्तार से शास्त्रों में वर्णित है।

(२) **प्राणायाम सहित जप**—प्राणायाम करते समय पूरक, कुम्भक और रेचक में ॐ का मौन उच्चारण करते हुए जप करना और उसमें उत्तरोत्तर जप संख्या बढ़ाना। अमृतनादोपनिषद् में इसका विस्तृत वर्णन है।

(३) **ध्यानमय जप**—मुण्डकोपनिषद् में बताया गया है कि—"उपनिषद् प्रतिपादित ओंकाररूप धनुष को ग्रहण कर उस पर तप द्वारा तीक्ष्ण हुए बाण को चढ़ाकर खींचें और अविनाशी ब्रह्म को लक्ष्य मानकर उसे वेध डाल।" इस प्रकार ध्यान द्वारा तेज को बढ़ाने के लिए ॐ का ध्यानमय जप आवश्यक है। इसी में सात्त्विक, राजस और तामस ध्यान भी होते हैं।

(४) **पूजात्मक जप**—ॐ परमात्मा का साक्षात् स्वरूप है। अतः प्रातः स्नानसन्ध्यादि से निवृत्त होकर शुद्ध और पवित्र स्थान पर एक चौकी पर थाली में गुलाब के पुष्पों अथवा पँखुड़ियों से ओंकार की आकृति बनाकर उसकी आवाहन से लेकर पुष्पाञ्जलि-प्रार्थना तक[1] ॐ मन्त्र जप करते हुए नित्य पूजा करें। ऐसा करने से समस्त कामनाएँ पूर्ण होती हैं। पुष्प के अभाव में कुंकुम-रोलीसे भी ओंकार लिखा जा सकता है।

(५) **निरन्तर जप**—यह तो सर्वविदित है कि हमारे श्वास-प्रश्वास से रात-दिन एक महामन्त्र का जप चलता है। उसको शास्त्र-कारों ने **हंसमन्त्र** अथवा **हंसगायत्री** कहा है जिसमें सोऽहम्-हंसः का स्वरूप निहित है। इसी सोऽहम् जप को **अजपागायत्री** कहते हैं। हमें इसका ज्ञान न होने से इसके तत्त्व का साक्षात्कार नहीं कर पाते, किंतु

१—आवाहन से पुष्पाञ्जलि-प्रार्थना तक की विधि का संक्षिप्त निर्देश ८३वें पृष्ठ में किया गया है।

सिद्धजन इसी अजपाजप से मुक्ति के द्वार उद्घाटित करते हैं। यही सोऽहम् जब वाणी का रूप धारण करता है तो 'स' और 'ह' का लोप होकर ओम् मन्त्र बन जाता है। अतः ॐ का जप निरन्तर करते रहने से सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं तथा कर्मकाण्ड की बाह्य-पद्धतियों में होनेवाली कठिनाइयों से भी बचा जा सकता है।

विशेष स्मरणीय

ॐकार को शास्त्रों में वेद का मूल बताया है तथा उसकी इसी महत्ता के कारण सर्वसाधारण को इसके स्मरण का निषेध भी किया गया है। अतः ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इसका जप कर सकते हैं, किन्तु उनका यज्ञोपवीत संस्कार एवं नित्य स्नान-सन्ध्याशील रहना आवश्यक है। महिलाओं के लिए 'ह्रीँ' बीज ही ओंकार रूप है तथा सामान्य जाति के लोग राम, कृष्ण आदि नामों को ही ओंकार मानकर जप करें तो अधिक कल्याण होगा।

(६) **लेखनात्मक जप**—जप की यह पद्धति यन्त्रों के लेखन प्रकार से समानता रखती है; जैसे पंचदशी-अंक-यन्त्र, विंशाङ्कयन्त्र और अन्य अंकों के यन्त्र आम के पटिये पर कुंकुम अथवा गुलाल आदि फैलाकर उसमें अनार की टहनी की कलम द्वारा लिखने की पद्धति है, उसी प्रकार मन्त्र के वर्णों को यन्त्र रूप मानकर कागज पर शुद्ध स्याही बनाकर सोने की निबवाली पेन से मन्त्र लिखें। प्रतिदिन नियमित संख्या में, निश्चत आसन पर, निश्चित पद्धति से इष्ट मन्त्र लिखें। इसमें मन, वचन और शरीर का संयम बना रहता है और मानसिक जप भी चलता रहता है। ओंकार का लेखन भी इस प्रकार किया जाता है।

शास्त्रीय विधि

ओंकार जप से पूर्व विनियोग और न्यास आदि इस प्रकार हैं—
विनियोग—प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः परमात्मा देवता

तत्प्रसादसिद्ध यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास—ब्रह्मर्षये नमः शिरसि । गायत्रीछन्दसे नमो मुखे । परमात्मदेवतायै नमो हृदये । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यास एवं हृदयादि न्यास ॐ मन्त्र से ही करें । यथा—

करन्यास—ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ तर्जनीभ्यां नमः । ॐ मध्यमाभ्यां नमः । ॐ अनामिकाभ्यां नमः । ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यास—ॐ हृदयाय नमः । ॐ शिरसे स्वाहा । ॐ शिखायै वषट् । ॐ कवचाय हुम् ॐ । ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ अस्त्राय फट् ।

ध्यान—ओङ्कारवाच्यमुच्चण्डं चण्डांशुसदृशप्रभम् ।
वासुदेवाभिधं ब्रह्म विश्वगर्भमुपास्महे ।।

इसके पश्चात् मानसोपचार पूजन करके जप करें ।

२-गणपति उपासना के मन्त्र

महागणपति की उपासना सभी प्रकार के मन्त्रों का जप करने से पूर्व सामान्य रूप से तथा इष्टसिद्धि, विघ्ननाश, द्रव्य प्राप्ति आदि के लिए अत्यन्त उपयोगी मानी गई है । शास्त्रों में गणपति का सूक्ष्म रूप ॐकार को ही माना गया है और गणपति का सूक्ष्म यन्त्रात्मक रूप स्वस्तिक[1] को बतलाया है । मन्त्रों में गणपति के बीज मन्त्र हैं **'गं'** और **'ग्लौं'**—इन बीज मन्त्रों में ॐ जोड़कर, अथवा ॐ ह्रीं जोड़कर, गणपतये नमः अन्त में लगाकर जप करने का विधान है। अन्य मन्त्र इस प्रकार हैं—

(१) ॐ **वक्रतुण्डाय हुं** । एक लक्ष जपकर पुरश्चरणपूर्ति करें ।

(२) गणपति नवार्ण (उच्छिष्ट गणपति) मन्त्र—

ॐ गं हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा । सवा लाख जप करें ।

१—हमारे अन्य प्रकाशन 'यन्त्र-शक्ति' में इस सम्बन्ध में सचित्र विवेचन किया गया है तथा यन्त्रों के विभिन्न पक्षों की स्पष्टता के साथ अनेक उपयोगी यन्त्रों का संग्रह उसमें प्रस्तुत किया गया है । —सम्पादक

(३) शक्तिविनायक मन्त्र—ॐ ह्रीं ग्रीं ह्रीं ।

(४) सर्वकामना-सिद्धि मन्त्र—ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा अथवा—ॐ नमः उच्छिष्टगणेशाय हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा ।

(५) लक्ष्मीगणेश मन्त्र—ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।

(६) त्रैलोक्यमोहन गणेश मन्त्र—ॐ वक्रतुण्डायैकदंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।

(७) हरिद्रागणपति मन्त्र—हुं गं ग्लौं हरिद्रागणपतये वर वरद सर्वजनहृदयं स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा ।

(८) गणपति-गायत्री—ॐ एकदंष्ट्राय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ।

(९) क्षिप्रगणपति मन्त्र—ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गणपतये सर्वकार्यसिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

(१०) एकाक्षरी गणपति मन्त्र—ॐ गँ ॐ ।

(११) **गणेश्वरकल्प मन्त्र**

ॐ गाँ गीं गूँ गैं गौं गः ।

विनियोग—ॐ अस्य श्रीगणपतिमन्त्रस्य गणो नाम ऋषिः विघ्नेश्वरो देवता गँ बीजं ॐ शक्तिः श्रीगणपतिप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

मूल मन्त्र के एक-एक अक्षर से करन्यास और अंगन्यास करें । बाद में गणपति की पूजा करके प्रतिदिन निश्चित जप करें । हवन में 'ॐ गँ गणपतये स्वाहा'—मन्त्र बोलते हुए घी और गूगल का प्रयोग करें । सात लाख मन्त्र जप और दशांश हवनादि से गणपति प्रसन्न होकर साधक को यथेच्छ वरदान देते हैं ।

गणपति के अन्य मन्त्रों की आराधना में विनियोग, ऋषिन्यास, करन्यास, हृदयादिन्यास और ध्यान इस प्रकार करें ।

विनियोग—ॐ अस्य श्रीगणपतिमन्त्रस्य गणकऋषिः निचृद् गायत्रीछन्दः श्रीगणपतिर्देवता गणपतिप्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

न्यास—ॐ गणकऋषये नमः—शिरसि (मस्तक का तत्त्वमुद्रा से स्पर्श करें)।

ॐ निचृद्गायत्रीछन्दसे नमो मुखे—(मुख का स्पर्श करें)।
ॐ श्रीगणपतिदेवतायै नमो हृदये—(हृदय का स्पर्श करें)।
ॐ विनियोगाय नमः करसम्पुटे—(दोनों हथेलियों के आगे-पीछे स्पर्श करें)।

करन्यास—ॐ गाँ अंगुष्ठाभ्यां नमः—(तर्जनी द्वारा अँगूठे के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करें)।

ॐ गीं तर्जनीभ्यां नमः—(अँगूठे से तर्जनी के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करें।)

ॐ गूँ मध्यमाभ्यां नमः—(मध्यमा पर पूर्ववत्)
ॐ गैं अनामिकाभ्यां नमः—(अनामिका पर पूर्ववत्)
ॐ गौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः—(कनिष्ठिका पर पूर्ववत्)
ॐ गः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः—(हथेलियों पर परस्पर स्पर्श करें)।

हृदयादिन्यास—ॐ गाँ हृदयाय नमः—(हृदय का स्पर्श करें)
ॐ गीं शिरसे स्वाहा— सिर का ,,)
ॐ गूँ शिखायै वषट्—(शिखा का ,,)
ॐ गैं कवचाय हुम्—(दोनों भुजाओं का ,,)
ॐ गौं नेत्रत्रयाय वौषट्—(दोनों नेत्र तथा आँखों के बीच के भाग का स्पर्श करें)

ॐ गः अस्त्राय फट्—(ताली बजाएँ)।

ध्यान—

चतुर्भुजं रक्ततनुं त्रिनेत्रं, पाशाङ्कुशौ मोदकपात्रदन्तौ ।
करैर्दधानं सरसीरुहस्थं गणाधिनाथं शशिचूडमीडे ।।[1]

३-लघुमृत्युञ्जय और महामृत्युञ्जय मन्त्र

रोग-निवृत्ति के लिए आस्तिक समाज में भगवान् शिव की उपासना प्रसिद्ध है। ब्राह्मणों द्वारा रोगशान्ति के लिए महामृत्युञ्जय जप का निर्देश है, ज्योतिष शास्त्रों में अनिष्ट ग्रह-शान्ति के लिए भी इसी प्रकार का सर्वत्र उल्लेख प्राप्त होता है।

महामृत्युञ्जय-मन्त्र के ६ रूप यहाँ दिये जा रहे हैं, इनमें से किसी का भी जप करना अथवा करवाना अत्यन्त श्रेयस्कर है। मारकेश की दशा आदि ग्रह-पीड़ा से यह मन्त्र निश्चित ही मुक्ति दिलाता है।

जप मन्त्र

(१) ॐ जूँ सः—(तीन लाख जप, पुरश्चरण।)

(२) ॐ हौँ जूँ सः—(चार लाख जप, पुरश्चरण।)

(३) ॐ जूँ सः मां पालय पालय—(अमृतमृत्युञ्जय मन्त्र) १२५ हजार जप द्वारा पुरश्चरण करें।

(४) ॐ हौं जूँ सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे। सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। ॐ स्वर्भुवः भूः ॐ सः जूँ हौं ॐ

(५) ॐ हौं ॐ जूँ ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय

---

१. इसी प्रकार सभी मन्त्रों के १.—विनियोग, २.—ऋषिन्यास, ३—करन्यास, ४—हृदयादिन्यास और ५.—ध्यान ऐसे पांच अंग होते हैं जिनका यथासम्भव पालन करें। विस्तारभय से प्रस्तुत पुस्तक में केवल प्रारम्भिक मार्गदर्शन किया है। अन्य जानकारी योग्य विद्वानों से प्राप्त कर लें।

माऽमृतात् ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूँ ॐ हौं ॐ ।

उपर्युक्त ४ अथबा ५ संख्या वाले मन्त्र का जप करते समय यह ध्यान करते रहें कि मैं भगवान् शिव की पूजा कर रहा हूँ जोकि सुगन्ध और पुष्टि के वर्धक हैं। मेरी उनसे यह प्रार्थना है कि वे मुझे खरबूजे के फल के समान मृत्यु के बन्धन से छुड़ाएँ, किन्तु अमृत से नहीं।

(६)मृतसञ्जीवनी विद्या (शुक्राचार्यजी द्वारा उपासित)

ॐ हौं जूँ सः ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ॐ सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ॐ भर्गो देवस्य धीमहि ॐ ऊर्वारुकमिव बन्धनाद् ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ मृत्योर्मक्षीय माऽमृतात् ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूँ हौं ॐ ।

असाध्य रोग से निवृत्ति पाने के लिए इस मन्त्र का जप करने से तथा शिवलिंग पर मट्ठे से अभिषेक करने पर शीघ्र आराम मिलता है।

विनियोग (प्रथम संख्या वाले मन्त्र का)

अस्य श्रीलघुमृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवशिष्ठा ऋषयो गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि श्रीसदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रो देवता मम सर्वरोगनिवारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

वामदेवकहोलवशिष्ठेभ्यो ऋषिभ्यै नमः—शिरसि।
गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमो—मुखे।
श्रीसदाशिवमृत्युञ्जयरुद्रदेवतायै नमो—हृदि।
ॐ बीजाय नमो—गुह्ये ।
सः सक्तये नमः—पादयोः।
जूँ कीलकाय नमो—नाभौ।
विनियोगाय नमः—सर्वाङ्गे।

करन्यास

ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
जूँ तर्जनीभ्यां नमः ।
सः मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ अनामिकाभ्यां नमः ।
जूँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

षडङ्गन्यास

ॐ हृदयाय नमः ।
जूँ शिरसे स्वाहा ।
सः शिखायै वषट् ।
ॐ कवचाय हुँम् ।
जूँ नेत्रत्रयाय वौषट् ।
सः अस्त्राय फट् ।

ध्यान—

हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः,
सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वाङ्के सुकुम्भौ करौ ।
अक्षस्रङ् मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्धस्थचन्द्रस्रवत्-
पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं मृत्युञ्जयं शङ्करम् ॥

४—भैरव उपासना मन्त्र

तान्त्रिक कर्मों की सिद्धि के लिए भैरवनाथ की कृपा प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि इनकी कृपा के बिना मन्त्रों की साधना में विघ्न आते रहते हैं। अतः सभी प्रकार की साधना में भैरव का स्मरण आवश्यक है। विशेषतः टाइफाइड या फोड़े आदि के रोग तथा शीघ्रतापूर्वक किसी कार्य की सिद्धि के लिए नीचे बताई हुई पद्धति से विनियोग आदि करके मन्त्रजप करें—

मन्त्र—(१) ॐ ह्रीँ बं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ ।

(२) ॐ ह्रीँ वटुकाय क्ष्रौं क्ष्रौं आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीँ वटुकाय स्वाहा ।

(३) ॐ हं षं नं गं कं सं खं महाकालभैरवाय नमः ।

इस मन्त्र द्वारा जप करने से अरिष्ट निवारण होता है। २१ हजार जप करें।

(४) ॐ क्ष्त्रौ क्ष्त्रों स्वाहा।

शान्ति प्राप्ति के लिए एक-एक माला प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल जप करें।

(५) वटुकगायत्री—ॐ ह्राँ ह्रौँ नमः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ ह्रोँ वटुकाय विद्महे आपदुद्धारणाय धोमहि तन्नो वटुकः प्रचोदयात् ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ नमः ह्रोँ ह्राँ ॐ।

विनियोग

ॐ अस्य श्रीआपदुद्धारकश्रीवटुकभैरवमन्त्रस्य बृहदारण्यको नाम ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः श्रीवटुकभैरवो देवता ह्रोँ बीजं स्वाहा शक्तिः भैरवः कीलकं मम(अमुक) कार्यसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास

बृहदारण्यक ऋषये नमः (शिरसि)। त्रिष्टुप्छन्दसे नमः (मुखे)। श्रीवटुकभैरवदेवतायै नमः (हृदये)। ह्रीँ बीजाय नमः (गुह्ये)। स्वाहा शक्तये नमः (पादयोः)। भैरवः कीलकाय नमः (नाभौ)। विनियोगाय नमः (सर्वाङ्गे)।

कर एवं हृदयादि न्यास

(पहली बार)	(दूसरी बार)
ॐ ह्रां वां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः	—हृदयाय नमः।
ॐ ह्रीँ वीं तर्जनीभ्यां नमः	—शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रूँ वूं मध्यमाभ्यां नमः	—शिखायै वषट्।
ॐ ह्रैँ वैं अनामिकाभ्यां नमः	—कवचाय हुम्।
ॐ ह्रौं वौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः	—नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ह्रः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	—अस्त्राय फट्।

ध्यान—

शान्तं पद्मासनस्थं शशिमुकुटधरं मुण्डमालं त्रिनेत्रं,
शूलं खड्गं च वज्रं परशुमुसलके दक्षिणाङ्गे वहन्तम् ।
नागं घण्टां कपालं नलिनकरयुतं सांकुशं पाशमध्ये,
नानालङ्कारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं नौमि बालं शिवाख्यम् ।।

छः वारों में जप के प्रयोग

'रुद्रयामल तन्त्र' में भैरव मन्त्र के जप द्वारा विभिन्न कार्यों की सिद्धि के लिए छह वारों के विशेष प्रयोग दिए हैं जो बहुत ही उपयोगी हैं। अतः उन्हें यहाँ दिया जा रहा है ।

रविवार (स्तम्भन प्रयोग)—रविवार के दिन प्रातः काल श्मशान में जाकर मूल मन्त्र—'ॐ **ह्रीं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं ॐ स्वाहा**' का १०,००० जप करें तथा रात्रि में जायफल, जावित्री और कनेर के फूलों को घृत में मिलाकर दशांश हवन करें तो शत्रु स्तम्भन हो ।

सोमवार (मोहन प्रयोग)—सोमवार को मध्याह्न में कूप-जल से स्नान कर कुएँ के ऊपर पानी खींचने के स्थान (गूणी-ढाना) पर बैठ करके मूल मन्त्र का १०,००० जप करें तथा घृत, भैंस के दूध का दही और चीनी तीनों को मिलाकर दशांश हवन करे। इस प्रकार किए गए हवन की भस्म का तिलक करने से मोहन होता है ।

मंगलवार (मारण-शत्रु-नाश प्रयोग)—मंगलवार की अर्द्धरात्रि में चौराहे पर मूलमन्त्र का १०,००० जप करें और घृत, खीर, लाल चन्दन व स्त्री के केश मिलाकर दशांश हवन करें ।

(ऐसे उग्र कर्म नहीं करने में ही कल्याण है, क्योंकि शत्रु के अन्य प्रयोग से कष्ट होने की सम्भावना बनी रहती है ।)

बुधवार (आकर्षण प्रयोग)—बुधवार को चार घड़ी सूर्य रहे तब सूने घर में जाकर मूल मन्त्र का १०,००० जप करें और घृत,

चीनी, सनैली के फूल अथवा कनेर के फूल तथा बिल्व का फल इन सबको मिलाकर दशांश हवन करें।

गुरुवार (वशीकरण प्रयोग)—बृहस्पतिवार को प्रातःकाल सूर्योदय के समय नदी के किनारे जाकर मूल मन्त्र का १०,००० जप करें तथा घृत, आँवला और बिल्व फल को एक साथ मिलाकर दशांश हवन करें।

शुक्रवार (उच्चाटन)—शुक्रवार को सायंकाल के समय वट वृक्ष के नीचे बैठकर मूल मन्त्र का १०,००० जप करें तथा घृत, दूध, दही ईख का रस, गोमूत्र और खीर मिलाकर दशांश हवन करें।

५-महालक्ष्मी उपासना मन्त्र

भगवती महालक्ष्मी की उपासना केवल द्रव्य प्राप्ति के लिए ही नहीं की जाती है। अपितु समस्त देवी उपासनाओं के मूल रूप में भी की जाती है। भारत के विभिन्न प्रान्तों में व्याप्त श्रीविद्या की उपासना भी इसी उपासना का रूप है।

इसलिए साधक को चाहिए कि यदि वह द्रव्य की लालसा नहीं रखता हो तब भी महालक्ष्मी की उपासना से विमुख न होवे। भगवती भुवनेश्वरी आदि नाम भी महालक्ष्मी के ही हैं तथा महालक्ष्मी का प्रधान बीजमन्त्र 'श्रीं' है जिसका प्रयोग सर्वत्र किया जाता है।

लक्ष्मीप्राप्ति के मन्त्र

(१) **लक्ष्मी गायत्री**—ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।

(२) **ज्येष्ठा लक्ष्मी**—ॐ रक्तज्येष्ठायै विद्महे नीलज्येष्ठायै धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।

अथवा—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्येष्ठलक्ष्मी-स्वयम्भुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नमः।

(३) **महालक्ष्मी मन्त्र**—ॐ श्रीं श्रीं कमले कमलालये

प्रसीद प्रसीद श्रीँ ह्रीँ ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

इस मन्त्र का कार्तिक मास में सवा लाख जप करें।

(४) **लक्ष्मी मन्त्र**—ॐ ह्रीँ श्रीँ महालक्ष्मि सर्वकामप्रदे सर्वसौभाग्यदायिनि अभिमतं प्रयच्छ सर्वसर्वगते सुरूपे सर्वदुर्जयविमोचिनि ह्रीँ सः स्वाहा।

(५) **धनदा लक्ष्मी**—ॐ नमो धनदायै स्वाहा। इस मन्त्र का एक लाख जप करें।

(६) **लक्ष्मीयक्षिणी**—ॐ ऐँ लक्ष्मी श्रीँ कमलधारिणी कलहंसी स्वाहा। लाल कनेर के पुष्पों से लक्ष्मी की पूजा और उन्हीं से दशांश हवन करें।

(७) **पद्मावती विद्या**—ॐ ह्रीँ पद्मावत्यै नमः।

(८) **लक्ष्मी-लघुप्रयोग**—ॐ अस्य श्रीकामबीजमन्त्रस्य विष्णुऋषिः उष्णिग् छन्दः श्रीमहालक्ष्मीदेवता क्लीँ बीजँ क्लीँ शक्तिः क्लीँ कीलकं श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास—विष्णुऋषये नमः शिरसि। उष्णिग्छन्दसे नमो मुखे। श्रीमहालक्ष्मीदेवतायै नमो हृदये। क्लीँ बीजाय नमो गुह्ये। क्लीँ शक्तये नमः पादयोः। क्लीँ कीलकाय नमौ नाभौ। क्लीँ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर एवं हृदयादि न्यास—ॐ क्लीँ बीजमन्त्र से करें।

मूल मन्त्र—ॐ क्लीँ नमः—से सारे अंग पर घुमायें तथा दसों दिशाओं में मन्त्र बोलते हुए नमस्कार करें।

ध्यान—**अक्षस्त्रक्परशूगदेषुकुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां,**
दण्डं शक्तिमसिं च चर्मजलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां,
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥

इस प्रकार ध्यान करके मानसपूजापूर्वक जप करें।

जप मन्त्र—ॐ क्लीँ नमः।

६-गायत्री उपासना मन्त्र

भारतीय जन-जीवन में सर्वत्र व्याप्त वेद-माता गायत्री की उपासना अति प्रचलित है। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य समुदाय में तो कुछ समय पूर्व उसकी उपासना अनिवार्य मानी जाती रही है। यत्र-तत्र गायत्री उपासना के लिए अनेक पुस्तकें भी मुद्रित हुई हैं। अतः यहाँ सामान्य रूप से कुछ मन्त्र प्रयोग दे रहे हैं—

जप मन्त्र

१. ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

२. ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ॐ भर्गो देवस्य धीमहि ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ नमः।

३. ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ह्रीँ तत्सवितुर्वरेण्यं ॐ श्रीँ भर्गो देवस्य धीमहि ॐ क्लीँ धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ नमः।

४. ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ऐँ तत्सवितुर्वरेण्यं ॐ क्लीँ भर्गो देवस्य धीमहि ॐ सौः धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ नमः।

५. ॐ श्रीँ ह्रीँ ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ऐँ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ॐ क्लीँ ॐ भर्गोदेर्वस्य धीमहि ॐ सौः ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ह्रीँ श्रीँ ॐ।

गायत्री जपने का जिसे अधिकार प्राप्त नहीं है वे नीचे लिखे मन्त्र का जप करें।

६. ह्रीँ यो देवः सविताऽस्माकं मनः प्राणेन्द्रियक्रियाः।
प्रचोदयति तद्भर्गं वरेण्यं समुपास्महे॥

१—जिन मन्त्रों के विनियोग आदि नहीं लिखे गए हैं उनका क्रम सामान्य विधि के अनुसार ही रखें।

शताक्षरी गायत्री

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

गायत्री जप के पूर्व इस मन्त्र का एक बार जप करने से भी बड़ा लाभ होता है तथा मन्त्र में चेतना आ जाती है।

सम्पुट प्रयोग

गायत्री मन्त्र के आसपास कुछ बीज मन्त्रों का सम्पुट लगाने का भी विधान है जिनसे विशिष्ट कार्यों की सिद्धि होती है। बीज मन्त्र इस प्रकार हैं—

१. ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं—का सम्पुट लगाने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।
२. ॐ ऐं क्लीं सौः—का सम्पुट लगाने से विद्या प्राप्ति होती है।
३. ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं—का सम्पुट लगाने से सन्तान प्राप्ति, वशीकरण और मोहन होता है।
४. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं—इस सम्पुट के प्रयोग से शत्रु उपद्रव, समस्त विघ्न-बाधाएँ और संकट दूर होकर भाग्योदय होता है।
५. ॐ ह्रीं —इस सम्पुट के प्रयोग से रोगनाश होकर सब प्रकार के ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।
६. ॐ आं ह्रीं क्लीं—इस सम्पुट के प्रयोग से पास के द्रव्य की रक्षा होकर उसकी वृद्धि होती है तथा इच्छित वस्तु की प्राप्ति होती है।

इसी प्रकार किसी भी मन्त्र की सिद्धि और विशिष्ट कार्य की

शीघ्र सिद्धि के लिए भी दुर्गासप्तशती के मन्त्रों के साथ सम्पुट देने का भी विधान है । गायत्रीमन्त्र समस्त मन्त्रों का मूल है तथा यह आध्यात्मिक शान्ति देनेवाला है ।

गायत्री-मन्त्र जप विधि

विनियोग—ॐ तत्सवितुरित्यस्य गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिः गायत्री छन्दः सविता देवता अग्निर्मुखं ब्रह्मा शिरः विष्णुर्हृदयं रुद्रो ललाटं पृथ्वी कं योनिः त्रैलोक्यं चरणौ वरेणीति बीजं यमिति शक्तिः यादिति कीलकम् सकलपापक्षयार्थे जपे विनियोगः

ऋष्यादिन्यास—ॐ विश्वामित्रर्षये नमः (शिरसि ।)

ॐ गायत्रीच्छन्दसे नमः (मुखे ।)
ॐ सवितृदेवतायै नमः (मुखे ।)
ॐ वरेणीति बीजाय नमः (गुह्ये ।)
ॐ यमिति शक्तये नमः (पादयोः ।)
ॐ यादिति कोलकाय नमः (नाभौ ।)

करन्यास—ॐ भूः अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ भुवः तर्जनीभ्यां नमः ॐ स्वः मध्यमाभ्यां नमः । ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ भर्गो देवस्य धीमहि कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ धियो यो न प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

अंगन्यास—ॐ भूः हृदयाय नमः । ॐ भुवः शिरसे स्वाहा । ॐ स्वः शिखायै वषट् । ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं कवचाय हुम् । ॐ भर्गो देवस्य धीमहि-नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ धियो यो नः प्रचोदयात्-अस्त्राय फट् ।

ध्यान—मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै—
युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वात्मवर्णात्मिकाम् ।
गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशाः शुभ्रं कपालं गुणं,
शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ॥

७-सरस्वती उपासना के मन्त्र

जीवन की अनेक आवश्यकताओं में विद्या-प्राप्ति भी एक महत्त्व-पूर्ण आवश्यकता है। विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती है। सरस्वती की उपासना से बुद्धि में तीव्रता आती है। पढ़ा हुआ विषय याद रहता है। सूक्ष्मचिन्तन की दृष्टि मिलती है। आज-कल बहुत-से बालक पढ़ने से जी चुराते हैं या परीक्षा में असफल हो जाने पर हताश हो जाते हैं। यदि उन्हें इन मन्त्रों में से एक का नियमित जप करवाया जाए तो वे अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे।

१. ॐ ह्रीँ ऐँ ह्रीँ सरस्वत्यै नमः।
२. ॐ ह्रीँ ह्सौ सरस्वत्यै नमः।
३. ॐ ह्रीँ वेदमातृभ्यः स्वाहा।
४. ॐ ऐँ नमः।
५. ॐ ऐँ क्लीँ सौः।
६. ॐ ऐँ हं ऐँ हं वद वद स्वाहा।

इन मन्त्रों में से किसी एक का १ लाख २५ हजार जप करके पंचमेवा अथवा हवन सामग्री द्वारा दशांश जप तर्पणादि करें।

वागीश्वर मन्त्र—'ऐँ क्लीँ सौः वद वद वाग्वादिनि स्वाहा'।

विनियोग—अस्य श्रीवागीश्वरीमन्त्रस्य कण्वऋषिः विराट् छन्दः वागीश्वरी देवता तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास—ॐ कण्वऋषये नमः शिरसि। ॐ विराट्छन्दसे नमो मुखे। ॐ वागीश्वरीदेवतायै नमो हृदये। ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर-हृदयादिन्यास—एँ, क्लीँ, सौः, क्लीँ, ऐँ।
इन छः बीजों से छः करन्यास और छः हृदयन्यास करें।

ध्यान—अमलकमलसंस्था लेखनीपुस्तकोद्यत्-
करयुगलसरोजा कुन्दमन्दारगौरा।

धृतशशधरखण्डोल्लासिकोटीरपीठा,
भवतु भवभयानां भङ्गिनी भारती नः ।।

विद्यागोपाल मन्त्र

विनियोग—अस्य श्रीविद्याप्रदविद्यागोपालमन्क्षत्रस्य श्रीनारद-ऋषिरनुष्टुप् छन्दः श्रीकृष्णो देवता श्रीविद्यागोपालप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

मूलमन्त्र से कर एवं हृदयादिन्यास करें ।

ध्यान--दिव्योद्याने विवस्वत्प्रतिममणिमये मण्डपे योगपीठे,
मध्ये यः सर्ववेदान्तमयसुरतरोः सन्निषण्णो मुकुन्दः ।
वेदैः कल्पद्रु रूपैः शिखरिशतसमालम्बिकोशैश्चतुर्भि,
र्न्यायैस्तर्कैः पुराणैः स्मृतिभिरभिवृतस्तादृशैश्चामराद्यैः ।। १ ।।
दद्याद्बिभ्रत्कराब्जैररिदरमुरलीपुष्पबाणेक्षुचापान्,
अक्षस्त्रक्पूर्णकुम्भौ स्मरललितवपुर्दिव्यभूषाङ्गरागः ।
व्याख्यां वाचे वितन्वन् स्फुटरुचिरपदां वेणुना विश्वमात्रे,
शब्दब्रह्मोद्भवेन श्रियमरुणरुचिर्बल्लवीवल्लभोनः ।। २ ।।

मूलमन्त्र--कृष्ण कृष्ण महाकृष्ण सर्वज्ञ त्वं प्रसीद मे ।
रमारमण विश्वेश, विद्यामाशु प्रयच्छ मे ।।

श्रीकृष्ण की पूजा करके तुलसी की माला से एक लाख जप करने से अवश्य ही विद्या प्राप्त होती है ।

क्रमदीपिका में वर्णित गोपाल मन्त्र

विनियोग—अस्य श्रीविद्याप्रदगोपालमन्त्रस्य श्रीनारदऋषिः गायत्री छन्दः श्रीकृष्णो देवता श्रीगोपालप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ।

कर एवं हृदयादि न्यास

ऐं क्लीं कृष्णाय—अंगुष्ठाभ्यां० । हृदयाय० ।
ह्रीं गोविन्दाय--तर्जनीभ्यां० । शिरसे० ।

श्रीँ गोपीजन—मध्यमाभ्यां० । शिखायै० ।

वल्लभाय—अनामिकाभ्यां० । कवचाय० ।

स्वाहा सौः—कनिष्ठिभ्यां० । नेत्रत्राय० ।

(मूलमन्त्र सम्पूर्ण)—करतलकरपृष्ठाभ्यां०।। अस्त्राय फट् ।

ध्यान—वामोर्ध्व हस्ते दधतं, विद्यासर्व स्वपुस्तकम् ।
अक्षमालाञ्च दक्षध्वें, स्फाटिकीं मातृकामयीम् ।।१।।
शब्दब्रह्ममये वेणुमधः पाणिद्वयेरितम् ।
गायन्तं पीतवसनं श्यामलं कोमलच्छविम् ।।२।।
बर्हि-वर्हकृतोत्तंसं सर्वेशं सर्व वेदिभिः ।
उपासितं मुनिगणैर्ध्यायामि श्रीहरिं सदा ।।३।।

मूलमन्त्र—ऐँ क्लीँ कृष्णाय ह्रीँ गोविन्दाय श्रीँ गोपीजन-
वल्लभाय स्वाहा सौः ।

इस मन्त्र के चार लाख जप करें । पुरश्चरण के लिए घृत, शहद और चीनी मिलाकर दशांश हवन करें । इस मन्त्र के जप का फल लिखते हुऐ 'क्रम दीपिका' में कहा गया है कि--

योऽस्मिन् निष्णातधीर्मन्त्री वर्तते ववत्रगह्वरात् ।
गद्यपद्यमयी वाणी तस्य गङ्गाप्रवाहवत् ।।
सर्व वेदेषु शास्त्रेषु सङ्गीतेषु च पण्डितः ।
सवित्रीं परमां लब्ध्वा चान्ते भूयात् परं पदम् ।।

अर्थात—जो साधक उपर्युक्त विधान के अनुसार जप करता है, उसके मुँह से गंगा के प्रवाह के समान गद्य और पद्य रूपी वाणी निकलती है। सभी वेद, शास्त्र और संगीत में प्रवीणता प्राप्त करके अन्त में परम ज्ञानी बनकर वह परम पद को प्राप्त करता है ।

बगलामुखी-मन्त्र प्रयोग

सब प्रकार के अभीष्ट की सिद्धि एवं विशेषत: मुकदमे में विजय प्राप्त करने, शत्रु का निवारण करने आदि के लिए बगलामुखी देवी

से बढ़कर अन्य कोई देवता नहीं है। इस देवी मन्त्र की उपासना के लिए साधक को पीले वर्ण के वस्त्र आसन और हल्दी की गाँठ की पीले डोरे में गूँथी हुई माला का प्रयोग करना चाहिए। यथा—

विनियोग—ॐ अस्य श्रीबगलामुखीमन्त्रस्य नारदऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः बगलामुखी देवता ह्लीँ बीजं, स्वाहा शक्तिः हलरीं कीलकं ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास—नारदऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप्च्छदसे नमो मुखे। बगलामुखीदेवतायै नमो हृदि। ह्लीँ बीजाय नमो गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। हलरीं कीलकाय नमो नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

कर एवं हृदयादिन्यास--

ॐ ह्लीँ अंगुष्ठाभ्यां ०।	हृदयाय ०।
बगलामुखि तर्जनीभ्यां ०।	शिरसे ०।
सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां ०।	शिखायै ०।
वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां ०।	कवचाय ०।
जिह्वा कीलय कीलय कनिष्ठिकाभ्यां ०।	नेत्रत्रयाय ०।
बुद्धि नाशय ह्लीँ ॐ स्वाहा। करतलकरपृष्ठाभ्यां ०।	अस्त्राय ०।

ध्यान--**मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डपरत्नवेद्यां,**
सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बराभरणमाल्यविभूषिताङ्गीं,
देवीं स्मरामि घृतमुद्गरवैरिजिह्वाम्॥

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं, वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन, पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि॥

मन्त्र--(१) ॐ ह्लीँ बगलामुखि! सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पद स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धि नाशय ह्लीँ ॐ स्वाहा।

(२) अत्यधिक शत्रु का संकट आने पर, दरिद्रता दूर करने के लिए तथा इच्छित कार्य की सिद्धि के लिए बगलामुखी का नीचे

लिखा हुआ ब्रह्म स्त्र प्रयोग भी शीघ्र सिद्धि देनेवाला है—

विनियोग--ॐ अस्य श्रीबगलामुखीब्रह्मास्त्रमन्त्रस्य भैरवऋषिर्विराट् छन्दः श्रीबगलामुखी देवता क्लीँ बीजं, ऐँ शक्तिः श्रीँ कीलकं ममाभीष्टसिद्धये (अथवा अमुककार्यसिद्धये) जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास—भैरवऋषये नमः शिरसि। विराट्छन्दसे नमो मुखे। बगलामुखीदेवतायै नमो हृदि। क्लीँ बीजाय नमो गुह्ये। ऐँ शक्तये नमः पादयोः। श्रीं कीलकाय नमो नभौ। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

कर एवं हृदयादिन्यास--

ॐ ह्लां अंगु०। हृदयाय ०। ॐ ह्लीँ तर्ज ०। शिरसे ०।
ॐ ह्लूँ मध्यमा ०। शिखायां ०। ॐ ह्लैँ अना०। कवचाय ०।
ॐ ह्लौँ कनि ०। नेत्र ०। ॐ ह्लः करतल ०। अस्त्राय ०।

ध्यान--सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं,
हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्क-मुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम्।
हस्तैर्मुद्गरपाशबद्धरसनां संबिभ्रतीं भूषणै----
र्व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये॥

मन्त्र—ॐ ह्लीँ ऐँ श्रीँ क्लीँ श्रीबगलानने! मम रिपून् नाशय नाशय ममैश्वर्याणि देहि देहि शीघ्रं मनोवाञ्छितं साधय साधय ह्लीँ स्वाहा।

१—बगलामुखी का नाम वल्गामुखी है, यह अथर्वसूत्र-ज्ञानतन्तुओं की अधिष्ठात्री देवी है तथा दश महाविद्याओं की उपासना में बगलामुखी का बड़ा महत्त्व है तथा इसकी उपासना के सम्बन्ध में पीताम्बरा पीठ. दतिया, (जिला झांसी) मध्यप्रदेश से भी ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं उन्हें देखें। —लेखक

: २ : दुर्गा सप्तशती के कुछ सिद्ध सम्पुट मन्त्र

भारतीय आस्तिक समाज में दुर्गा-सप्तशती का नित्य पाठ अथवा नवरात्र-पाठ बहुत आदर से किया जाता है। जब भी कोई संकट आता है अथवा किसी विशेष कार्य की सिद्धि अपेक्षित होती है, तो नवचण्डी, शतचण्डी और सहस्रचण्डी पाठ करवाये जाते है। इन पाठों में अधिक शक्ति लाने के लिए विभिन्न मन्त्रों, बीज मन्त्रों या श्लोक मन्त्रों के सम्पुट लगाकर पाठ करने-कराने का विधान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, अतः यहाँ कुछ मन्त्रों का संकेत दिया जाता है। इनका प्रयोग प्रति मन्त्र-पद्य के आदि-अन्त में पाठ करने से सम्पुट होता है। वैसे इनके आदि अन्त में ॐ ह्रीं अथवा केवल ह्रीं बीज जोड़कर जप भी किया जा सकता है।

(१) सर्वविध मंगल-प्राप्ति के लिए—

सर्वमङ्गलमांगल्ये, शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

(२) शक्ति-प्राप्ति के लिए—

सृष्टिस्थिति विनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोस्तु ते॥

(३) विपत्ति नाश के लिए—

शरणागत-दीनार्त-परित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि, नारायणि नमोऽस्तु ते॥

(४) बाधाओं से मुक्ति पाने के लिए--

सर्वाबाधा-विनिर्मुक्तो, धनधान्यसमन्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन, भविष्यति न संशयः॥

(५) भयनाश के लिए—

(क) सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति-समन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि ! दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥

(ख) एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्।
पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते॥

(ग) ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम्।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते॥

(६) रक्षा पाने के लिए—

शूलेन पाहि नो देवि ! पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि, चापज्यानिःस्वनेन च॥

(७) महामारी विनाश के लिए—

जयन्ती मंगला काली, भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥

(८) आरोग्य और सौभाग्य प्राप्ति के लिए—

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि, यशो देहि द्विषो जहि॥

(९) सुलक्षणा पत्नी प्राप्ति के लिए—

पत्नीं मनोरमां देहि, मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्॥

(१०) पाप नाश के लिए—

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि ! पापेभ्यो नः सुतानिव॥

(११) भुक्ति-मुक्ति प्राप्ति के लिए—

विधेहि देवि कल्याणं, विधेहि परमां श्रियम् ।
रूपं देहि जयं देहि, यशो देहि द्विषो जहि ।।

(१२) अधिकारी आदि को अनुकूल बनाने के लिए—

ॐक्लीं—ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ।। क्लीं ॐ

(१३) स्वर्ग और मुक्ति प्राप्ति के लिए—

सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते ।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ।।

श्रीमार्कण्डेय पुराण के अन्तर्गत देवी माहात्म्य में श्लोक, अर्द्ध-श्लोक तथा उवाच मन्त्रों को मिलाकर ७०० मन्त्रों के संकलन से **दुर्गासप्तशती** की रचना हुई है। यह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष-चारों पुरुषार्थों को प्रदान करने वाली है। जो जिस भाव और जिस कामना से सप्तशती का पाठ करता है, उसे उसी भावना और कामना के अनुसार निश्चय ही फल सिद्धि मिलती है।[1]

वर प्राप्ति के मन्त्र

जिस कन्या का विवाह समय पर नहीं होता हो तथा वर की प्राप्ति के लिए माता-पिता परेशान हो रहे हों, वे कन्या द्वारा अपनी परम्परा के अनुसार नीचे लिखे मन्त्रों में से किसी एक का जप कर-वाना आरम्भ कर दें। अवश्य सिद्धि प्राप्त होगी।

१—हे गौरि शङ्करार्धांगि ! यथा त्वं शङ्करप्रिया ।
तथा मां कुरु कल्याणि ! कान्तकान्तां सुदुर्लभाम् ।।

इस मन्त्र की पाँच माला जपने से शीघ्र उत्तम वर की प्राप्ति होती है। जप से पहले भगवती पार्वती की पूजा करनी चाहिए।

१—सप्तशती के अंग, प्रत्यंग एवं पाठ-प्रकारों का विस्तृत परिचय हम स्तोत्र-शक्ति नामक ग्रन्थ में दे रहे हैं। —सम्पादक

२—कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि !
नन्दगोपसुतं देवं पतिं मे कुरु ते नमः ॥

पार्वती देवी की पूजा कर उनके सामने एक माला प्रतिदिन जप करने से शीघ्र विवाह हो जाता है।

३—ॐ देवेन्द्राणि नमस्तुभ्यं देवेन्द्रप्रियभामिनि !
विवाहं भाग्यमारोग्यं शीघ्रलाभं च देहि मे ॥

इस मन्त्र का जप करने से पूर्व तुलसी के वृक्ष की पूजा करके १२ परिक्रमा लगायें और परिक्रमा पूरी होने पर कन्या अपने दाहिने हाथ से दूध और बाएँ हाथ से जल द्वारा श्री सूर्यनारायण को १२ बार ऊपर लिखे मन्त्र को बोलते हुए अर्घ्य देवे। इसके बाद तुलसी की माला से १०८ बार जप करे। इस प्रकार प्रतिदिन अर्घ्यदान और जप करने से शीघ्र कार्य सिद्धि होती है।

४—ॐ शं शङ्कराय सकृज्जन्मार्जितपापविध्वंसनाय पुरुषार्थ-चतुष्टयलाभाय च पतिं मे देहि कुरु कुरु स्वाहा।

जिस कन्या का विवाह अशुभ ग्रहों के कारण नहीं हो पा रहा हो अथवा आर्थिक संकट से नहीं हो रहा हो उसे चाहिए कि भगवान् शंकर और पार्वती का चित्र सामने रखकर उसका नित्य पूजन करे। धूपबत्ती जलाये। और जप करने के स्थान पर एक गमले में अथवा टीन के कनस्तर में केले के पौधे को लगाकर अथवा उसके स्तम्भ को रोपकर उसको मोली (नाला) ११ बार लपेट दे और उसकी पूजा करे। फिर ३ माला ऊपर लिखे मन्त्र को जपे। माला पूरी हो जाने पर उस केले के स्तम्भ की १२ बार प्रदक्षिणा करे। ऐसा करने से अवश्य ही शीघ्र वर की प्राप्ति होती है।

५—ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय सहस्रकिरणाय मम वाञ्छितं देहि देहि स्वाहा।

प्रातःकाल बिना कुछ खाये-पीये स्नान तथा देव पूजा करके पूर्व दिशा की ओर मुंह करके सूर्यनारायण के सामने खड़े होकर चन्दन,

पुष्प, अक्षत मिला अर्घ्य उपर्युक्त मन्त्र बोलते हुए चार बार देना। इसके बाद धूप, दीप, गुड़ का नैवेद्य लगाकर यथासम्भव बायाँ पैर ऊपर उठाकर अर्थात् एक पैर पर खड़े रहकर १०८ बार मन्त्र जप करे। अन्त में—'हे सूर्यनारायण! मुझे मनोवांछित पति की प्राप्ति कराओ!' इस प्रकार प्रार्थना करे। एक मास तक इस प्रकार करते रहने से अवश्य सफलता मिलती है। रविवार को एक बार केवल दूध, चावल और चीनी का भोजन करना चाहिए।

कुमार-मन्त्र—ॐ ह्रीं कुमाराय नमः स्वाहा ।

१ लाख २५ हजार जप करने से वर प्राप्ति होती है।

कन्या-प्राप्ति के मन्त्र

बहुधा यह देखा जाता है कि कुछ दैवी विघ्नों एवं ग्रहादि के कारण कई युवकों का विवाह यथासमय नहीं हो पाता है और उनके माता-पिता उसके सम्बन्ध में बहुत चिंता करते रहते हैं। ऐसी स्थिति वाले व्यक्ति युवक द्वारा अथवा किसी ब्राह्मण द्वारा शुभ मुहूर्त में निम्नलिखित मन्त्रों में से किसी एक का प्रयोग करवायें, अवश्य सफलता मिलेगी।

(१) गन्धर्वराज-प्रयोग—ॐ अस्य श्रीगन्धर्वराजमन्त्रस्य कामदेव ऋषिर्विराट् छन्दः श्रीगन्धर्वराजदेवता क्लीं बीजं स्वाहा शक्तिः विश्वावसुनाम गन्धर्वः कीलकम् अमुकस्याभिलषितकन्याप्राप्त्यर्थे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास—ॐ कामदेव-ऋषये नमः शिरसि। ॐ विराट् छन्दसे नमो मुखे। ॐ श्री गन्धर्वराजदेवतायै नमो हृदि। ॐ क्लीं बीजाय नमो गुह्ये। ॐ स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। ॐ विश्वावसु-नाम गन्धर्वः कीलकाय नमो नाभौ। ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर हृदयादि न्यास--

ॐ क्लीं विश्वावसुनाम गन्धर्वः—अंगुष्ठाभ्यां०। हृदयाय०।

ॐ क्ली ँ कन्यानामधिपतिः—तर्जनीभ्यां०। शिरसे०।
ॐ क्ली ँ लभामि देवदत्तां—मध्यमाभ्यां०। शिखायै०।
ॐ क्ली ँ कन्यां सुरूपां—अनामिका०। कवचाय०।
ॐ क्ली ँ सालंकारां—कनिष्ठिका ०। नेत्रत्राय०।
ॐ क्ली ँ तस्मै विश्वावसवे स्वाहा—करतल०। अस्त्राय०।

ध्यान—कन्यावृक्षसमासीनमुद्यदादित्य-सन्निभम्।
अङ्कस्थकन्यागन्धर्वं कन्यानामधिपं भजे॥

मन्त्र—ॐ क्लीं विश्वावसुनामगन्धर्वः कन्यानामधिपतिः लभामि देवदत्तां कन्यां सुरूपां सालङ्कारां तस्मै विश्वावसवे स्वाहा।

लाल चन्दन एवं लाल पुष्प से गन्धर्व की मूर्ति बनाकर पूजा करे। इस मन्त्र का १० हजार जप करे। गूगल, बिल्वपत्र और घृत से अथवा चावल की खीर और घृत का दशांश हवन तर्पण, मार्जन ब्राह्मणभोजनादि करने से शीघ्र सिद्धि होती है।

:३: सन्तान प्राप्ति के मन्त्र

सन्तान प्राप्ति के लिये आस्तिक समाज में **सन्तान गोपाल मन्त्र** का बड़ा प्रचार है और इसके अनुष्ठान से अनेक सन्तानहीनों को सन्तान-प्राप्ति देखी गई है। इसकी शास्त्रीय विधि इस प्रकार है—

विनियोग—अस्य श्रीसन्तानगोपालमन्त्रस्य श्रीनारदऋषिरनुष्टुप्-छन्दः श्रीकृष्णो देवता ग्लौं बीजं नमः शक्तिः क्ली ँ कीलकं श्रीगोपाल-प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास—श्रीनारदऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे। श्री कृष्णदेवतायै नमो हृदि। ग्लौँ बीजाय नमो गुह्ये। नमः शक्तये नमः पादयोः। क्लीं कीलकाय नमो नाभौ। विनियोगाय

नमः सर्वाङ्गे ।

कर-हृदयादिन्यास—

देवकीसुत गोविन्द	—अंगुष्ठाभ्यां० ।	हृदयाय० ।
वासुदेव जगत्पते	—तर्जनीभ्यां० ।	शिरसे० ।
देहि मे तनयं कृष्ण	—मध्यमाभ्यां० ।	शिखायै० ।
त्वामहं शरणं गतः	—अनामिका० ।	कवचाय० ।
ॐ नमः	—कनिष्ठिका० ।	अस्त्राय फट्० ।

ध्यान—वैकुण्ठादागतं कृष्णं रथस्थं करुणानिधिम् ।
किरीटसारथिं पुत्रानानयन्तं परात्परम् ॥१॥
आदाय तान् रथस्थांश्च गुरवे वैदिकाय च ।
अर्पयन्तं महाभागं वन्दे पुत्रार्थमच्युतम् ॥२॥

मूलमन्त्र=ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं
देवकीसुत गोविन्द ! वासुदेव जगत्पते !
देहि मे तनयं कृष्ण ! त्वामहं शरणं गतः ॥

इस मन्त्र का तीन लाख जप करें ।

(द्वितीय) सन्तान गोपाल मन्त्र—

विनियोग—अस्य श्रीसन्तानगोपालमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः श्रीकृष्णो देवता क्लीं बीजम् नमः शक्तिः मम पुत्रार्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास—ब्रह्मऋषये नमः शिरसि । गायत्री छन्दसे नमो मुखे शक्तये नमः पादयोः विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

१—गोपाल मन्त्रों में प्रायः पंचांग मन्त्रों का ही विधान है। षडंग का नहीं। अतः यहां पचांगन्यास दिया गया है।

कर-हृदयादिन्यास—

क्लाँ—अंगुष्ठाभ्यां नमः। हृदयाय नमः।
क्लीं—तर्जनीभ्यां नमः। शिरसे स्वाहा।
क्लूँ—मध्यमाभ्यां नमः। शिखायै वषट्।
क्लें—अनामिकाभ्यां। कवचाय हुम्।
क्लौः—कनिष्ठिकाभ्यां०। नेत्रत्राय वौषट्।
क्लः—करतलकरपृष्ठाभ्यां०। अस्त्राय फट्।

ध्यान—शंकचक्रगदापद्मं दधानं सूतिकागृहे।
अंके शयानं देवक्याः कृष्णं वन्दे विमुक्तये॥

मन्त्र—ॐ नमो भगवते जगत्प्रसूतये नमः।

इस मन्त्र का तीन लाख जप करे।

३. अथर्ववेद के मन्त्र—

जिस महिला को गर्भ-गत दोषों के कारण सन्तति के लाभ में बाधा आती हो और गर्भ धारण के पश्चात् गर्भ का स्राव हो जाता हो अथवा अन्य किसी प्रकार के रोगों के हो जाने से गर्भ का पोषण न होता है, तो उसके लिये नीचे लिखे मन्त्रों से जल को अभिमन्त्रित करके पिलाना चाहिए।

किसी एक शुद्ध पात्र में शुद्ध जल भरकर पूजा के समय भगवान् के सामने रख ले और पूजा-जप आदि करने के बाद उस पात्र में दूर्वा से अन्य पूजा के जल से अथवा भगवान् के चरणामृत से मन्त्र बोलते हुए छींटे देवे। मन्त्र इस प्रकार हैं—

(१) येन वेहद् बभूविथ नाशयामसि तत् त्वत्।
इदं तदन्यत्र त्वदह दूरे निदध्मसि॥१॥
आ ते योनिं गर्भ एतु पुमान् बाण इवेषुधिम्।
आ वीरोऽत्र जायतां पुत्रस्ते दशमास्यः॥२॥

पुमांसं पुत्रं तं पुमाननु जायताम् ।
भवासि पुत्राणां माता जातानां जनयाश्च यान् ॥३॥
यानि भद्राणि बीजान्नृषभा जनयन्ति च ।
तैस्त्वं पुत्रं विन्दस्व सा प्रसूर्धेनुका भव ॥४॥
कृणोमि ते प्राजापत्यमा योनि गर्भ एतु ते ।
विन्दस्व त्वं पुत्रं नारि यस्तुभ्यं शमसच्छमु तस्मै त्वं भव ।
यासां द्यौष्पिता पृथिवी माता समुद्रो मूलं वीरुधा बभूव ।५।
तासत्त्वा पुत्राविद्याय दैवीः प्रावन्त्वोषधयः ॥६॥ अथ० ३।२३

(२) यद्येकवृषोऽसि सृजारसोऽसि ॥१॥
यदि द्विवृषोऽपि सृजारसोऽसि ॥२॥
यदि त्रिवृषोऽपि सृजारसोऽसि ॥३॥
यदि चतुर्वृषोऽसि सृजारसोऽसि ॥४॥
यदि पंचवृषोऽसि सृजारसोऽसि ॥५॥
यदि षड्वृषोऽसि सृजारसोऽसि ॥६॥
यदि सप्तवृषोऽसि सृजारसोऽसि ॥७॥
यदि मद्यष्ट वृषोऽसि सृजारसोऽसि ॥८॥
यदि नववृषोऽसि सृजारसोऽसि ॥९॥
यदि दश वृषोऽसि सृजारसोऽसि ॥१०॥
यद्येकादशोऽसि सोपोदकोऽसि ॥११॥ (अथ०-५।५)

(३) शमीमश्वत्था आरूढस्तत्र पुंसवनं कृतम् ।
तद्वै पुत्रस्य वेदनं तत् स्त्रीस्वाभरामसि ॥१॥
पुंसि वै रेतो भवति तत् स्त्रियामनुषिच्यते ।
तद् वै पुत्रस्य वेदनं तत् प्रजापतिरब्रवीत् ॥२॥
प्रजापतिरनुमतिः सिनीवाल्यचीक्लृपत् ।
स्त्रषूयमन्यत्र दधत् पुमांसमु दधदिह ॥३॥ (अथ०-६।१२)
यन्तासि यच्छसे हस्तावय रक्षांसि सेधसि ।
प्रजां धनं गृह्णानः परिहस्तोः अभूदयम् ॥१॥

परिहस्ल वि धारय योनिं गर्भाय धातवे ।
मर्यादे पुत्रमा धेहि तं त्वमा गमयागमे ।।२।।
यं परिहस्तमषिभरदितिः पुत्रकाम्या ।
त्वष्टा तमस्या आबध्नाद् यथा तुत्र जनादिति ।।३।।
(अर्थ० ६।८१)

गर्भरक्षा के लिए प्राणायाम विधान—

कई बार यह देखा गया है कि कुछ स्त्रियाँ गर्भ तो धारण करती हैं, किन्तु उनका वह गर्भ पूर्ण न होकर बीच के दिनों में ही नष्ट हो जाता है। ऐसी स्थिति में अन्य रोगों की उत्पत्ति होना भी स्वाभाविक है। अथवा कुछ महिलाओं को गर्भ तो रहता है, पर लड़कियाँ ही लड़कियाँ होती हैं। ऐसी स्थिति में अन्य उपायों के साथ ही साथ एक प्रकार का विशेप प्राणायाम भी करना चाहिए।

पूरक में पेड़ू तक धीरे-धीरे पूरी साँस भर ले। अनन्तर कुम्भक में श्वास रोकें तो ३ बार **'यँ'** का सम्पुट लगाकर इष्टदेव के मंत्र का स्मरण करें। यदि ३ बार मन्त्र बोलने में कठिनाई का अनुभव हो तो एक बार अवश्य बोले। फिर धीरे-धीरे श्वास को बाहर-बाहर निकाल दे। रेचक में उतना ही समय लगाना चाहिये जितना कि पूरक में लगाया हो। बाह्य कुम्भक में भी जो अन्तर कुम्भक के समान समय लगाना चाहिए। इस प्रकार प्रतिदिन ११ प्राणायाम से आगे बढ़ाते जाए और १०७ बार तक बढ़ाते रहें। इस प्रकार के प्राणायाम से स्त्रियों के गर्भाशय की शुद्धि होती है और पुत्र की प्राप्ति होती है।

इसी प्रकार का प्राणायाम पुरुष भी करता रहे तो उसके वीर्य शक्ति आकर पुरुषसन्तान प्राप्त कराने में सफलता मिलती है।

जब वह प्राणायाम करें तब 'यं' बीज का सम्पुट लगाकर इष्ट मन्त्र का चन्दन की माला से १०८ बार जप करे।

जप के समय (यदि गायत्री मन्त्र हो तो) हाथों में कमल के पुष्प

धारण की हुई, किशोर अवस्था वाली, श्वेत वस्त्र और आभूषणों से विभूषित माता का ध्यान करना चाहिये।

जब तक साधना करे तब तक प्रति रविवार को भोजन में श्वेत वस्तु का प्रयोग करे। दूध, दही और चावल इनमें श्रेष्ठ माने गये हैं। ऐसा करने से बुद्धिमान् एवं चरित्रवान् पुत्र की प्राप्ति होती है।

वासुपुत्रद श्रीकृष्ण मन्त्र—पुत्र प्राप्ति की इच्छावाले दम्पतो अथवा उनके द्वारा वरण किये हुए ब्राह्मण द्वारा नीचे दिये हुए मन्त्र का विधिवत् अनुष्ठान करने से अवश्य पुत्र प्राप्त होता है :—

विनियोग—अस्य श्रीवासुपुत्रद-श्रीकृष्णमन्त्रस्य नारद ऋषिः गायत्रोच्छन्दः श्रीकृष्णो देवता क्लीँ बीजं गोपालवेषधरो वासुदेवः शक्तिः हुँ फट् कीलकं वसुपुत्रप्राप्त्यर्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यदिन्यास—नारदऋषये नमः शिरसि। गायत्रीच्छन्दसे नमो मुखे। श्रीकृष्णदेवतायै नमो हृदये। क्लीँ बीजाय नमो गुह्ये। गोपाल-वेषधराय वासुदेवाय शक्तये नमः पादयोः। हुँ फट् कीलकाय नमो नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर एवं हृदयादिन्यास—क्लाँ अंगु०। हृदयाय०॥ क्लीँ तर्जनी०। शिरसे०॥ क्लूँ मध्यमा०। शिखायै०। क्लैँ अनामिका० कवचाय०। क्लौँ कनिष्ठिका०। नेत्रत्रयाय०॥ क्लः करतल०। अस्त्राय फट्॥

ध्यान—बालं नीलमुदारकान्तिविभवं हस्ताम्बुजे दक्षिणे,
बिभ्राणं परिपक्वदोग्धकवलं नन्दात्मजं सुन्दरम्।
वामे तद्दिनजातमुद्धतरसं दध्युत्थपिण्डं शुभं,
वैयाघ्रेण नखेन राजितगजं त्युक्तांशुकं भावये॥

मत्रं—ॐ क्लीँ गोपालवेषधराय वासुदेवाय हुँ फट् स्वाहा।

एक लाख जप पूर्ण होने पर शर्करा, दधि, घृत, चावल की खीर एवं पंचमेवा मिलाकर दशांश हवन करे। जप से पूर्व कमल के मध्य

में विराजमान भगवान् बालकृष्ण की पूजा करे। अवश्य पुत्र लाभ होगा।

काकवन्ध्यादोष शान्ति मन्त्र—जिस स्त्री को एक बार सन्तान होकर बाद में सन्तति होना (गर्भ धारण) बन्द हो गया हो उसे काकवन्ध्या कहते हैं। ऐसी स्त्री को पुनः सन्तति प्राप्त करने या कराने के लिये नीचे लिखे मन्त्र का जप प्रतिदिन १०८ बार २१ दिन तक करना चाहिए—

'ॐ नमः शक्तिरूपाय मम गृहे पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा।'

इसके साथ ही **'मन्त्रविद्या'** में नीचे लिखा प्रयोग करने का भी आग्रह किया गया है।

पुष्य नक्षत्र और रविवार का योग होने पर अश्वगन्धा (असगन्ध) की जड़ लाकर उसको भैंस के दूध में पीस लें अथवा उसका चूर्ण बनाकर दूध में मिला लें और प्रतिदिन १ तोला या १॥ तोला चूर्ण सन्तान की इच्छावाली स्त्री को खिलाते रहें। सात दिनों में ही गर्भ धारण हो जाता है।[१]

पुत्रप्रद द्वादशाक्षरी मन्त्र—भगवान् शंकर ने पार्वतीजी की प्रार्थना पर इस मंत्र का कथन किया है। इसका जप आम के पेड़ पर चढ़कर उसकी किसी शाखा पर बैठे हुए अथवा पेड़ के नीचे बैठकर एकाग्र-मन से जप करें। साथ ही जब तक जप करें, प्रतिदिन भगवान् शिवजी के दर्शन-पूजन अवश्य करते रहें। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा।'

पति को प्रसन्न रखने का मंत्र—पति की अप्रसन्नता की परिस्थिति में सुखी रहने और पति को अनुकूल बनाने की इच्छा रखने

१—अनेक मन्त्रों के साथ और कहीं-कहीं स्वतन्त्र रूप से ऐसे प्रयोग लिखे गये हैं, जिन्हें हमने 'तन्त्र-शक्ति' नामक अन्य ग्रन्थ में विधि—सहित प्रकाशित किया है। पाठक वहीं देखें और लाभ उठायें।

वाली महिला प्रतिदिन १०८ बार नीचे लिखे हुए मन्त्र का जप करे तथा भगवान् शिवजी एवं पार्वती का ध्यान करें :—

ॐ क्लीं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पतिवेदनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय माऽमृतात् ॥ क्लीं ॐ ॥

पतिवशीकरण तन्त्र—जिस स्त्री का पति अनुकूल न हो अथवा पर स्त्री के प्रति आसक्त रहता हो तो उस दुःख से मुक्ति पाने के लिए नीचे लिखे मन्त्र का जप करके इसी मंत्र से अभिमंत्रित वस्त्र धारण करे—

ॐ अभित्वामनुजातेन दधामि मम वाससा ।
यथा सो मम केवलो नान्यासां कीर्तयाश्च न ॥

(अथर्ववेद ६।३७)

स्त्रियों के सौभाग्य की रक्षा के लिए मन्त्र—गृहस्थ जीवन को सुखी एवं सम्पन्न बनाने तथा अपने सौभाग्य की रक्षा के लिए स्त्रियाँ नित्य प्रति इन मन्त्रों का ११ बार पाठ करें तथा भगवान् शिव और पार्वती, विष्णु और लक्ष्मीजी, राधाकृष्ण अथवा सीताराम के युगल स्वरूप की पूजा करें—

ॐ इमा नारीरविधवाः सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा संस्पृशन्ताम् ।
अनश्रवो अनमीवा सुरत्ना आरोहन्तु जनयो योनिमग्रे ॥१॥
व्याकरोमि हविषाहमेतौ तौ ब्राह्मणा व्यहं कल्पयामि ।
स्वधां पितृभ्यो अजरा कृणोमि दीर्घेणायुषा समिमान्त्सृजामि ॥

पति-पत्नी में मेल कराने का मन्त्र—किसी कारणवश यदि पति-पत्नी में अनबन हो गई हो, तो नीचे लिखे मन्त्रों का २१ बार नित्य पाठ करने से सफलता प्राप्त होती है—

ॐ यथा नकुलो विच्छिद्य सन्दधात्यहिं पुनः ।
एवा कामस्य विच्छिन्नं सन्धेहि वीर्यावतिः ॥१॥
अक्ष्यौ नौ मधुसङ्काशे अनीकं नौ समञ्जनम् ।
अन्तः कृणुष्व मां हृदि मन इन्नौ सहासति ॥२॥

कुमारियों के लिए उत्तम पति प्राप्त करने का मन्त्र—श्रेष्ठ, चरित्रवान्, गुणवान् एवं बुद्धिमान् पति प्राप्त करने के लिए कुमारियों को इन मन्त्रों का जप करना चाहिए :—

ॐ अयमायात्यर्यमा पुरस्ताद् विषितस्तुतः ।
अस्या इच्छन्नग्रुवै पतिमुख जायभजानाये ।।१।।
अश्रमदियमर्यमन्नन्यासां समनं यती ।
अङ्गो न्वर्यमन्नसा अन्या समनस्यायति ।।२।।
धातादाधार पृथिवीं धाता द्यामुत सूर्यम् ।
धातास्या अग्रु वै पतिं दधातु प्रतिकाम्यम् ।।३।।

उत्तम बुद्धिप्राप्ति मन्त्र—(१) प्रतिदिन प्रातः उठकर किसी से बातचीत किये बिना नीचे लिखे **मन्त्र** का तीन बार उच्चारण करने से उत्तम बुद्धि प्राप्त होती है:—

ॐ मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।
यत् क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ।।

(२) अंजनी पुत्र हनुमान जी की श्रद्धापूर्वक पूजा करके नीचे लिखे दोहे का १०८ बार नित्य जप करें :—

बुद्धि हीन तनु जानि कै, सुमिरौं पवन कुमार ।
बल, बुधि, विद्या देहु मोहि, हरहु कलेस विकार ।।

चुनाव में सफलता प्राप्त करने के लिए—नीचे लिखे मन्त्रों का एकाग्र मन से पाठ करने पर तथा प्रतिदिन ११ बार जप करने से मन्त्रों के बल से साधक में अपूर्व शक्ति प्राप्त होती है । जनता से मेल-जोल बढ़ता है। जनता के दुःख-दर्द दूर करने की प्रेरणा मिलती है तथा लोकप्रयिता बढ़ती है, विरोधी तत्त्व दब जाते हैं और उच्च पद पर बैठने का अवसर मिलता है—

ॐ इममिन्द्र वर्धय क्षत्रियं न इमं विशमेक वृषं कृणु त्वम् ।
निरमित्रानक्ष्ण ह्यस्य सर्वांस्तान् रन्धयास्मा अहमुत्तरेषु ।।१।।

एमं भज ग्रामे अश्वेषु गोषु निष्टं भज यो अमित्रो अस्य ।
वर्ष्म क्षत्राणामयमस्तु राजेन्द्र शत्रुं रन्धय सर्वमस्मै ॥२॥
अयमस्तु धनपतिर्धनानामयं विशां विश्वपतिरस्तु राजा ।
अस्मिन्निन्द्र महि वर्चांसि धेह्यवर्चसं कृणुहि शत्रुमस्य ॥३॥
अस्मै द्यावापृथिवी भरि वामं दुहायां धर्य दुघे इव धेनू ।
अथ राजा प्रिय इन्द्रस्य भूयात् प्रियो गवामोषधीनां पशूनाम् ॥४॥
युनिज्म त उत्तरावन्तमिन्द्र येन जयन्ति न पराजत ते ।
यस्त्वा करदेकवृषं जनानामुत राज्ञामुत्तमं मानपानाम् ॥५॥
उत्तरस्त्वमधरे ते सपत्ना ये के चन राजन् प्रतिशत्रवस्ते ।
एक वृष इन्द्रसखा जिगीवाञ्छत्रूयतामा भरा भोजनानि ॥६॥
सिंहप्रतीको विशो अद्धि सर्वां व्याघ्रप्रतीकोऽव बाधस्व शत्रून् ।
एक वृष इन्द्रसखा जिगीवाञ्छत्रूयतामा खिदा भोजनानि ॥७॥

यश-प्राप्ति के लिए अद्भुत मन्त्र—नीचे लिखे मन्त्रों का पाठ, जप और हवन आदि करने से साधक की गतिविधियाँ इस प्रकार संचालित होने लगती हैं कि उससे सभी व्यक्ति अनुराग करते हैं तथा सर्वत्र आदर बढ़ता है। यश एवं कीर्ति प्राप्ति के लिए यह सर्वथा उपयुक्त है—

ॐ गिरावरगराटेषु हिरण्ये षु च गोषु च ।
सुरायां सिच्यमानायां कीलाले मधु तन्मयि ॥१॥
अश्विना सारघेण मा मधुनाङ्क्तं शुभस्पती ।
यथा भर्गस्वतीं वाचयावदानि जनां अनु ॥२॥
मयि वर्चो अथो यशोऽथो यज्ञस्य यत् पयः ।
तन्मयि प्रजापतिर्दिवि धामिव दृंहतु ॥३॥
—(अथर्ववेद ६।६६)

विवाह सिद्धि-मन्त्र—जिस व्यक्ति का विवाह नहीं होता हो अथवा उसमें कठिनाई उपस्थित होती हो, उसे इन मन्त्रों की साधना करनी चाहिए—

ॐ आगच्छत आगतस्य नाम गृह्णाम्यायतः ।
इन्द्रस्य वृत्रघ्नो वन्वे वासवस्य शतक्रतोः ।।१।।
येन सूर्यां सावित्रीमश्विनोहतुः पथा ।
तेन मामब्रवीद् भगो जाया मा वहनादिति ।।२।।
यस्तेऽङ्कुशो वसुदानो ब्रहन्निन्द्र हिरण्ययः ।
तेन जनीयते जायां मह्यं धेहि शचीपते ।।३।।

आपत्तिनिवारण के लिए 'शिवसूत्र' मन्त्र—

जिस समय आपत्तियाँ प्राप्त हों तो उस समय भगवान् शिव के डमरू से प्राप्त १४ सूत्रों को एक श्वास में बोलने का अभ्यास करके एक माला (१०८ मन्त्र) का जप प्रतिदिन करें। कैसा भी कठिन कार्य हो, शीघ्र सिद्धि प्राप्ति होती है।

शिव सूत्र रूप मन्त्र इस प्रकार है—

'अइउण्, ऋलृक्, एओङ् एऔच्, हयवरट्, लण्, ञमङणनम्, झभञ्, घढधश्, जबगडदश्, खफछठथ, चटतव्, कपय्, शषसर, हल्।'

इसी मन्त्र से अन्य प्रयोग इस प्रकार किए जाते हैं—

१. बिच्छू के काटने पर इन सूत्रों से झाड़ने पर विष उतर जाता है।

२. सर्प के काटने पर जिस व्यक्ति को सर्प ने काटा हो उसके कान में उच्च स्वर से इन सूत्रों का पाठ सुनाना चाहिए।

३. प्रेत का आवेश जिस व्यक्ति में आया हो, उस पर उपर्युक्त सूत्रों से अभिमन्त्रित जल से छींटे देने से आवेश छूट जाता है। तथा इन्हीं सूत्रों को भोजपत्र पर लिखकर गले में बाँधने से अथवा बाहु पर बाँधने से प्रेतबाधा नष्ट हो जाती है।

४. ज्वर, तिजारी, चौथिया आदि में इन सूत्रों द्वारा झाड़ने-फूँकने से ज्वर शीघ्र छूट जाता है। अथवा इन्हें पीपल के एक बड़े

पत्ते पर लिखकर गले या हाथ पर बाँधने से भी ज्वर छूट जाते हैं।

५. उन्माद या मृगी आदि रोग से पीड़ित होने पर इन सूत्रों से झाड़ना चाहिये तथा प्रतिदिन जल को अभिमन्त्रित करके पिलाना चाहिये अथवा सफेद चन्दन से अनार की कलम द्वारा भोजपत्र पर लिखकर कवच के रूप में बाँधें।

विशेष—इनका जप एक श्वास में करने का अभ्यास होना चाहिए।

सर्वविध विघ्नबाधा निवारण का मन्त्र और प्रयोग

यदि जपकर्त्ता दुर्गा पाठ करने में समर्थ हो तो, नीचे लिखे मन्त्र का सम्पुट लगाकर पाठ करे—

सर्वबाधा-प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्॥

और यदि दुर्गापाठ करने में कठिनाई हो तो नीचे लिखे अनुसार विनियोग, न्यास और ध्यान करके इसी मन्त्र का जप करे।

विनियोग—अथोत्तरचरित्रस्य अनेकचरितसंज्ञकस्य शिवात्मा भगवान् सुमेधा ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः महासरस्वती देवता भीमा शक्तिः हूँ भ्रामरी बीजं क्लीं सूर्यस्तत्त्वं ह्रीँ सामवेदः स्वरूपं सर्वबाधाविध्वंसनार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास—सुमेधसे ऋषये नमः (शिरसि।)
अनुष्टुप्छन्दसे नमः (मुखे।)
महासरस्वतीदेवतायै नमः (हृदये।)
भीमाशक्तये नमः (पादयोः।)
हूँ भ्रामर्यै बीजाय नमः (नाभौ।)
विनियोगाय नमः (सर्वाङ्गे।)

कर एवं हृदयादिन्यास

'सर्व' इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।

'बाधाप्रशमनं' तर्जनीभ्यां नमः ।

'त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि' मध्यमाभ्यां नमः ।

'एवमेव' अनामिकाभ्यां नमः ।

'त्वया कार्यं' कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

'अस्मद्वैरिविनाशनम्' करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

वर्णन्यास

ॐ सं नमः मूर्ध्नि ।
ॐ र्वं नमः ललाटे ।
ॐ बां नमः दक्षकर्णे ।
ॐ धां नमः वामकर्णे ।
ॐ प्रं नमः दक्षनासायाम् ।
ॐ शं नमः वामनासायाम् ।
ॐ मं नमः उत्तरोष्ठे
ॐ नं नमः अधरोष्ठे ।
ॐ त्रैं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ ।
ॐ लो नमः अधोदन्तपंक्तौ ।
ॐ क्यं नमः जिह्वायाम् ।
ॐ स्यां नमः कण्ठे ।
ॐ खि नमः दक्षांसे ।
ॐ लें नमः वामांसे ।
ॐ श्वं नमः दक्षमणि बन्धे ।
ॐ रि नमः वाममणि बन्धे ।
ॐ एं नमः दक्षकरतले ।
ॐ वं नमः वामकरतले ।
ॐ मे नमः दक्षकरपल्लवे ।
ॐ वं नमः वामकर पल्लवे ।
ॐ त्वं नमः हृदये ।
ॐ यां नमः नाभौ ।
ॐ कां नमः जठरे ।
ॐ र्यं नमः गुह्ये ॥
ॐ मं नमः दक्षौरुमूले ।
ॐ स्मद् नमः वामोरुमूले ।
ॐ वैं नमः दक्षजानुनि ।
ॐ रिं नमः वाम जानुनि ।
ॐ विं नमः दक्षवामजंघयोः ।
ॐ नां नमः दक्षपादाङ्गुलिषु ।
ॐ शं नमः वामपादाङ्गुलिषु ।
ॐ नं नमः पादयोः ।

ॐ सर्वबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥ सर्वाङ्गे ।

ध्यानम्

पाणिग्रन्थनमीलितान् रिपुगणान् निघ्नन्त्यभीक्ष्णं मुहु-
र्विघ्नध्वंसनकारिणी निजपदप्राप्तानवन्ती जनान्।
भक्तत्राणपरायणाऽभयकरी विद्वेषिणां सर्वतो,
भूयान् भे भवभूतये भगवती दुर्गारिगर्वापहा ॥

एक लाख जप पूर्ण होने पर गुग्गुल से दशांश हवन करने से शीघ्र सिद्धि होती है।

शत्रुबाधा निवारण के लिए १ माला रात्रि में जप करना उत्तम है।

अत्युग्र प्रयोग में सरसों का हवन अथवा काली मिर्च का १०८ बार हवन करना भी सिद्धि कारक है।

स्वप्न सिद्धि मन्त्र—इक्कीस दिन तक नीचे लिखे मन्त्र का प्रतिदिन १०८ बार सोते समय जप करने से स्वप्न सिद्धि होती है—

"ॐ ह्राँ क्लीँ रक्तचामुण्डे स्वप्ने कथय कथय शुभाशुभं ॐ फट् स्वाहा।"

इच्छा पूर्ति का मन्त्र—धूप-दीप लगाकर नीचे लिखे मन्त्र का एक लाख जप करें :—

"ॐ श्रीँ ह्रीँ क्लीँ प्लं कमलसौन्दर्यै नमः विस्तार स्वाहा।"

सदा नीरोग रहने की साधना और मन्त्र

शरीर रोग रहित तथा स्वस्थ न हो तो शारीरिक, मानसिक अथवा आध्यात्मिक कोई भी क्रिया वास्तविक रूप में नहीं हो सकती है। कुछ लोग शारीरिक निर्वलता के कारण चाहते हुए भी किसी प्रकार की उपासना नहीं कर सकते। यह बात अलग है कि हम शरीर के प्रति ममत्व न रखें अथवा उसे सजाने-संवारने की ओर विशेष प्रवृत्ति न करें, पर उसकी स्वस्थता बनी रहे यह तो सर्वथा आवश्यक है। भगवान् सूर्यनारायण रोग नाश के लिए सिद्ध देव हैं। अतः 'सूर्य-

नमस्कार' की क्रिया और उसके मन्त्र सर्वथा उपयोगी हैं। इसे व्यायाम मानकर कुछ लोग ये समझें कि हमें तो पहलवान नहीं बनना है : अतः क्यों करें ? पर यह ठीक नहीं। इस साधना में तन और मन दोनों की सम्मिलित साधना है। अतः इसकी प्रक्रिया का परिचय यहाँ दिया जाता है :—

(१) प्रातः शौचादि से निवृत्त होकर शुद्ध धोती पहनें। चड्डी अथवा जाँघिया भी पहना जा सकता है।

(२) फिर पूर्व की ओर अथवा उगते हुए सूर्य के सामने मुंह करके खड़े रहें तथा हाथ जोड़कर नीचे लिखे अनुसार मानसिक संकल्प करें—

'ॐ अद्य शुभपुण्यतिथौ श्रीसवितृसूर्यनारायण प्रीत्यर्थं मम दीर्घायुष्यारोग्यधनधान्यादिवृद्धयर्थे च श्रीसूर्यनमस्काराख्यं कर्म करिष्ये।'

(३) इसके पश्चात् सूर्य के सामने देखते हुए नीचे लिखे पद्य से सूर्य का ध्यान करें—

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती,
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी,
हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः॥

(४) फिर खड़े रहकर नीचे लिखे हुए तेरह मन्त्रों से प्रत्येक मन्त्र बोलते हुए सूर्य के सामने दण्डवत् प्रणाम करें—

(१) ॐ मित्राय नमः। (२) ॐ रवये नमः।
(३) ॐ सूर्याय नमः। (४) ॐ भानवे नमः।
(५) ॐ खगाय नमः। (६) ॐ पूष्णे नमः।
(७) ॐ हिरण्यगर्भाय नमः। (८) ॐ मरीचये नमः।
(९) ॐ आदित्याय नमः। (१०) ॐ सवित्रे नमः:
(११) ॐ अर्काय नमः। (१२) ॐ भास्कराय नमः।

(1) Mitray Namah (2) Ravye Namah
(3) Suray Namah (4) Bhanve Namah
(5) Khagay (6) Pooshne Namah

ॐ मित्र-रवि-सूर्य-भानु-खग-पूष - हिरण्यगर्भ-मरीच्यादित्य-सवित्रर्कभास्करेभ्यो नमः ।

(५) इस प्रणाम की परम्परा के पूर्ण होने पर अपनी शक्ति और समय के अनुसार आवृत्ति बढ़ाई जा सकती है अर्थात् दूसरी बार तेरह नमस्कार, तीसरी बार तेरह नमस्कार इस तरह आगे बढ़ें। शक्ति का ह्रास न होने पाये तथा नियमितता भी बनी रहे।

(६) इसके अनन्तर हाथ में जल लेकर नीचे लिखा हुआ मन्त्र बोलकर आचमन करें।

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधि-विनाशनम् ।
सूर्यपादोदकं तीर्थं जठरे धारयाम्यहम् ॥

अकालमृत्यु का हरण करने वाला, सब प्रकार की व्याधियों का विनाशक, भगवान् सूर्यनारायण के चरणामृतरूप तीर्थ जल को मैं अपने उदर में धारण करता हूँ।

यह 'सूर्यनमस्कार' प्रतिदिन नियमित रूप से करने पर अकाल मृत्यु नहीं होती है। आज तो हार्ट फेल, रेलवे, मोटर अथवा विमान दुर्घटना, अग्निदाह, पानी की बाढ़ एवं विष प्रयोग आदि अनेक प्रकार की अकाल मृत्युएँ हो जाती हैं, उनसे बचने के लिए 'सूर्यनमस्कार' अत्यावश्यक है।

इस नमस्कार को अन्य शास्त्रों में दरिद्रता नष्ट करने वाला भी कहा है—

आदित्यस्य नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिने दिने ।
जन्मान्तर-सहस्रेषु दारिद्र्यं नोपजायते ॥

अर्थात् जो लोग प्रतिदिन सूर्य नमस्कार करते हैं वे हजारों वर्ष तक दरिद्र नहीं होते हैं।

यहाँ यह भी कहना आवश्यक है कि—सूर्य सभी ग्रहों का राजा है तथा समस्त जीवसृष्टि का प्राणदाता है। अतः अतिप्राचीन काल से आज तक सूर्य की उपासना अनेक रूपों में चली आ रही है। शास्त्रों

(7) Hiranyagarbhay Namah (8) Marichaye Namah
(9) Adityay Namah (10) Savitre Namah →

में इस सम्बन्ध में 'आरोग्यं भास्करादिच्छेत्' सूर्य से आरोग्य की कामना करें, ऐसा कहा गया है। यहाँ यह प्रयोग सरलता से साध्य तथा बिना किसी खर्च के सुलभ होने से लिखा गया है।

अन्य रोग निवारण

वैसे तो यह दोहा प्रसिद्ध है कि—

प्रभु नाम की औषधी, खरी खंत से खाय।
रोग-पीड़ा व्यापे नहीं, सब संकट मिट जाय॥

अर्थात् जो व्यक्ति वास्तविक लगन से परमात्मा के स्मरण को औषधि खाता रहता है, उसे कोई रोग अथवा पीड़ा नहीं सताते हैं और सभी संकट टल जाते हैं। फिर भी आवश्यकता पड़ने पर निम्नलिखित मन्त्रों का प्रयोग करते रहना चाहिए—

अजीर्ण रोग नष्ट करने का मन्त्र

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः।
प्राणापान-समायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्॥

इस मन्त्र का तीन बार स्मरण करके जल को अभिमन्त्रित करे तथा उस पानी को पी जाए। इससे शीघ्र लाभ होता है।

अथवा— **अगस्त्यं कुम्भकर्णं च शनिं च वडवानलम्।**
आहारपरिपाकार्थं भजे भीमं च पञ्चमम्॥
आतापी नाशितो येन वातापी च विनाशितः।
समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु॥

इन दोनों मन्त्रों से जल को अभिमन्त्रित करके भोजन के बाद पी जाए तथा पेट पर नाभि के आस-पास तीन बार हाथ फिराये।

ज्वर शान्ति-मन्त्र

ॐ कुबेरं ते मुखे रौद्रं, नन्दिमानन्दिमावहम्।
ज्वरं मृत्युभयं घोरं, ज्वरं नाशयते ध्रुवम्॥

(11) Arkay Namah (12) Bhaskaray Namah

इस मन्त्र का १००० जप करके आम के पत्ते से दशांश हवन करें तो कैसा भी बुखार हो, उतर जाता है।

बेचैनी मिटाने का मन्त्र

किसी भी स्त्री अथवा पुरुष को खूब बेचैनी का अनुभव होता हो तो '**ॐ हंसः हंसः**' इस मन्त्र का बीस बार जह करके पानी को अभिमन्त्रित कर पिला दें। इससे शीघ्र ही स्वस्थता का अनुभव होगा। पानी नहीं पी सके तो यही मन्त्र बोलते हुए पानी से छींटे देने चाहिए।

असाध्य रोग निवारण मन्त्र

(१) ॐ नमो भगवति मृतसञ्जीवनि 'अमुकस्य' शान्ति कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र को '**अमृतसंजीवनी मन्त्र**' कहते हैं। इस मन्त्र का यदि रोगी स्वयं जप करे तो 'अमुकस्य' के स्थान पर 'मम' कहे और जप करता रहे और यदि किसी दूसरे से जप करवाये तो अमुकस्य के स्थान पर रोगी का नाम बोले। नाम के साथ षष्ठी विभक्ति का प्रयोग करें। इसके जप से असाध्य, कष्ट साध्य एवं सामान्य सभी रोग नष्ट हो जाते हैं।

(२) अन्यत्र नीचे लिखा हुआ मन्त्र भी 'सर्वरोगनाशक' बतलाया गया है—

ॐ सं सां सिं सीं सुं सूं सें सैं सों सौं सं सः
वं वां विं वीं वुं वूं वें वैं वों वौं वं वः हंसः अमृतवर्चसे स्वाहा।

इसकी विधि इस प्रकार है—एक नये शराव-शकोरे में शुद्ध जल भरकर १०८ बार इस मन्त्र से उसको अभिमन्त्रित करना और उस जल को प्रातः पी लेना। ऐसा करने से सभी प्रकार के रोग मिट जाते हैं।

(३) सब प्रकार के शूल को मिटाने के लिए नीचे लिखे मन्त्र को

१०८ बार बोलकर जल अभिमन्त्रित करें और रोगी को पिलायें। इससे शूल नष्ट होगा।

कालि कालि महाकालि नमोऽस्तु ते हन हन दह दह शूलं त्रिशूलेन हुँ फट् स्वाहा।

नेत्रज्योति वर्धक मन्त्र—प्रतिदिन प्रातः नीचे लिखे मन्त्र से पानी को अभिमन्त्रित करके आँखों पर छीदें :—

ॐ आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वे मम।
ज्योक् च सूर्य दृशे॥

हजीरां कण्ठरोग नाशक मन्त्र—इस रोग में गले के एक भाग में अथवा दोनों ओर गांठें हो जाती हैं और उनसे विष फैलता रहता है। अतः ऐसे रोग के स्थान को पहले गोमूत्र से धोकर उसके चारों ओर भस्म से कार (गोल घेरा) बना दें। उस समय यह मन्त्र सात बार पढ़ें :—

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः।
ये चैनं रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो वैषां हेड ईमहे।

: ४ : | उपयोगी मन्त्र-संग्रह

शास्त्रों में मन्त्र-साहित्य का अत्यन्त विस्तार है। जिस प्रकार हमारी आवश्यकता, इच्छाएँ तथा कष्ट अगणित हैं उसी प्रकार मन्त्र भी अनन्त हैं। इन मन्त्रों के विधान भी सम्प्रदायादि भेद से अलग-अलग मिलते हैं, किन्तु मूल साधना-पद्धति में सर्वत्र समानता है। अतः यहाँ हम उपयोगी मन्त्रों का संग्रह दे रहे हैं। पहले बताये हुए नियमों के अनुसार ही इनका जप-पुरश्चरणादि करें और लाभ प्राप्त करें।

जहाँ कोई विशेष सूचनीय है उसका उल्लेख मन्त्र के नीचे दिया है—

१—कुबेर मंत्र

ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्यसमृद्धि मे देहि दापय दापय स्वाहा।

शिवजी के मन्दिर में इस मन्त्र का १ लक्ष जप करें।

२—दारिद्र्यनाशक-मंत्र

ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं विघ्नेश्वराय नमः मम दारिद्र्यनाशं कुरु कुरु स्वाहा।

३—गुप्तधन-वृष्टि

ॐ हंसि हंसिजने ह्रीं क्लीं स्वाहा।

गाँव के बाहर एकान्त मन्दिर में जप करें तथा कमल के पुष्पों से दशांश हवन करें।

४—पद्मावती विद्या

ॐ ह्रीं पद्मावति देवि त्रैलोक्यवार्ता कथय कथय ह्रीं स्वाहा।

सोने से पहले १ माला जपकर सो जाएँ। स्वप्न में गुप्त धन का ज्ञान होगा।

५—मधुमती विद्या

ॐ मधुमति दिशः स्थावरजङ्गमसागरपुररत्नानि सर्वेषामाकर्षिणि ठं ठं ठं स्वाहा।

धनाकर्षण के लिए यह मन्त्र महत्त्वपूर्ण है।

६—स्वप्नवती विद्या

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं स्वप्नेश्वरि स्वप्नं कथय कथय स्वाहा।

७—शत्रु नाशन

ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय हुँ फट् स्वाहा।

८—राजकार्य सिद्धि

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं त्रिपुरसुन्दर्यै नमः ।

९—राजवशीकरण

ॐ ह्रीं सः भोजराज वशंकरि (अमुकं) मे वशं कुरु ह्रीं स्वाहा ।

११ हजार जप द्वारा पुरश्चरण करके फिर कार्य के समय १ माला जपकर रोली, गोरोचन, कपूर और लाल चन्दन मिश्रित तिलक करें ।

१०—सभा में विजय

ॐ ह्रीं श्रीं कीर्तिकौमुदि वागीश्वरि प्रसन्नवरदे कीर्तिमुखमन्दिरे स्वाहा ।

११—नगर प्रवेश सिद्धि (१)

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सम्मानं लाभं देहि देहि स्वाहा ।

१२—नगरप्रवेश सिद्धि (२)

ॐ क्लीं गच्छ गौतम शीघ्रं त्वं ग्रामेषु नगरेषु च ।
द्रव्याच्छादनमिष्टान्नं कल्पयस्व महामुने ॥

नगर में प्रवेश करते समय इस मन्त्र को बोलकर 'ॐ गौतमाय नमः' इस मन्त्र को पाँच बार बोलें ।

१३—राजकार्य सिद्धि

ॐ श्रीं श्रीं ॐ ॐ श्रीं श्रीं हुं फट् स्वाहा ।

नित्य १ हजार जप करने से कार्य सिद्धि ।

१४—स्वामी के सम्मुख विजय

ॐ हुं फट् ।

प्रथम नवरात्रि में १ लाख जप करके बाद में १०८ जप करके स्वामी के सम्मुख जाने से विजय होती है ।

१५—महावीर का मन्त्र

ॐ हौं हस्फ्रें ख्फ्रें हस्रौं हस्ख्फ्रें हसौः हनुमते नमः।

पहले १२ हजार जप द्वारा पुरश्चरण करें। केले और आम का हवन करें। २२ ब्राह्मणों को भोजन कराएँ। फिर समय पर कार्य-सिद्धि के लिए एक माला जपकर के कार्य करें, सिद्धि होगी।

१६—धनप्रद नृसिंह मन्त्र

ॐ नृं नृं नृं नृसिंहाय नमः।

१७—जयप्रद मन्त्र

'ॐ जय जय श्रीनृसिंह'—१ लाख २५ हजार जप करें।

१८—श्रीलक्ष्मीनृसिंह मन्त्र

ॐ ह्रीं क्ष्रौं श्रीं श्रीलक्ष्मीनृसिंहाय नमः।

१ लाख २५ हजार जप द्वारा पुरश्चरण करके नित्य १ माला जप करने से लक्ष्मी प्राप्ति होती है।

१९—हनुमन्मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय लंकाविध्वंसनाय अंजनीगर्भसम्भूताय शाकिनीडाकिनीविध्वंसनाय किलिकिलिबुबुकारेण विभीषणाय हनुमद्देवाय ॐ ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां फट् स्वाहा।

नित्य १ माला जप करें सर्वकार्य सिद्धि होगी।

२०—शान्तिप्रद मन्त्र

ॐ क्ष्रौं क्ष्रौं स्वाहा।

एक-एक माला त्रिकाल जप करें।

२१—चिन्तामणि मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं भगवति चिन्तामणि सर्वार्थसिद्धिं देहि देहि स्वाहा

नवरात्रि में २१ हजार जप के बाद नित्य २ माला जप करें। सर्वकार्य सिद्धि होगी।

२२—आत्मोन्नति कारक रुद्र-गायत्री

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे, महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।
नित्य जप १ माला।

२३—मनोवाञ्छापूर्ति मन्त्र

ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ मम सर्ववाञ्छितं देहि देहि स्वाहा।

नवग्रह शान्ति के मन्त्र

मानव जीवन पर ग्रहों का प्रभाव प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में दिखाई देता है। सूर्यादि नौ ग्रहों के साथ मनुष्य के मन, वचन और काया के सम्बन्ध घनिष्ठ हैं। आधुनिक विज्ञान द्वारा भी यह बात प्रमाणित की जा चुकी है कि ग्रहों की स्थिति और गति के आधार पर न केवल मनुष्यों पर, अपितु विश्व की चर-अचर सभी वस्तुओं पर गहरा प्रभाव पड़ता है। आराधना के क्षत्र में ग्रहों के मन्त्रों का जप करके उनकी कृपा प्राप्त करने का विधान है। हम यहाँ संक्षेप में 'ग्रहशान्ति' के मन्त्र दे रहे हैं, इनका जप नित्य और नैमित्तिक रूप में करने से अवश्य लाभ होगा।

सूर्य के मन्त्र

(१) 'ॐ घृणिः सूर्य आदित्योम्'।

विनियोग—अस्य श्री सौरमन्त्रस्य देवभागऋषिः, गायत्री छन्दः, सूर्यो देवता तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास—देवभाग ऋषये नमः—(शिरसि) गायत्रीछन्दसे नमः (मुखे) सूर्यदेवतायै नमः (हृदये)। विनियोगाय नमः—(सर्वाङ्गे) 'ॐ' मन्त्र द्वारा कर एवं हृदयादिन्यास करें।

ध्यान—धृतपद्मद्वयं भानुं तेजोमण्डलमध्यगम्।
सर्वाधिव्याधिशमनं छायाश्लिष्टतनुं भजे॥

(२) ॐ ह्रीँ ह्रीँ ह्रौँ सः सूर्याय नमः।

इस मन्त्र के ७००० जप करें तथा रक्त पुष्प और रक्त चन्दन से सूर्यनारायण की प्रातः पूजा कर अर्घ्य देवें।

(३) वैदिक सूर्य मन्त्र जप प्रयोग

विनियोग—आकृष्णेनेत्यस्य हिरण्यस्तूपाङ्गिरस ऋषिः त्रिष्टुप्-छन्दः सूर्यो देवता सूर्यप्रीतये जपे विनियोगः।

मन्त्र—ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रौँ सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ आकृष्णेन रजसा-वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः ह्रौँ ह्रीँ ह्राँ ॐ सूर्याय नमः।

(४) पौराणिक मन्त्र

जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।

तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

चन्द्रमा के मन्त्र

(१) ॐ श्राँ श्रौँ श्रीँ सः चन्द्रमसे नमः।

इस मन्त्र के ११-००० जप करें तथा श्वेत पुष्प और श्वेत चन्दन से सन्ध्या के समय पूजा कर अर्घ्य देवें।

(२) वैदिक चन्द्रमन्त्र जप प्रयोग

विनियोग—इममित्यस्य देववात ऋषिः अत्यष्टिश्छन्दः चन्द्रो देवता चन्द्रप्रीतये जपे विनियोगः।

मन्त्र—ॐ श्राँ श्रीँ श्रौँ सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ इमन्देवा असपत्नᳪ सुवध्वम्महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्र-स्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाᳪ राजा। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः श्रौँ श्रीँ श्राँ ॐ चन्द्रमसे नमः।

(३) **पौराणिक मन्त्र**

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसन्निभम् ।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ।।

मंगल के मन्त्र

(१) ॐ क्राँ क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः ।

इस मन्त्र के १०,००० जप मध्याह्न में करें तथा रक्त चन्दन और रक्त पुष्प (लाल कनेर) से मंगल की पूजा करें ।

(२) **वैदिकमङ्गल मन्त्र जप प्रयोग**

विनियोग—अग्निर्मूर्द्धेति मन्त्रस्य विरूपाक्ष ऋषिः गायत्री छन्दः भौमो देवता मङ्गलप्रीतये जपे विनियोगः ।

मन्त्र—ॐ क्राँ क्रीं क्रौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् । अपाᳯ रेताᳯ सि जिन्वति ।
ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः क्रौं क्रीं क्राँ ॐ भौमाय नमः ।

(३) **पौराणिक मन्त्र**

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ।।

बुध के मन्त्र

(१) ॐ ब्राँ ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः ।

इस मन्त्र के ९००० जप करें तथा बहुरंगी पुष्पों से बुध की पूजा करें ।

(२) **वैदिक बुध मन्त्र जप प्रयोग**

विनियोग—उद्बुध्यस्येति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः बुधोदेवता बुध-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

मन्त्र—ॐ ब्राँ ब्रीं ब्रौं भूर्भुवः स्वः ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते स ᳯ सृजेथा मयञ्च । अस्मिन्त्सधस्थेऽअद्ध-

युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः ब्रौँ ब्रीँ ब्राँ ॐ बुधाय नमः ।

(३) पौराणिक मन्त्र

प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥

बृहस्पति के मन्त्र

(१) ॐ ज्राँ ज्रीँ ज्रौँ सः गुरवे नमः ।

इस मन्त्र के १९००० जप करें तथा पीले फूल और केसर के चन्दन से गुरु की पूजा करें ।

(२) वैदिक बृहस्पति मन्त्र जप प्रयोग

विनियोग—बृहस्पति इति मन्त्रस्य गृत्समद ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः बृहस्पतिर्देवता बृहस्पतिप्रीतये जपे विनियोगः ।

मन्त्र—ॐ ज्राँ ज्रीँ ज्रौँ सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् । ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः ज्रौँ ज्रीँ ज्राँ ॐ बृहस्पतये नमः ।

(३) पौराणिक मन्त्र

देवानाञ्च ऋषीणाञ्च गुरुं काञ्चनसन्निभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥

शुक्र के मन्त्र

(१) ॐ द्राँ द्रीँ द्रौँ सः शुक्राय नमः ।

इस मन्त्र के १६००० जप करें तथा श्वेत चन्दन और श्वेत पुष्प से शुक्र की पूजा करें ।

(२) वैदिक शुक्र मन्त्र जप प्रयोग

विनियोग—अन्नात् परिस्रुन इति मन्त्रस्य अग्निसरस्वतीन्द्रा

ऋषयोऽति जगती छन्दः शुक्रो देवता शुक्रप्रीतये जपे विनियोगः।

मन्त्र— ॐ द्राँ द्रीँ द्रौँ सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रम्पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ७ शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः द्रौँ द्रीँ द्राँ ॐ शुक्राय नमः।

(३) पौराणिक मन्त्र

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥

शनि के मन्त्र

१—ॐ प्राँ प्रीँ प्रौँ सः शनये नमः।

२—ॐ खाँ खीँ खौँ सः शनये नमः।

इनमें से किसी एक मन्त्र के २३००० जप करें तथा नीले पुष्प और चन्दन से शनि की पूजा करें। पूजा के समय तेल का दीपक होना चाहिए।

(३) वैदिक शनिमन्त्र जप प्रयोग

विनियोग—शन्नोदेवीरिति मन्त्रस्य दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः गायत्री छन्दः आपो देवता शनैश्चरप्रीतये जपे विनियोगः।

मन्त्र—ॐ खाँ खीँ खौँ सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः खौँ खीँ खाँ ॐ शनश्चराय नमः।

(४) पौराणिक मन्त्र

ॐ नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥

राहु के मन्त्र

(१) ॐ भ्राँ भ्रीँ भ्रौँ सः राहवे नमः।

इस मन्त्र के १८००० जप करें तथा यथा सम्भव रात्रि के समय नील के रंग के पुष्प एवं चन्दन से राहु की पूजा करें।

(२) वैदिक राहु मंत्र जप प्रयोग

विनियोग—कयानश्चित्र इति मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः गावत्री छन्दः राहुर्देवता राहुप्रीतये जपे विनियोगः।

मन्त्र—ॐ भ्राँ भ्रीँ भ्रौँ सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कयाशचिष्ठयावृता। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः भ्रौँ भ्रीँ भ्राँ ॐ राहवे नमः।

(३) पौराणिक मंत्र

ॐ अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहु, प्रणमाम्यहम्॥

केतु के मंत्र

(१) ॐ प्राँ प्रीँ प्रौँ सः केतवे नमः।

इस मन्त्र के १७००० जप करें तथा धूम्रवर्ण के पुष्प और चन्दन से केतु की पूजा करें।

(२) वैदिक केतु मंत्र जप प्रयोग

विनियोग—केतुं कृण्वन्निति मन्त्रस्य मधुच्छन्दा ऋषिः गायत्री छन्दः केतवो देवताः केतुप्रीतये जपे विनियोगः।

मंत्र—ॐ प्राँ प्रीँ प्रौँ सः भूर्भुवः स्वः ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्याऽ-अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः प्रौँ प्रीँ प्राँ ॐ केतवे नमः।

(३) पौराणिक मंत्र

ॐ पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥

बारह राशियों के मंत्र

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार वर्णमाला के सभी अक्षर १२ राशियों में बँटे हुए हैं और इन राशियों के स्वामी के रूप में सूर्य आदि ग्रहों की व्यवस्था है। अतः जिस राशि के ग्रह खराब होते हैं उनका जप कराना-करना श्रेष्ठ माना गया है। ग्रहों के मन्त्र हमने इससे पूर्व लिख दिए हैं। इनके अतिरिक्त तन्त्रशास्त्रों में प्रत्येक राशि के मन्त्र भी प्राप्त होते हैं। ये मन्त्र परमात्मा के विभिन्न नामों से निर्मित हैं जो उन-उन राशियों के अधिदेव हैं। अतः जिसकी राशि पर खराब समय चल रहा हो वे अपनी राशि के मन्त्र का प्रतिदिन कम से कम १ माला जप करें। उससे शान्ति और सुख प्राप्ति होगी :—

१. **मेष**—ॐ ह्रीँ श्रीँ लक्ष्मीनारायण नमः।
२. **वृषभ**—ॐ गोपालाय उत्तरध्वजाय नमः।
३. **मिथुन**—ॐ क्लीँ कृष्णाय नमः।
४. **कर्क**—ॐ हिरण्यगर्भाय अव्यक्तरूपिणे नमः।
५. **सिंह**—ॐ क्लीँ ब्रह्मणे जगदाधाराय नमः।
६. **कन्या**—ॐ नमः पीं पीताम्बराय नमः।
७. **तुला**—ॐ तत्त्वनिरञ्जनाय तारकरामाय नमः।
८. **वृश्चिक**—ॐ नारायणाय सुरसिंहाय नमः।
९. **धनु**—ॐ श्रीँ देवकृष्णाय ऊर्ध्वदन्ताय नमः।
१०. **मकर**—ॐ श्रीँ वत्सलाय नमः।
११. **कुम्भ**—ॐ श्रीँ उपेन्द्राय अच्युताय नमः।
१२. **मीन**—ॐ आँ क्लीँ उद्धृताय उद्धारिणे नमः।

विशेष—अधिक कठिनाई के दिनों में १ लाख २५ हजार मन्त्र का पुरश्चरण करके विधिवत् हवन आदि करने से अवश्य लाभ होता है।

: ५ : | शाबर मन्त्र संग्रह

(१) आधा सिर दर्द मिटाने का मन्त्र

कृष्णपक्ष की चौदस चतुर्दशी तिथि को श्मशान में जाकर नीचे लिखे मन्त्र के १०,००० जप करके कुछ राख मन्त्रित कर ले। फिर रोगी के मस्तक पर कुछ राख मलते हुए सात बार मन्त्र बोलें। रोग मिट जाएगा। मन्त्र इस प्रकार है—

वन में ब्याई अंजनी कच्चे बन फूल खाय।
हाक मारी हनुमन्त ने इस पिण्ड से आधा सीसी उतर जाय॥

(२) नेत्र पीड़ा निवारण-मंत्र

नीचे लिखे हुए मन्त्र की काली चौदस को श्मशान में जाकर १० माला जपें और मन्त्र सिद्धि करके आँख के दर्दी की आँख पर नीम की डाली से २१ बार मन्त्र बोलते हुए झाड़ दे। रोग दूर होगा।

ॐ नमो राम का धनुष लक्ष्मण का बाण।
आंख दर्द करे तो लक्ष्मण कुमार की आण॥

(३) सर्व रोग निवारक मंत्र

नीचे बताये हुए मन्त्र का का ४१ दिन में सवा लाख जप करे और किसी भी रोग को दूर हटाने के लिए रोगी पर मोर के पंख से १०८ बार झाड़ देवे। हनुमानजी के सामने तेल का दीपक लगाकर जप करें।

"वन में बैठी वानरी अंजनी जायो हनुमन्त, बाला डमरू ब्याहि

बिलाई, ग्राँख की पीड़ा, मस्तक पीड़ा, चौरासो, वाई, बली बली भस्म हो जाय, पके न फूटे पीड़ा करे तो गोरख जती रक्षा करे, गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।"

(४) प्रेत बाधा निवारण मंत्र

हनुमान जी के मन्दिर में तेल का दीपक लगाकर १२५००० जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होता है। फिर किसी भी तरह की प्रेत बाधा होने पर मोर के पंख से १०८ बार झाड़ देवें। बाधा दूर होगी।

"ॐ नमो दीप मोहे दीप जागे पवन चले, पानी चले, शाकिनी चले, डाकिनी चले, भूत चले, प्रेत चले, नौ सो निन्यानवे नदी चले हनुमान वीर की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।"

(५) प्रेतबाधा निवारण—(बालकों के लिए)

पहले ग्रहण के समय मन्त्र का जप करके सिद्ध कर लें ग्रौर किसी बालक को बाधा होने पर मन्त्र को २१ बार बोलकर तीर से झाड़ दें तथा पानी को २१ बार मन्त्र से ग्रभिमन्त्रित करके पिला दें—

ॐ काला भैरव कपिली जटा, रातदिन खेले चोपटा।
काला भस्म मुसाण, जेहि माँगू तेहि पकड़ी ग्रान।
डंकिनी संखिनी पट्ट सिहारी, जरख चढ़ंती गोरख मारी।
छोड़ि चोड़ि रे पापिनी बालक पराया, गोरखानाथ का परवाना ग्राया।

(६) नजर झाड़ने का मंत्र

ग्रहण के समय जप कर मन्त्र सिद्ध करें ग्रौर बालकों को नजर लग जाने पर मोर के पंख से ११ बार झाड़ दें। शान्ति होगी।

ॐ नमो सत्यनाम ग्रादेश गुरु को—
ॐ नमो नजर जहां पर पीर न जानी, बोले छल सों ग्रमृत बानी।
कहो नजर कहाँ ते ग्राई, यहाँ की ठोर तोहि कौन बताई।

कौन जात तेरी कहाँ ठाम, किसकी बेटी कहा तेरो नाम।
कहाँ से उड़ी कहाँ को जाया, अब ही बस करले तेरी माया।
मेरी जात सुनो चित लाय, जैसी होय सुनाऊँ आय।
तेलनतमोलन चुहड़ी चमारी, कायथनी खतरानी कुम्हारी।
महतरानी राजा की रानी, जाको दोष ताहि सिर पर पड़े।
जाहर पीर नजर से रक्षा करे। मेरी भक्ति गुरु शक्ति
फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

(७) बवासीर दूर करने का मंत्र

नीचे लिखे मन्त्र को ग्रहण के समय जप कर सिद्ध कर लें और फिर प्रतिदिन बासी पानी को २१ बार अभिमन्त्रित कर आब दस्त लेवे तो आराम होता है।

ॐ काका कता क्रोरी कर्ता ॐ करता से होय यरसना दश हूंस प्रकटे खूनी बादी बबासीर न होय। मन्त्रं जान के न बतावे द्वादश ब्रह्म हत्या का पाप होय, लाख जप करे तो उसके वंश में न होय। शब्द सांचा पिण्ड काचा। हनुमान का मन्त्र सांचा। फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

(८) अन्य मंत्र

उमती उमती चल चल स्वाहा।

इस मन्त्र को पूर्ववत् सिद्ध कर बाद में २१ बार जप कर लाल सूत में तीन गाँठ लगाये तथा दाहिने पैर के अंगूठे में बाँध दे तो खूनी बवासीर दूर होवे।

(९) डाढ़ झाड़ने का मंत्र

पहले मन्त्र को सिद्ध करे। फिर नीम की डाली से २१ बार मन्त्र पढ़कर झाड़ दे। डाढ़ के कीड़े नष्ट होंगे।

ॐ नमो आदेश गुरु को—

वन में जाई अंजनी, जिन जाया हनुमन्त ।
कीडा मकडा माकडा, ए तीनों भस्मन्त ।
गुरे की शक्ति मेरी भक्ति, फुरा मन्त्र ईश्वरी वाचा ॥

(१०) स्त्रियों की स्तन (थनियल) पीडा-निवारण

पहले मन्त्र को सिद्ध करके आवश्यकता पड़ने पर कण्डे की राख से स्तन पर रोगी से झड़वाये और सात बार मन्त्र बोले ।

ॐ वन में जाई अंजनी, जिन जाया हनुमन्त ।
सज्जा रवधा ढाँकिया, सब हो गया भस्मन्त ॥

(११) बच्चों के डिब्बा पसली झाड़ने का मंत्र

तिल का तेल और सिन्दूर से पूर्ववत् सिद्ध मन्त्र की २१ बार पढ़कर झाड़ने से आराम होता है ।

ॐ सत्यनाम आदेश गुरु का, डंख खारी खंखरा कहाँ गया सवा लाख पर्वतो गया सवा लाख पर्वतो जाय, कहा करेगा, सवा भार कोइला करेगा सवा भार कोइला कर कहा करेगा, हनुमन्तवीर नव चन्द्रहास खड्ग गढेगा । नव चन्द्रहास खड्ग गढ कहा करेगा जात वा डोंख पसली बाय काट कूट खारो समुद्र नाखेगा । जगद्गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा ।

(१२) बिक्री बढ़ाने का मंत्र

पहले ग्रहण में जप करके मन्त्र सिद्ध कर लें और फिर रविवार के दिन काले उड़द के दाने २१ लेकर २१ बार मन्त्र बोलते हुए दुकान में बिखेर दें । ऐसा तीन रविवार तक करें ।

ॐ भंवर वीर तू चेला मेरा खोल दुकान बिकरा कर मेरा ।
उठै जो डंडी बिकै जो माल भंवर वीर सौं नहीं जाय ॥

(१३) कखलाई (कोंख में होने वाले फोड़े) का निवारण

पूर्ववत् मन्त्र सिद्ध करके नीम की डालो से २१ बार झाड़ दे और

उस जमीन की मिट्टी फोड़े पर लगा दे तीन दिन में गाँठ बैठ जाएगी।

"ॐ नमो कखलाई भरी तलाई जहाँ बैठा हनुमंता आई। पके न फूटे चले न पीड़ा रक्षा करे हनुमंत वीर, दुहाई गोरखनाथ की। शब्द साँचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। सत्यनाम आदेश गुरु को।"

(१४) हूक निवारण

पूर्ववत् मन्त्र सिद्ध करके जिस रोगी को हूक चलती हो उसी को लिटाकर हूक के स्थान पर किसी से हाथ रखवाये और २१ बार मन्त्र पढ़कर पैनी छुरी अथवा चाकू से जमीन पर लकीरें खींचें। हूक बन्द होगी।

ॐ नमो सार की छुरी धार का बान हूक न चले रे मुहम्मद पीर की आन। शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा॥

(१५) धरण ठिकाने लाने का मन्त्र

पूर्ववत् मन्त्र सिद्ध करके आवश्यकता पड़ने पर किसी सूत में नौ बार मन्त्र पढ़कर नौ गांठ लगाये तथा उसे छल्ले के समान गोल बना कर नाभि पर रख दे फिर नौ बार मन्त्र पढ़ते हुए उस पर फूँक मारे। धरण ठिकाने आ जाएगी।

"ॐ नमो नाड़ी नाडी नौ सौ नाडी बहत्तर सौ कोठा चले अगाडी डिगे न. कोठा चले न नाड़ी। रक्षा करे जती हनुमंत की आन मेरी भक्ति गुरु की भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।"

(१६) अथवा

पूर्ववत् मन्त्र सिद्ध करके २१ बार मन्त्र जप कर सवा तीन मासे की अष्ट धातु की अँगूठी पहना दे। धरण ठिकाने आयेगी।

"ॐ ऊँची नीची धरणी श्रीमहादेव सरनी।
टली धरण आनूं ठौर सत सत भाखै श्रीगोरखराव।"

(१७) सब जाति के कीड़े झाड़ने का मन्त्र

पूर्ववत् मन्त्र सिद्ध करके नीम की डाली से २१ बार झाड़ने से सब जाति के कीड़े मर जाते हैं।

ॐ नमो कीड रे तू कुंड कुंडाला, लाल पूंछ तेरा मुख काला।
मैं तोहि पूछूँ कहाँ ते आया, तोड़ मांस सब को क्यूं खाया।
अब तू जाय नहीं जाय तो भस्म हो जाय। गोरखनाथ के लागूं
पाय। शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

(१८) चलती वायु (रींधाण बाय) मन्त्र

पूर्ववत् मन्त्र सिद्ध करके मंगलवार और शनिवार को मणिहार की मोगरी से २१ बार झाड़ दे।

"ॐ नमो आदेश गुरु को। ॐ नमो कामरूप देश कामाक्षी देवी
जहाँ बसे इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी के पुत्री तीन, एक
तोड़े एक बिछोड़े एक रींधना बाय तोड़े। शब्द सांचा पिण्ड काचा
फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।"

(१९) कण्ठबेल दूर होने का मन्त्र

पूर्ववत् मन्त्र सिद्ध करके कण्ठबेल के रोगी को सात दिन तक चाकू की नोक से झाड़कर जमीन पर २१ लकीर करें।

"ॐ नमो कण्ठबेल तू द्रुम द्रुमाली, सिर पर जकड़ी वज्र की ताली।
गोरखनाथ जागता आया। बढ़ती बेल को तुरन्त घटाया।
जो कुछ बची ताहि मुरझाया। घट गई बेल बढ़त नहीं बैठी।
तहाँ उठत नहीं। पके फूटे पीड़ा करै तो गुरु गोरखनाथ की
दुहाई। ॐ नमो आदेश गुरु को। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति
फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।"

(२०) अदीठ मन्त्र[1]

पूर्ववत् ग्रहण में मन्त्र सिद्ध करके जब प्रयोग करना हो तब मोर के पंख से पृथ्वी साफ कर मन्त्र पढ़ते हुए सात बार झाड़े और जमीन की धूल सातों बार लेकर फोड़े के चारों तरफ लगाये। इस तरह सात दिन तक करने से रोग नष्ट होता है।

"ॐ नमो सिर कटा नख फटा विष कटा अस्थिमेदमज्जगत फोड़ा फुनसो अदीठ हुंबल रैल्या व रोग रींघणवाय जाय। चोंसठ जोगनी बावन वीर छप्पन भैरव रक्षा कीजे आय। शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्रईश्वरी वाचा।"

(२१) बिच्छू झाड़ने का मन्त्र

पूर्ववत् मन्त्र सिद्ध करके प्रयोग के समय बिच्छू काटने के बाद जहाँ तक जहर चढ़ा हो वहाँ से पकड़ कर बुहारी से झाड़े। जैसे-जैसे जहर उतरे वहीं से पकड़ता रहे और झाड़ता जाए। डंक की जगह आने पर झाड़ना बन्द करे और वहाँ डंक के ऊपर तेलिया मोहरा पानी में घिस कर लगाये तो आराम हो।

ॐ नमो आदेश गुरु को। लो बिच्छू कांकरवालो उतर बिच्छू न कर टालो। उतरे तो उतारूँ। चढ़े तो मारूँ गरुण मोर पंख हकालूँ। शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

अथवा

ॐ काला बिच्छू काँकर वाला हरी पूँछ भैराला। सोना का नाडू रूपे का पतनाला, आठ गाँठ नौ कोर, नीचे बिच्छू ऊपर मोर। कौन मोरा रेतो भकभकार बिच्छू रहे तो बावन वीर नीड निकोर के कौन वैद मानुष पर गया खाते जाते लागी बार। उतर रे बिच्छू तुझे ख्वाजममदोन चिराग तृष्टी की आन।

---

१. पीठ पर जो फोड़ा होता है उसे अदीठ कहते हैं। यह अशुभ और हानिकारक माना जाता है।

(२२) पागल कुत्ते का विष झाड़ना

पूर्ववत् मन्त्र सिद्ध करके समय पड़ने पर नीचे लिखे मन्त्र से काटे हुए स्थान पर झाड़ देवें।

"ॐ कामरूप देश कामाक्षी देवी जहाँ बसे इसमाइल जोगी। इसमायल जोगी का झामरा कुत्ता, सोने की डाढ रूपे का कुंडा। बन्दर नाचे रीछ बजाये, चीता बैठा औषध बाँटे, कूकर का विष भागे। शब्द साँचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।"

(२३) आधा सीसी का मन्त्र

पूर्ववत् मन्त्र सिद्ध करके जिसका आधा सिर दर्द करता हो उसके दुखते हुए भाग पर शुद्ध राख मलते हुए सात बार नीचे लिखा हुआ मन्त्र बोलें :—

ॐ नमो वन में व्याई बानरी, उछल डाल पै जाय।
कूद कूद शाखान पै, कच्चे वन फल खाय॥
आधा तो आधा फोड़े, आधा देय गिराय।
हुंकारत हनुमान जी, आधा शीशी जाय॥

(२४) पीलिया झाड़ने का मन्त्र

पूर्ववत् मन्त्र सिद्ध करके जिसको पीलिया रोग हुआ हो उसके सिर पर एक काँसे की कटोरी में तिल का तेल लेकर कटोरी रखे और डाभ (कुशा) से उस तेल को चलाते हुए नीचे लिखे मन्त्र को ७ बार पढ़ें। ऐसा तीन दिन तक करने से तेल पीला पड़ जाएगा और पीलिया झड़ जाएगा।

"ॐ नमो वीर वेताल असराल, नार कहे तू देव खादी तू बादी, पीलिया कूँ भिदाती कारै झारैं पीलिया रहै न एक निशान, जो कहीं रह जाय तो हनुमंत की आन। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।"

इस प्रकार अनेक मन्त्र हैं जिन पर श्रद्धा रखकर प्रयोग करें। प्रयोग के समय धूप लगाएँ। जब-जब ग्रहण का समय आये तब मन्त्र को पुन: जागृत करते रहें, क्योंकि ग्रहण में जप न करने से उसका बल कम हो जाता है और ग्रहण से अगले ग्रहण तक ही इनका पुरश्चरण स्थिर माना जाता है। चन्द्रमा का ग्रहण हो तब रात्रि में जब तब ग्रहण का समय रहे तब तक माला द्वारा जप करते रहें। इसमें मन्त्र जप की संख्या का प्रतिबन्ध नहीं है, केवल समय का महत्त्व है। सूर्य ग्रहण में भी यही नियम पालन करना चाहिए।

जैन सम्प्रदाय के मन्त्र

समाज की अभिरुचि और प्रवृत्ति के अनुसार देश-विदेश में प्रचलित सभी धर्मों और सम्प्रदायों में मन्त्र-साहित्य का पूरा प्रचार-प्रसार चला आया है। जैनाचार्यों ने समय-समय पर जैन धर्म के प्रसिद्ध देव श्री पार्श्वनाथ एवं उनके यक्ष-यक्षिणी रूप श्री धरणेन्द्र और पद्मावती की उपासना को मुख्यता देकर अनेक मन्त्रों की सूचना की है। शास्त्रकारों की आज्ञा है कि 'जिस व्यक्ति का कुल, धर्मसम्प्रदाय, गुरु परम्परा एवं आचार-विचार' जिस रूप में चले आ रहे हैं उनका हो विधिवत् पालन करते हुए उपासना करने से शीघ्र सिद्धि मिलती है तथा उसमें किसी प्रकार का दोष भी नहीं लगता।

इस दृष्टि से जैनमर्धावलम्बी पाठकों के लिए हम कुछ प्रसिद्ध मन्त्रों का संग्रह यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं।

१. पंच नमस्कार मन्त्र

जैन धर्म में प्रधान रूप से पंच नमस्कार की आराधना अनेक प्रकार के बीज-मन्त्र आदि लगाकर की जाती है और उसी से सिद्धि प्राप्त होती है। यह मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं। नमो लोए सव्वसाहूणं।

ऐसो पंच नमोक्कारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥[1]

इस मन्त्र की सम्पूर्ण रूप से अथवा एक-एक पद के रूप में उपासना करनी चाहिए। ऐसा जप करने से फलश्रुति में बनाये अनुसार सब प्रकार का मंगल, सुख प्राप्ति एवं आध्यात्मिक शान्ति मिलती है।

जप विधि—प्रतिदिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर शुद्धता पूर्वक एक निश्चित संख्या में धूप दीप करके चित्र अथवा मूर्ति के समक्ष जप करें।

संक्षिप्त पंच नमस्कार मन्त्र—अधिक समय न लगे और साधना भी चलती रहे, इस दृष्टि से पूर्वाचार्यों ने उपर्युक्त पंच नमस्कार मन्त्र के आद्याक्षरों के संकलनों से बीजमन्त्र रूप **"अ-सि-आ-उ-सा'** की योजना की है। इसका मन्त्र '**ॐ असिआउसा नमः**'—बनता है। कहीं-कहीं कामना के अनुसार बीजमन्त्र भी जोड़ सकते हैं। सभी प्रकार की बाधाओं को दूर करने के लिए यह मन्त्र अत्युपयोगी है।

२—**श्री पद्मावती मन्त्र**—अन्य देवी-देवताओं के मन्त्रों की साधना में दीक्षा की आवश्यकता होती है, किन्तु मन्त्र शास्त्रों में विशेष आदेश है कि 'जैन मन्त्रों' में दीक्षा एवं अन्य आवश्यक विचार की आवश्यकता नहीं है क्योंकि ये स्वयं सिद्ध मन्त्र हैं और किसी प्रकार से कीलित और अभिशप्त भी नहीं हैं। श्री पद्मावती के मन्त्र इस प्रकार हैं—

(१) ॐ ह्रीं पद्मावत्यै नमः।

---

१. इस मन्त्र के सम्प्रदाय भेद से कुछ पाठ भेद भी प्रचलित हैं जिनमें 'नमो' के स्थान पर 'णमो', 'नमोक्कारो' के स्थान पर 'णमोक्कारो' और 'हवइ, के स्थान पर 'होइ' पाठ है तथा कहीं नीचे की फल श्रुति का पाठ भी मन्त्र में किया जाता है और कहीं नहीं। अतः यह अपने-अपने सम्प्रदाय के अनुसार समझकर जदापि करें।

(२) ॐ ह्रीं रक्तपद्मावत्यै नमः।

(३) ॐ ह्रीं पार्श्वपद्मावत्यै नमः।

(४) ॐ ह्रीं धरणेन्द्रसहितायै पद्मावतीदेव्यै नमः।

(५) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीपद्मावति ममाभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा।

इनमें से किसी एक मन्त्र का एक लाख पच्चीस हजार जप करने से सब प्रकार की सिद्धि प्राप्त होती है।

इसी प्रकार जैन सम्प्रदाय में श्रद्धा रखने वाले व्यक्तियों के लिये कुछ अन्य जैन मन्त्रों के प्रयोग इस प्रकार हैं।

(१) **धन प्राप्ति मंत्र**—प्रतिदिन जिन पूजा—जिनभक्ति करके **'ॐ अ-सि-आ-उ-सा नमः'** इस मन्त्र की दस माला जप करें। कुल सवा लाख जप पूर्ण होने पर धन की प्राप्ति होती है।

(२) 'ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं मम ऋद्धि सिद्धि समीहितं कुरु कुरु स्वाहा'—इस मन्त्र का पवित्र होकर प्रातः और सायंकाल ३२ बार नित्य जप करें। यह प्रयोग ४२ दिन तक करना चाहिए। अनुष्ठान के दिनों में भू-शय्या, ब्रह्मचर्य, सात्त्विक आहार आदि का पालन आवश्यक है।

(३) श्री पद्मावती देवी की उपासना भी इस कार्य के लिये अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानी गई है। प्रतिदिन प्रातः स्नान करके **श्री पार्श्वनाथ** तथा **श्री पद्मावती देवी** के चित्र सामने रखकर उन पर वासक्षेप तथा श्वेत पुष्पों से पूजा करने के पश्चात् धूप-दीप करके १०८ बार नीचे लिखे मन्त्र का जप करें।

"ॐ पद्मावति ! पद्मनेत्रे ! पद्मासने ! लक्ष्मीदायिनि ! वाञ्छापूरिणि ! ऋद्धि सिद्धि जयं जयं जयं कुरु कुरु स्वाहा।"

छः मास तक इस तरह से जप करते रहने पर अवश्य लाभ होता है। दीपावली की रात्रि में १००८ जप करना भी लाभप्रद है।

(४) धन प्राप्ति के इच्छुक व्यक्ति **'ॐ ह्रीं नमः'** इस मन्त्र का

एक लाख पचीस हजार जप करें। जप के समय ह्रींकार का लाल वर्ण मानकर ध्यान करें।

(५) **धनप्रद यक्षिणी मंत्र—'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनं धनं धनं कुरु कुरु स्वाहा'**—इस मन्त्र का पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर एकाग्र चित्त से १० हजार जप करने से धनदा नामक यक्षिणी प्रसन्न होकर धन प्रदान करती है।

(६) **महालक्ष्मी यक्षिणी विद्या—'ॐ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः'**—इस मन्त्र की बड़ के पेड़ के नीचे बैठकर एकाग्रचित्त से १० हजार जप करने से यक्षिणी प्रसन्न होकर लक्ष्मी प्रदान करती हैं। 'उड्डीश तन्त्र' में यह प्रयोग बतलाया गया है। उपर्युक्त दोनों प्रयोगों के जप सात दिन में पूर्ण करने चाहिये।

(७) **वाध्यापुत्रप्रद मंत्र**—श्री पद्मावती देवी बन्ध्याओं को पुत्र प्रदान करने वाली मानी गई है। अतः **'ॐ ह्रीं ऐं क्लीं श्री पद्मावती देव्यै नमः'** इस मन्त्र का चालीस दिन तक जप करना चाहिए तथा प्रतिदिन भगवती पद्मावती की अष्ट प्रकारी पूजा करके प्रार्थना करे कि—'हे माता ! मुझे गुणवान्, बुद्धिमान् पुत्र प्रदान करो।' ऐसा करने से बारह मास में पुत्र प्राप्ति होती है।

(८) **नजर उतारने का मंत्र**—नीचे लिखे मन्त्र को पहले सिद्ध करके आवश्यकता पड़ने पर सात बार मन्त्र बोलकर पानी को अभिमन्त्रित कर पिलायें।

ॐ नमो भगवते श्रीपार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेन्द्रपद्मावती सहिताय आत्मचक्षु प्रेतचक्षु पिशाचचक्षुः-सर्वग्रहनाशाय सर्वज्वरनाशाय त्रासय त्रासय ह्रीं श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा।

(९) **चोर पकड़ने का मंत्र**—नीचे लिखे मन्त्र से २१ बार चावल अभिमन्त्रित करके जिन व्यक्तियों पर शंका हो उन्हें वे चावल खिलायें, जिसने चोरी की होगी उसके मुंह से खून निकलने लगेगा।

'ॐ ह्युं चक्रेश्वरी चक्रधारिणी चक्रवेगि कोटिभ्रामाभ्रमि चोर-

ग्राहिणी स्वाहा।

(१०) **परदेश गए हुए को वापस बुलाने का मंत्र**—पीपल के नीचे काले मृगचर्मासन पर बैठकर रुद्रवन्ती और श्रीफल के गोले को खीर बनाकर मन्त्र द्वारा आहुति देवें तथा मन्त्र का जप करें।

ॐ ग्लाँ ग्लीँ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीँ हः हः।

(११) **नटी यक्षिणी मंत्र**—पूर्णिमा को अशोक वृक्ष के नीचे जाकर चन्दन से सुन्दर मण्डल बनाकर देवी की पूजा करें, धूप दें। इसके पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र का प्रतिदिन १ हजार जप करें। जप पूर्ण होने पर नटी यक्षिणी प्रसन्न होकर अंजन देती है जिसके द्वारा सभी कार्य सिद्ध होते हैं। यह प्रयोग चन्दन की माला से अर्धरात्रि के समय करने से अधिक फलदायी होता है।

ॐ नटि नटिनि स्वाहा।

शान्तिदायक सिद्धि प्रयोग—मनुष्य को धन-धान्य, सम्पत्ति, यश आदि प्राप्त हो जाएँ पर मानसिक शान्ति प्राप्त न हो तो वह सब उसके लिए कष्टप्रद हो जाते हैं। अतः चित्त की शक्ति के लिए निम्न लिखित प्रयोग करें अवश्य लाभ होगा। विधि इस प्रकार है—

(१) प्रतिदिन प्रातःकाल में स्नान करके शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर पवित्र आसन पर उत्तर की ओर मुख करके बैठे।

(२) सामने एक पट्टे पर श्वेत वस्त्र बिछाकर उस पर ॐकार का चित्र विराजमान करें। यह परमात्मा का एक परम शान्तिदायक प्रतीक है ऐसी भावना करें।

(३) उसके सामने घृत, दीप और अगरबत्ती जलाकर दीपक को बायें हाथ की ओर तथा अगरबत्ती को दाहिने हाथ की ओर रखें।

(४) इसके पश्चात् दोनों हाथ जोड़कर मस्तक को झुककर '**ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः**' बोलते हुए प्रणाम करें।

(५) इसके पश्चात् आगे लिखा हुआ श्लोक बोलकर मंगल-

भावना करें—

सर्वे वै सुखिनः सन्तु,सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ॥

सभी सुखी हों, सभी रोगरहित बनें, सभी कल्याणमय वस्तुओं को देखें तथा कोई भी दुःखी न हों।

(६) इसके बाद **'ॐ शान्तिः'** इस मन्त्र की दस माला जप करें। यह माला सूत की अथवा स्फटिक की होनी चाहिए तथा उसका संस्कार भी कर लेना चाहिए।

(७) रात को सोने से पहले शुद्ध वस्त्र पहनकर तीन बार नमस्कार गिनकर मंगल-भावनापूर्वक मूलमन्त्र की तीन माला जप करें।

मृतसंजीवनी (शुक्राचार्य):
इस मंत्र से असाध्य रोगों की निवृत्ति होती है:-
ॐ ह्रौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ
त्र्यम्बकं यजामहे, ॐ तत्सवितुर्व-
रेण्यं, ॐ सुगन्धिं
पुष्टिवर्धनम्, ॐ भर्गो देवस्य

लेखक की अन्य नवीन पुस्तकें :	
तन्त्र शक्ति	८.००
यन्त्र शक्ति	८.००
स्तोत्र शक्ति	८.००
योग शक्ति	८.००

धीमहि, ॐ उर्वारुक-
मिव बन्धनाद्
ॐ धियो यो नः
प्रचोदयात्, ॐ मृत्योर्मुक्षीय,
मामृतात्, ॐ स्वः भुवः भूः ॐ

य-सूची

सः जूं हौं ॐ ।

उपरिलिखित मंत्र से शिवलिंग पर दूध सहित जल चढ़ाने से रोगी को शीघ्र आराम मिलता

विषय-सूची

Shri